

এ জিজ গদীশ্বর। শ্রগং।



पृ की विवाम।

समित कोर।

॰ ज्वानीहत्वय वटका**णा**वााय कर्जुक

भागि हम 😘 अ**न्तितर प्रतिक शिव्य अवरक्ष शश्**रवाणि

भागावित हत्य

, ধর ছিত হইল।

हेलानाः।

ब्रेजिकनात ४८५५

AILE MITTALES!

ক্লিকাডা।

गद्रामणी। द्वीरते २६ मर छ्दरम अस्ट्रा देखियाम देखेनियाम यस्त्र मूक्ति ॥

मकाका अवस्य ।

मुक्का ।०'० इत्र खोना



সূচীপত্ৰ।

निर्धिष	প্রাপ্ত
গ্ৰেশ বন্দন	>
शृ र्ध) दन्तन।	à
पूर्ण वसन्।	3
सिं व रुप्ता	E.
विकृतन्त्रमः	E.
भारपंजी तल्ला	7.
এংহের স্ফুন্	F.
গ্রন্থারন্তঃ ও চূড়ীর বন্দল	8
खबमा मुखी मालिनी कला	.7
দিতীয়া দুতী নাপিতিনী কলা	Ĭ.
कंकीया हुंची है एक ने कना	S.
চতুৰ্প দুড়ী নেড়ী ৰুজ্য	de
পঞ্চম দুতী সর্মদা মহ্বাদিনী দাসী কল:	4
শতুরাজ স্মান্তর ৬ বিধিপতা	b
जिल्लामाध्यस्य क्षा इ.सम् वर्षन	42
श्रीरमृद्धित त्रित्रह् ४० न	wag
মারিকার প্রতি নায়কের নিত্ত	CP.
भौधाकत नाविका निहीक्षण कविया काश्रानेभाग भाग छण्डत	77 13
মাধ্যক নিকটো মালিলী গুড়ীর আগমন	e ²
মানিমীর স্থিত নাধ্রের ক্র্যাপ কগন	*, *
মালিদার নাগরকে জাইবি আদান	. 5
মালিনীর ফলার নায়কের থেদ	2
নাগর উক্ত ক স্ ধান্ত স্তব	541
। মিতি নাপিতিনা বেশ করিয়া হার ও নাগরের সহিত পথে	
স্কাৎ	:4
নিপিতিনীর নহিত নাগরের কথোপ কথন	59
শাগরের প্রতি নাগিতিনীর ঘুকি প্রদান	- 6-

নির্ঘণ্ট	9 / 5 {3	可深
নতির যুক্তির গু	শ্রমানুর উত্তর পুতৃ তার	56
শাগর নিক্রে	মতী পুন জামিয়া নায়িকার সমাদ কহিতেছে	÷0
নাপিতিনীর ক	পান নাগতের খেদ	22
गद উट्डनीहम	र्गश्रद निकटि अर्गश्रम	२२
गत्र हैर के जू	ষায়,নাগরের দহিত রদিকত।	স্ত
নাগরের সহিত	। উट्डिंगी संच्यां शास्त्र	\$ 8
নালনের প্তি	সরর আশ্ব।স প্রেরান	63
নৰ বাহিতাৰ :	मधान मंद्रक निक्दंहे कहिरल्द	, sp
কিশোরী নেতৃ	हीत मन्दि र <i>ाभारद मांभ</i> ात	* , *
किल्मारी लाख	ীর পূর্তি নাগরের উদ্দি	12
मांशरहर अखि	কিংশাহিত উল্ল	7
গোগে, দানীর	কিপ ৰণ্	- 1
मोनर निवर्षे	শ্লেষ্ট্ৰ ভাৰ্যন	∜.
नोगरतः क्या	ष भागितीब में तन रहत्तुर छत	15.2
নাগাধ নিকটে	পোপীর পরিচধ	195
বোণী দানীর	महिल महिकति कः धाल्लिक्सम	53
গোপীৰ এতি	হ নাহিতার উ÷জ	43
মাধিক। গোপ	ीत उरणाल विस	150
गिठे द रका द	কুই গে.পীর হুদর্ভ। প্রতি হুকি প্রাণান	å. 4 .
	ন্ত্রিকার শহুমতি	ओ
ुद्रश्री के अंद	নিকটে গলন করিয়া নানিকার স রাদ কহি তেছে	ওণ
सम माहक । अस	পীর প্রন্তি নাগরের উঞ্জি	المان
ंशांशी मोश्ट	রত স্থানে মে'তর পাইয়া বার্ত্তা লই য়া কামিনীকে	
र किया		ځي
	ই নাগ্রিকার গমনো ন্ যোগ	なか
বেশ কবিয়	পতিত অনুমতি লাইয়া নাধিকার নাগর নিকটে গ	ম্ন ১৯
নাগৰ নিজা	ন্যুর উৎক্ষিতি এবং নায়িকার সহিত প্রথম মিয়	नम क्रे
	ডি নায়িকার উক্তি	2.

নির্ঘন্ট	¥	প্ৰাক
কামিনী নিকটে নাগা	হের পত্তিমন্ত	85,
নাগর উক্ত দৃতী প্রতি	, .	8 3
পুৰম মিলনে তামগৃহ	*	83
নাগর নিকটে জনপ্রে	বিদায় ডঙ্কা প্রিকরের খেল	8.6
नाएक निकटि न दिका	ा निर्माश रहेश्री निष्म भृष्ट् भरन	89
বিজীয় ফিলনে নাগরে	बड़ रेनक्कर राज शावन	2
मान्द्रत्व देवकृष्य त्याः	ণ অংথতায় ন্মন	87
	য়ে উ পন ীত পরে অনুসমন্তরী সহ	
षिठोष निलंदन कार	নিগাপর মণ্	5.5
इंखोद्ध सिगरतं छं श		₹ €
ভূতীর মিলনে লা ।বে		G
	প্ৰণত বৰস মাধ্যয়ে ব ছিজাবেশ্য প্ৰাৰুধ	60
শনদের গিনি কর্ত্ত		66
नानी धूडात कराइ।		J.
मेलन एक के ने व		7 6
চতুত্যিলনে কালীয		P %
পঞ্চম হিলানের দিপা		A p
, সাখ্য ব্যক্তার জানে		\$22
नशिद्वत् अतः भागस		30
स्मर्ध मङ्गिल्य ल्य		20
भक्षम मिलान लिला	ধ্যাদ্য বিদ্যুগান্ত পুঞ্জান্ত	**
मछ। अस्मिता नार्दानाः	গ্র নিকামের শ্রন	100
অনম্পের গিনি সহ উ	ালেণ্যে জীড়া	
ं के एक्ट मांतीस्तरमा ।	চাকিদারের হাস্তে পতিত	27.45
किनाद्वतः इत्र इ	ইতে উদ্ধার হইয়া মনে আক্ষেপ 🙊	भारतीम छः
াচর মিলনের অমুপ	ায় ডাবিয়া খনজের খেদ	À
অনক্ষের পিনির অন	নঙ্গ প্রতি চিত্তমিলনে ক্রাক্তিপ্রারান	2.2
अनमभक्षतीत পरि	র নিকটে তারকেশ্বর প্রদ প্রার্থনা	9

ृ निर्घन्छ	10	াত্ৰ কি
্বীতির অধুমতি	প্রাধ্য সময় অন্তের ভারকেশ্বর সমন জ	92
- তা রকেশ্বের পূ	\$\frac{1}{2}	Ġ
भिरतह स्रुप्ति		90
जितन विशि दर	न वांत्रिका निकार श्रम	18
ষ্ঠ ফিল্ম ভারনে	ভশ্তে শ্ৰেমণ্য	95
ভাব:কশ্বে এক	রাত্রি বলৈ করিয়া স্বাধ্য গ্রমন	19
অনকের রাতিতে	প্রতি দহ শ্রান ভারকেশ্বরের স্বপ্ন কর্মা	
তানঃ ক্ৰিছিল	ভির উত্তর	<i>(</i> a)
আন্তর্মার পিট্নির ব	লেকা উপ্ পত্তি করিতে তণ পতি র	
ও্রস্তি জনার		thr
পতির সমূমতি গ	প্ৰিয়া নালত পানহন পূৰ্বক অনক্ষেপ্	
य्चारहान		Fo
ভাষকের নাগ র 🕸	জি অভয় দ্বি ও মাগরের নির্ভয়ে গ্রন্থাধ্যন	65
্রিচের নাগরের ত	ि अवस्था मान	p.2
ঞ্জাদর কল্মত জন	জান্ত্রাস্থান স্তর্গ	òr is
भौरय क्षित्र रेवेष्ट्र,	নিত মূহে গোপী দানীর দাস জীলেবের	
इस्टिकीफ		W 13
भोकीत कर्जुर हरस	লগ (১), দেখিয়া ভাষ প্ৰতি প্ৰবংশর	
छद समीगरात प्र	मोद्र महर्द	er &
व्यत्सभन वर्षि अह	দ্বেদ অভিযান	59
অন্ধ্রের হাজা ও ব	্বজাত্র দ্বারা নাগেরে <mark>র অভিমান পরিস্কাগ্র</mark>	bb
বহু স্বধ্যভাগ প্রে	क्रमा क्रत शहूँ स्य -	1 To 10
धनसम्बद्धती शुक्रतर	ী হয় জীংগ্ৰের ধনক য় 🗸	i) is
धनक्रमकती मह है।	দলের অভিসাধের প্রীতি এককালে বিদ্যো	1.5/5
প্রীড়ি রকা ভেতৃক	धनमध्य अञ्जि भीरमस्य को उद्योक्ति	22
व्यवस्थातीत श्री	विष्कृतम् क्रियमस्यद्व विभाग	৯৬
न्य जागावः जीवतः	বর জানোরয়ে বনবাস	÷ \$.
<u>র্তী বিলাদ সমাপ্র</u>	*	20

@ 3 51 ·

अवद्वर ।

ख्य श्राट्यमा वस्क्रमा।

গণেশ গিরীশ স্বত গদ্মেক্স বদন ! नद्यामत निधरत विभागि कात्र।॥ শরণ লইনু প্রভু তোমার চরণে नशासस महा कहा मीन शीन अटन।।

स्था वक्सा।

ভাকর কর তব তমে হর অতি। ভামৰ মানৰ মম কর অবগতি 🖰 হিমিরারি চিডের তিমির কর নাশ। মলিন মনেতে গ্রন্থ কর আসিবাস।। छुर्गा वन्स्रना।

ছर्त टव हरी गांच हर्ता सूत नामि। छर्ग इता देर मव की क्त फ्रांता मि। তুমি শক্তি ভোগা ভক্তি বিনামুক্তি নহে। ছামকান্তা মহাবিত। বেদে বিদ্যা কহে।। भिय तम्मना।

শিবের শিবদ শিব অশিব নাশক। ভাষণ ভাষণ যম লয় নিবাহক !! শান্তমূৰ্তি শান্তভাৰ শান্তভৰ গুল। সংহার সময়ে গুল সংহারে নিপুণ।। विक तमना

বিশ্বধর বিশু বিশ্বময় বিশ্ব পাল। বিশ্বব্যাপি বিশ্বকর তব মায়া জাল ৷৷ মায়াতে মোহিত বিধি পুরাণ বচন। পাঁতে এক ভাব ভবে ভবানীচর্ণ।।

पृष्ठी जिल्लाम् ।

মহাকবিকে নমকার।
নলিনজ পুলিনজ বাল্মীকজ কবি।
তথা কবিকুল মান্য যথা মান্যরবি॥
কবিগুরু পাদপত্মে কোটি কোটি নতি।
ভবানীচরণ করে করিয়া বিন্তি।।
সরস্থাী বন্দনা।

গ্রন্থের স্বচনা।

(নিবেদন শুন সব রসিক স্কেন। যে কারতে এই এর হইল রচন। কলিকাতা নগরত নিমাঞ্চিরণ বার্তিক উপাধি তিনি প্রতাপে রাবন। কীর্ত্তির তুলনা কর্তা পাওৱা নাহি ঘার। মৃত্যু কীর্তি লোকে কোকে কীন্ত পূলা প্রায়। আট পূলা তাহার সকলে গুণবার। একণে তাহার সাত জন বর্ত্তমান।। তার মধ্যে সপ্তম স্বরপচন্দ্র নাম। দেব গুরু ভিত্তে ভক্তি জতি রপাধাম।। ধনি গুণি মানি লোক

মান্য করে মানে। এক দিন সেই জন কসিয়া বাগানে। বছতর বিজ্ঞবর লয়ে গুণিসব। করিতেহিলেন নানা আনন্দ উৎসর ।। নানারস রাগরকৈ প্রসক্ষ উঠিল। মূদ্রাকরে বছ अष्ठ क्षकां रहेल ॥ किस्तु ज्ञामित्र संवित प्रिटिंड न। शारे। ता तिक जातक क्र मना किছू मारे।। अधन करक नवा नामक मिलवा। करत कड तमनाना नामिका लहेश।।। म तम वर्षित जान अन्न अकु रहा। जाशांता क्रक्या जारक रेश सूर्यामम्।। जडाय जकत्व तत्व ठाँशत निक्छि। এইনত গ্রন্থ করা বৃত্তি সিদ্ধ বটে।। অনন্তর কহিলেন বিজ বিষক্ষী ব্যক্তি কোথা পাব এন্ত করিবে রচণ !! কেই পরে কহিলেন ভাঁহার কথায়। ভবানীচরণ মাম বন্দ্যে উপাধ্যায়।। সমাচার চন্দ্রিকা আকুর তাঁরে জানি। হৈতে হইবেক **্টালন্ত দাৰি এ লকলের সহ** তিনি করিধা गरना । सादमण विद्वास अपू कविद्व उठता !!) छाँदात विनय বাক্য স্বীকার করিয়া । কি জারে রচিব গ্রন্থ না পাই णविश्वाः। ভাবিতেৼভাব হ≹त छनतः। सूठतः पूठी আছে কতিপর । প্রবলা হইরা ভারা নব্যে করে বশ। কত স্থানে कंडमरड करत कंड दुना पूडी बाक्ट पूछी खाँड करत वर्छन । भागरन दक्तान सूची कारक जिल्ला । यूनक यूनकी रशरम করে কি আচার। ও বার বর্ণন করি করিয়। বিস্তার।। विभाग विश्व मरण शरेरक पृष्ठी। खठवर पृष्ठी विल गोरा वहें भूषि।। ज्वानी हत्व छावि ध मकल मत्न। ज्ञारलः 'চনা করি গ্রন্থারম্ভিল রচনে গ

এতিছগ।

অথ গ্রন্থারতঃ দূতীর বন্দনা। দূতী বিলাব।

जिथानी इन्मः।

পঞ্চ প্রকার দূতী। প্রথমা দূতী মালিনী রূপ। প্রয়ার।

मानती मानत परमाहत स्वाधिनी। भूटकंट अनिका पृठी हिल्लम मालिनी ॥ ठाँहा देश्ट जमाझारम भूक्पजानि हल। छेउरसत फाउलाव भूतिउ कोमला॥ 'अक्तरम जिसक स्वम भूक्पानि हम्मरम। कास्त्रमिठ हर्स्स আहि एमस्तर छाईरम॥ बाँहारमत भूक्पट जाहरस अरसासम। ठाँरमत निरस्त मारह क्रूमकानम॥ किर किर क्रस करत भूक्प माना छाडि।। महिका मानडी यूटि दिन बक बाटि।। वेकरश नक्करन करत श्रृंकांनि निकार। मानिनी दिनव यात्र श्रेटल विवार।। स्टूडां विकार वेक्स उत्ता मानिनीव श्रमन खडांव कति मरन।। शास्त्र य बश मृद्धे धरान छाविर्हा। उतानीम्बर जरन मरन विमातिरत।।

দ্বিতীয়া দুভী নাপিতিনী কপা ৮

পরার। শুড় ও দৌশর্বা কর্ম করে যে কামিনী। সে কর্ম না বিদ্ধ হয় বিনা নাপিতিনী। লঙ্গে নধারপ্রনী ও মানের ছেদক। চুণড়িতে মনা ঝানা আরাজনক্তক। অস্তঃ পুরে প্রেবিশিয়ে বহু সমাদরে। জীলোকের ক্স্তু পদ জাদি শোভা করে।। নারীর উৎসব কর্ম যত হয় তার। নারীপণ নিমন্ত্রিতে নাপিতিনা যায়।। এই হেডু নানা স্থানে গমন ইহার। ইহা হৈতে,কর্ম নিদ্ধ হয় ব্লিকার।। এ কারণে দুভী ভাগ নাপিত গৃহিনী। প্রধান বলিয়া খ্যাভারস সঞ্চারিণী।। নাপিতিনী দুভী বড় এক দোব তার। নাডাকিলে কোন স্থানে যাওয়া তার ভার।। এ কপ্রেচ কর্ম থদি পিন্ধ নাহি

তৃতীয়া দুতী উড়েনা ৰূপা।

भग्नात । त्यांभा त्यांभी मिंच छक्ष करत विकितिन।

हेरांट अधान। এट উড़िमा त्यांभिनी ।। উड़ितः दिश्तः।

हम উड़िनी अवलः । इक्ष मिंच दिविवाद कर्ण नमा थला।

स्टर्मनी विटमनी वाटन यात अनावाटम । कर्णः दिन्न वटक्ष्मा अस्ता । अस्ति । क्ष्यः व्याःभित्र कार्णः अस्तः भूदः

हित्र । इक्ष तम्र कथा क्ष्र शित्र ।। विटमनी विद्यांभी

वात् चित छित थात्र । वह दिद्य छात वाटन अनावाटन

साम ।। विद्यांभी दह्य दावृकी कार्णाम । इस्त हहू

कुंदित टीटित कुलाइटिक होता। होन कार मिटि होत टिक्ट इस लग्ने। काटक स्वता नाहि कृदल नाना कथा कित्र।। इस नित्रा थाकि कामि तक वक्ष घटता स्मात कोट्ट इस लक्ष् नित्र रमाई नित्र।। टेरकाटल कामित्रा इस खाकि हो। नित्र। महत्त्वत ममाहात ट्यांमादित कहित।। हेश्यक छाड़ात इस दक्ता नाहि होता। इस तिहह इटल कटल पोट्ट होका शाव।। गृहत्वत वाकी आत वामाटकात नाटम। इहे दिला इस दिखा मटि कामितारा।। हेश्यक भूकी क्षित्र मक्ता मटिया किन्दु किहूताल वाम कहें माल दमा।। कामिनी कहित्व कथा कानलान शहर। क्षात्र खना मूठी श्रद्धांकन करत।। खनानीहत्व कटह छात्रही महात्र। कामा मूठी खन कहि मदि। एक छोत्र।।

हकुर्व पृछी ताकी कथा।

श्रात । इतिनाम माना श्रांट करत एम्र (मर्छी । कथन छ। (ছएए ছूएए श्रांट करत (वर्षी ।) शांठिका इहेम करन काथा भा करत कर्ता करान । (जांथा भा तर्ता कर्ता करान (जांका ।) तर्ताथा भा करत करान (जांका ।) राज्या भारत जात अन्य आरम् नाम। स्वा भारत करान । (य मकल आरम् नाम। तर्ताद अनक ।। (काथा करतन शांठ इहेम शांठिका। शरामार्थ श्रा वर्ता प्रवाम मासिका। विकास गांठिका। शरामार्थ श्रा वर्ता प्रवाम मासिका। विकास गांठिका। शरामार्थ श्रा वर्ता प्रवाम मासिका। विकास श्री प्रवाम मासिका। वर्षा वर्षा प्रवाम मासिका। वर्षा श्री प्रवाम प्रवाम प्रवाम प्रवाम वर्षा प्रवाम प्रवाम प्रवाम प्रवाम वर्षा प्रवाम प्रवाम वर्षा प्रवाम वर्षा प्रवाम वर्षा प्रवाम वर्षा प्रवाम वर्षा प्रवाम कर्ता वर्षा प्रवाम कर्ता क्रा श्री वर्षा प्रवाम वर्षा । वर्षा प्रवाम वर्षा प्रवाम वर्षा । वर्षा प्रवाम वर्षा प्रवाम वर्षा वर्षा प्रवाम वर्षा । वर्षा प्रवाम वर्षा प्रवास वर्षा प्रवाम वर्षा प

वामात्र वामात्र ।। तरमत रेवस्थ्वी स्वष्टी खर्गाट अहूत । शा-स्वर्ट पूर्णात्र मन विस्मि वायूत ।। उँ उर्देशत मनः श्रीठ कं ति-एड रम शास्त्र । ज १९ जू श्र्यवाना स्वष्टी मूठी विल जास्त ।। कामिनीय माम किस मितानिम नत्र । मामिना मित्र । कामिनीय मामिना कामिना क्या । जिन्ही हिन्ही क्या नाहि एत ।। जान अस्म नाहि एत ।। जान अस्म नाहि एत ।। जान अस्म नाहि एत ।। जान विल काहि ।।

शक्ष्य हुओं महतामिनी मामी क्या।

পায়ার। দাদী দুতী ইদাদী যে এধানাতে গণ্যা। ভর্মট घेष्ठीयम (प्रय अंडे इन्जू प्रमा)।। श्रुवहादिगीत अइक रहेश। मिन्नी। जारहापुरा शांक मना निक्र ये होगी।। मर्धना मध्य পাत क्रिन दलनी। प्रमाद्विका छत्व छुनाथ दम्भी ॥ निर्दन স্থানেতে থাকে সদা সংখোগতে । অভ্ৰপ নিপুণা সে প্ৰবৃত্তি জননে। নিত্যকর্ম করি পরে ইটরা বিদায়। আহার कतिएक मोद्र निक १८१ यात्र ॥ (म. ममत्र श्रश्च कम्म कथा करम ভাকে। গুনে মনে বুনো হায় যদি কেই ভাকে। এমত দুভাঁচ मद्भ करथाश कथरन। छेछरत कहिरक शास्त्र याच स्वता मरम १ मानी देशरक अरखहें अक्तियां पूरत । कामिमी कामुक मिट्ट मार्गी छन बृद्द ।। धकांत्रन मार्गी पूठी अक्स धवानाः युवको मरखाय करत शक्त (माना माना।। इहेन किन्स अटछ नव नक्षांतिका। भारत करि किरम भिरम नांत्रक मात्रिका।। अञ्बोध दगरखह हरन अभियम। निवृद्धिमात इस काम উদীপন । ठथन हुठीत दश अठि প্রয়োজন। সিদ্ধানের মক প্রাইনে কবিলে স্মরণ। ভবানীচরণ কহে, স্মার রতি পতি। दमक वर्गन कति मम यथा मि ॥

প্রভাজ বসস্তের জাধিপত্য। প্রার। ঋতু মধ্যে প্রধান বসস্ত ঋতুরাজ। ছঃখী স্কুখী করে লোক শুন ভাঁর কাজ। কি লাভি বর্ণন করি বসন্থারাজার। সংক্ষেপ্তে জাবিপত্য কহি কিছু ভাঁর। কোকিল
নকিব হ্যে অগ্রের করে। পাতাকা পালব শাখা তরু গণ
বরে ॥ মলর পরন মান্ন সঙ্গে আরমন। গায়ক জ্রনর গানে
বভোষ রাজ্যন। কামিনী থৌবন করি পূর্চে ভব কার। কাম
চলে অগ্রে কেলাপতি ভার ববি ॥ এরপে আসিয়ারাজ্যে
করে অধিকার। উচিত বিহিত পরে করেন প্রজার। বসন্ত
রাজার রাজ্যে আনন্দিত মনে। জীব জন্ম ক্থে থাকে কান্দন ভবনে। প্রফুল সকল তরু নফ হয় কুল। রস্থার র্নেতে
সগ্র সর্বন মকুল। শীতল খুলির মন্দ বহিছে প্রন।
বিয়োগি জনের হয় কামিনীতে মন। ভবানী বহিছে হেন
বসন্থ সময়। বন্ধ স্থাধি লোক মধ্যে এক সহাশর।

व्यथ किएमन नांशरतत कुल द्वण वर्गन।

প্যার। জ্রীদের নাগর নামে নায়ক প্রধান। রূপে গুল্
ধন্মেনে না দেখি সমান। সুবর্গ বরণ কায় নবীন নাগর।
ক্রিবৎ গোঁকের রেখা ক্রপের সাগর। পরম রূলর জাত মনোহর বেণ। বংক্রেপে কিঞ্ছিৎ কৃষ্টি বেশের বিশেষ। কালা
কল্কাদার ধৃতি উত্তম ঢাকাই। পরিয়াছে সেই বস্ত্র যায়
সম নাই॥ বুক মজলিন ভাল তার একলাই। অফে সুশোভিল এক লিভুর নজাই॥ হীয়া পায়াদার গোটা কিনারির
তাজ। বাঁকায়ে দিয়েছে শিরে যেমত মেজালা॥ কুটিল
কুজন কাটা ঘবিয়াছে তায়। তাহার উপর টুপি কিবাশোভা
পায়॥ মতির জোনর কণ্ঠা গলু দেশে নাজে। তিন্তু চিত্র
বিন্তু ভাবে ভালে শোভে লাজে॥ হীরক অঙ্গুরী বামকর
কনিষ্ঠায়। ডানি করে নবরত্ব ভর্জনী শোভায়॥ সুবর্গ
স্থামর গোট কটা দেশে দিয়ে। স্বর্ণের শিক্রেল ঢাবি রাঁথে

বুলাইরে। গোড় ভোলা মাথা নেজা টাটবাবি জুতা। পদবন্ধে আছে তার শোভার জন্তুতা। বামহাতে ধরিয়াছে স্বর্ণ
গুড় গুড়ি। দেখি মদনেতে মজে বুবতী কি বুড়ি।) ভবানী
কহিছে ঐ বিদশ্ধ নায়ক। আনন্দ করিছে গৃহে সইয়া গায়ক।
তথ ঞীদেবের বিরহ হর্ণন।

পয়ার। গায়ক করিছে গান নান। রাগ রক্ষা কত মত
দীত গায় যুবতী প্রশক্ষ ॥ নায়ক গায়ক প্রতি শুনে স্বথে কয়।
াহার গাইতে হয় বসন্ত সময়।৷ বাহার গাইতে যদি নায়ক
চহিল। বাহার তাহার পর গাইতে লাগিল।৷ একে সে বিয়াগী তায় বাহার শুনিয়া। বিরহ অনল গানে বিল আলায়াগী তায় বাহার শুনিয়া। বিরহ অনল গানে বিল আলায়াগী তায় বাহার শুনিয়া। বিরহ অনল গানে বিল আলায়াগী তায় বাহার শুনিয়া। বিরহ অনল সম সহাপ জয়ায়।
য়ানে সে অনল বাড়ে নাহি পরিক্রাণ। বাাকুল
য়েল তাহে নায়কর প্রাণ য় স্থান অনল সম সহাপ জয়ায়।
য়ালে তার গায়। অস্বির হইয়া কামে লারি দিলে চায়।৷
য়ন্য সোবোপরি নারী দা াইয়াছিল। অর্ফের শ্রীর তার
দ্বিতে পাইল।৷ স্বন্ধরীর মুখ চফুঃ স্তন নির্থিয়ে। বিতক
বিছে কত কামেতে সজিয়ে। ভবানীচরণ কহে মুইয়া
তর্ক। কায়ক কামিনী হেরে করিছে বিতর্ক।৷

্**নায়ি**কার প্রতি নায়কের বিতর্ক।

পরার। নারী মুখ নীরজ কি নিশাকর বটে। অন্তির তত্তের চিত্তে স্থিবতা না ঘটে॥ নয়নেতে নানামতে তর্ক রি কয়। সরোজ কি শফরী বা স্মরণর হয়॥ কুচ দেখি রে কত তর্ক তারপর।কনকের কোটা কি কলসী মনোহর॥ নিদেব দামানা কি জগতজিনিয়। অবোমুখে রেখে গেল এলো কিরিয়া। পরে মনে ভাবে এটা কামিনী ভো য়া তত্তিৎ কি ভারা বা কনকলতা চয়॥ আপাতত

णार्डगरन विङक्षि भरत। कामी अ क्रांमिनी वांछे अहे ृष्टित करत ।। नीतक नीतमञ्चरल श्रक्ति ना थारक। निमा-কর কর দিনে দিবাকর ঢাকে।। অতএব এভোবটে বিমল े वमन। किन्छ कि कतिशा दिधि कतिल मृजन ॥ निम्छ सीरमत মৃত্যু ভ্লে জল বিনা। স্কুতরাং মীন কন্তু বলিতে পারিনা॥ व्यद्वत न द्वत गर मगान नयन। कन भांक नितीकरन चलि-তেছে यन। कूछ नटि किन्छ कमदलत कान्ति छ। ध शहरहजू कंनक कलमी बला याहा कोता करव कर किन्ह अहे मुक्ति न तरव ! नजूव। कि नयीन ।त कृष्ठ कोष्ठे। इटव ॥ तम स्मा अर्ल কৌট। কররে নির্মাণ। কামিনীর কুচরুনে প্রাযুধ পালান। দামামা ছাড়িয়া কাম কভু নাচিরয়। কাম যুদ্ধ কর্মধানি বিলা কোথা হয়। ভডিং তরলা ভাকে কে কেথিতে পায়। समाधित समाधम इटल रमधा एप्रिक काला कि कथन रमधा मांध मिनश्रोतन। मिनाक्त कह निरम्भिक १६० छै। हम। जन-কের কাস্থি বটে কিন্তু লক। নয়। লতার উপরে গারি কেব। ्रम क्या। क्ट्रेक्टभ तमनीत कल च्यित कवि। भटत मरम করে লক্ষ্যী অথব। অম্বী। ইন্দ্রাণা অপ্সরী কিন্তা হবে বিস্তা थती। फेक्सी कि शरी बाबकना। मरन कति । निशृष्ठ सा कानि महत्र विद्वहन। कहत्। जानस्य मानवी वर्षे छित कहत भारत । कमना कछ। क इस्त कामना श्रृति । कारम मर्ख কেন চিত্ত কুবৃদ্ধি ঘটত ৷ অমরী অমন পুরে গুনি সদা. রয়। না পড়ে পা পৃথিবীতে পুরাণেতে কয়। ইন্ডাণী সে কি কারণে নিজ লোক ছাড়ি। আদিবেক মঠ্য লোকে মলুযোর বাড়ি। প্রন ৰূপদী পরী পাধা ছটি আছে। অপ্ররী প্রভৃতি থাকে পুরক্তর কাছে। রাজকন্যা বলা-মেতো রাজবাড়ি হলে। কে পারে করিতে শেষ এইবপ

क्षा वामना शृतिक करत करिया मि जिंदा नियान तमना क्षि पिक विक्षण्य । এटक प्रत्य खना वटल कि कर ग्राहाय। विविद्धा अमिक देनल हात्र हात्र हात्र । दन क्ष्य इतिया मन ना हक हात्राय। रकमरन मिलिट्यू करत नाविष्ट छेशाय । क्षानिनी कृष्टोक्षणां हारन छोत्र शद्ध। खित्रक निष्ट आय अरविभिन्न घरत । नाशक प्रशिक्ष अकि खक्रकांत्र गया। अरकवारण हन्सु स्रीत छहे खन्छ हथ । ख्रानीहरू। छरन शहे खनूमारन । मिलिट मुखांत दृष्ट्य घाटन भरन मारन ।

> নাগর নাথিকা নিরীক্ষণ কবিয়ে। প্রাপ্ত্যাশার্ম মনে উত্তোধ কবিতেছেন।

ত্রিপদী: না দেখে কামিনা পরে, বস্তে হার আশি হরে, বাগানবে ভত্ম হার গর। নে ছংখ কহিব কতা বারি হীন গান হল, মন পোড়ে মাগর কাতর। যুবলী যৌবন হলে, কুড়াইবে গরানকে। পোড়া মনে ভাবেন উপায়। এ ছালে ইইতে পার, উপায়না দেখি আর, জাগরে গানিনা পোহার। পর দিন দিন লানে, শুলীভল জললানে, মিটাল ভোজনে খানানা। সেই অন্তর্তনীয়, কামিনীর কমনীয়, যৌবন বুঝিয়া সরোবর। তাহাতে ভত্নর ভরি, ভাগাবেন মনে করি, কাণ্ডারী কে হইবে তাহার। মনে পড়ে নালিনীরে, থাকে সরোবর ভারে, ভারে জাকি করি মুলাগার। সে বটাবে প্রিয়তমা, কেই নাহি ভার স্থা, সে আইলে ইইবে উপার। ত্রানীচরণ কয়, দিন নাহি ভার স্থা, স্থানের অন্তর্তারি ক্যার স্থানের অন্তর্তার স্থানার। সে বটাবে প্রিয়তমা, কেই নাহি ভার স্থা, সে

নায়ক নিকটে মালিনী দূভীর আগমন। প্রার। পদ্মনী বঁধুর হয় গমন স্বয়া বিযোগী বঁধুর আশা পুরাণ নিশ্চয়। প্রত্যক্ষ দেবের কুপা হইল উপায়।

अथरम मालिमी क्या आहेल उथान्न । मालिमी सुम्मनी हिस कियां जोत বাজি। বয়দ হয়েছে কিছু তবু মাজা মাজি। খ্যামল বরণ রামা অর্জেক বয়েস। খুবন ভুলাতে পাড়ে যদি করে বেশ। আকর্ণ পর্যান্ত তার কুমুদ নয়ন। খুরু (महेंगठ विधि करत्रहा मुखन। मन्ड मन करत् कान मिराइ গোলা মিসি। ভার মধ্যে শশী ছুই আলো করে নিশি। পীনস্তন ছিল অভি কি কংব হায়। তবু তারে এক্ষণে 🔊 ফল বলা যায়। নিতম হয়েছে ভারি ক্রমে বাভিয়াছে। एमरथे यमि एकवा नाहि यांच शार्षः ॥ एमरथे खरन कशास्त्रभ লোকে পত্তে যুৱে। পরিধের বাদ খাদ বাগানের ভূরে । বুট। মুকুভার নত লোলক সহিত। স্বর্ণের পবিত্র হার গলায় শোভিত। গোনালি সহিত পলা শঙ্খকড় করে। ৰপার তাবিজ আছে বাজুর উপারে 🛭 মালিনী ণরপ বেশ कतिया निष्ठात । रेनकाटनटक (ननकृत्य लाथि याना शह । तिष्ठे भाषा यात्र यथा नाइक जनन। भाषा दिलाकृत णांहे यादन भटक मन ॥ खत छनि मालिनी अ नाम्रक दूबिन । ভটক হইয়া তবে ভাহারে ডাফিল। শুনিয়া মানিনী কংহ কে ভাকে রে ভাই। কে কোথায় কেন ডাকো বেলধুল চাই। কাতর নাগর হাসি যায় তার কাছে। আমি ডাকি-হাছি মানি কিচু কথা আছেশ কথায় আশয় বুবে বাশার আইলা আইস আইস বৈস মাসি কহিতে লাগিল ! আর্ত্তস্বরে কর পুটে আর অকপটে। নিজ অভিলাধ কর मालिनी निकटि॥ एउन एउन शक पिरम पिता अवगान। পরম সুন্দরী এক দেখি এই স্থানে। ইহাতে আমার প্রতি সেই রসবতী। ত্যজিল অপাক্ত শর অসহ্ সে অতি। অন্তরে দে শরে আমি হয়ে অর অর। নিবারণ কিসে হবে ভাবিঙ্গে

কাঁপর।। প্রমন্ত চঞ্চল চিত্ত চকোর আমার। ব্যাকুল হয়েছে বড় নাহিক নিস্তার।। শুনেছি তোমার গুণ করহ বিহিত। ধনে পরিতুই হবে হইব বাণিত।। ভবানীচরণে বলে নাছি কোন ভয়। এখন শুনহ সবে মালিনী কি কা।।

মালিনীর সহিত নায়কের কথোপ কথন।

किलानी। अन्दर् नागत रांत्, एत्थिशा एत्राह कांत्, शत धत (छाक) राष्ट्र मात्र । । नत्र ट्यामात कर्या, तुर्वादन तुनितन মান, ইথে বাধা আছে পার পার।। শুন ও প্রেচনর ধার। তাতে রত আতে যার।, ধন মান ভুচ্ছ জ্ঞান করে। টাকা পানে নাহি চায়, খেবা যত চাংখ পায়, তিলেক না ভাবে তাৰ তরে।। শুন ওবে হুসরাজ, ইকি অতি বড় বায়, টাকা ৰিলে হইবে উপায়। অধিক কি কৰ আৰু, বৃঝিবা সকল নার, কোন কর্ম না হয় টাকার। নাগর বুলিয়া ছলে, সহাঞ বদনে বলে, একি মানি কেমন হিতাশী। কভিতে যে প্রেছ इस, १२ (अब पूर्णन नयः (अब मतन छोल वांगावानि । नांनव কামের দায়, টাকা দিয়া গণিকার, পীড়া উপসম মাত্র করে (ভারে যেবা প্রেম ছানে, ধিক্ ভারজ্ঞানে, প্রেম কি বিকাশ थिए महिशास (अहमत थाजिलायी, क्वितल मशह दश्मी, क्वामर লোক দেখে থাকি। চড়িয়া চেকেট গাড়ি, নিভা যায় বে**খা** বাড়ি, কড়ি দেয় প্রেম তায় কাঁকি।। এমত যে প্রেমকামী ভেমত নহিত আমি, লোক লজ্জা পাইব ঘাহাতে। তাতে ব্যয় পায় শোভা, যদি পাই মনোলোভা, তবে ব্যয় করিব ইহাতে ॥ ইথে যদি কর অম, তবে যুচাইব অম, দান শক্তি গু षांद्र किरा नारे। मातिनीत मन नित्य, इत्मारत शांद्र पिरा, बदन नश्र थाईवा मिठाई॥ मालियो कहिन नाश, बदन

ভাল মোর বাপ, তাই বলি কেন নাহি হবে। ভবানীচরণ স্মৃত্রি নালিনী কি ভাব ধরি, কহিতেছে মন্দ মৃত্রবে।

ग्रानिनीत नाशततक आश्राम अनान।

ं भवात। मानिनी भारेबा सूजा मत्स्वाय रहेन। कतिय তোমার কর্ম নায়কে কহিল। আমি হারে ভাল জানি অতি রুসবতী। রসিক্ল যুবার প্রতি যত্ন তার অতি ॥ যে হেতু অঙ্ক-ভী বৃদ্ধ শুনি তার পতি। দেখে লোক বোধ করে যেন পশু পুতি।। আজি কালি তার কাছে যাব কুলছলে। বিরলে স্থাৰিয়া আমি কহিব কৌশলে॥ তত্ত্য তবে ঘরে যাই দিব। স্বদান। স্বস্থানে মালিনী পরে করিল প্রস্থান।। নায়ক ঙাহার আশা করিয়া ধারণ। রহিলেন স্থির মনে চাতক যেমন। প্রভাতে থালিনী আসি মলিন বদনে। কহিছে काशिन उर्व नांत्ररु मन्दर्भ। जांकि क्यिनीत काष्ट्र सर्व ছিত্র ছলে। ফুল েথি দেবালয় যেতে দ্বারি বলে ॥ জন্দার প্রবেশ কর। হৈল মোর ভার। নাপিতিনী যায় দেখি মানা মাহি তার।। মোহিনী বাগানে বাস মতি তার নাম। ভারে ভার দিলে পুরাইব মনক্ষাম।। আমিত সচেওঁ আছি কি করিব হায়। এই কথা বলে সাগি ভোগা,দিয়ে যায়।। गुप्तक खनिशा नरन डारन मर्कनांग। गुलिनी कविरन दिङ ছিল যে বিশ্বাস।। এখন কৈ করি আর ভাবিলেন পরে। **हैं**तांनी कहिट्ह (थेन ना धट्त ऋछट्त ।।

মালিনীর কথায় নায়কের খেদ।

পরার! জপসীর রূপ নদী অকুল,পাথার। কেমনে ্যাইব কুল না জানি গাঁতার।। মালিনীর বাক্য তাতে হইল । বুরুক্ত। ইহাতে হরিবে প্রাণ হতেছে আতঙ্গ । যদি সে তরুণী । বুরি হয় গুণবভী। গুনিলে সে গুণ হেতু পাঠাইবে মতি।।

30

তবেই তরিতে পারিকপ পারাবার। নহেত নিমগ্র হব নীহিক নিস্তার।। মনন কটাক্ষবানে ঘেরিল শরীর। বস্তু বার্তাস বহে তাহাতে অন্থির।। আর তার অতিশয় অনঙ্গ তুফান। উপায় না ভাবা যায় হরিতেছে জ্ঞান।। অভাব কুড়ীর ভর আছে সম্ভবা। ইহাতেই বুঝি নম না পুরে বাদনা।। স্থামী তার দ্বাণি আদি আছে কল চর। অনিতেছে ইউভিতে বিষম দৃস্তর।। মালিনী কহিল স্থির মতি যদি হয়। তবে তরিবাবে পার ভয় করি জয়।। কবে সেই মতিপাব কোথায় বা মতি। মতি মম বোগ হয় রেবেছে বুবজী।। মালিনীতো বলে গেল ঘেই খানে বাস। ধনাথি জনের কবা কে করে বিশ্বাস।। অংঘার নাগর বোর অকুলে পড়িল। কলের্পের স্তৃতি কর ভবানী কহিল।।

নাগ্র উক্ত ফব্দর্পের স্তব।

পয়ার। কন্দর্প হে কতঞা কথিব তোমার। কটাক্ষ
করিয়াকর কামের সঞাব।। অনক্ষে, তে অজহীন তথাপি
অন্তর। অলপুরে প্রবেশিয়াকর জর জর।। য়র ওকে শিয়
তব চিনিতে না পারি। কি করেছে ক্রিভুবন হলে জয়
কারী।। দর্পক, দর্পিত জন দর্প কর দুর। দয়াসিকু দয়াকর
দীন কামাভুর।। মনসিজ, মনে জয় মন দয় কর। মনেরে
কটাক্ষ করি মনেতে বিহর।। পঞ্চশর পঞ্চাননে করেছা
আহির। শুনেছি চঞ্চল চিত্ত হয়েছে বিধির।। পুল্পধন্য পুল্প
ধন্ন লইয়া বেড়াও। পঞ্চপুপা বাণ তাহে কি কপে চড়াও।
করহীন, কেমনে হে দিতেছ টল্ডার। নর্মজীবে শার ক্ষেপ্
একি চমৎকার॥ কামদেব, কাম কেলি কর নিরন্তর। কেলি
তে কম্পিত কেস কর কলেবর।। অন্যায় করিয়া যেবা করেরে
রমণ। মূলাধার ভুমি তার তোমারি কারণ।। রতি প্রি

র্মণে মুদ্তি সৰ আছে। সদা হয় মনে ভয় জাতিযায় প্ৰছে। क्रू सम्यू, क्रू मिका कामिनी लहेशा। सूना गटन स्वकीटत দেহ নেলাইয়া। স্থান্তত্ব, হে আআনতে কর অধিকার। খণ্ডিতে তোমার মত সামার্থ-কাহার।। প্রতম প্রমদা সং প্ররোদ জন্মাঞ্চ। উভয়েরি মনোরত মদনে জাগাও।। মদন হে মন্তক্রি যুক্ত যুক্তী। জ্ঞান হত হয়ে করে বিপরীত রতি। জুমিহে মকরধ্যে দেহি কামরসে। তঙ্গ নাহি হয় যেন জনম সাহনে।। মনমথ, মনোরথ মনে পাছে রয়। স্থিরহাতি नदर सम गरा धरे उम्र ॥ भीनदकडू निया उन कति आकि-केन। স্থির মতি বিনা কন্তু নাহয় সাধন।। মার, ওংং মন मृत् कर्तिष् गर्मन। खामारत रायन कत खाला कि असन।। সমরারি, সমরণ কর ধনুস্থাণ। আতত্ত হয়েছে বড় কাঁপি-তেছে প্রাণ।। কাম, হে কাতরে কহি কমল চরণে। কান্ত-का छ। विद्यादशन नव कत बद्द । विद्रम खनन बदक रूपाद्र ঞাবল । শরমূত হবনেতে কর না উচ্জুল।। সম্প্রতি আমারে কর কিঞ্চিত করুণা। মতি মোরে জানেদিয়ে পুরাও বাসনা। ভवानी किरदह याँछ कामात्मत ठटत । विकारण कामिनी কাছে যাম বেশকরে।।

> মতি নাপিতিনী বেশ করিয়া যায়। নাগরের নহিত প্রথ নাক্ষাৎ।

লবু জিপদী। দিবা অবসানে, চলিল কামানে, করিয়া
নতি সুবেশ। সে বেশ রর্ণন, শুন বিচক্ষণ, কি শোতে চাঁচর
কশ।। সাসার উপরে, চারু রেখাপরে, ঘমিয়া তিলক
নাটা। মুখচনা ভাঁতি, চারুদন্ত পাতি, তাহে মিনি পরিনাটি। মুখচনা ভাঁতি, চারুদন্ত পাতি, তাহে মিনি পরিনাটি। সহল সুন্দর, মুট ওঠাধর, তাহে ভারু লের শোভা।
লব্প মাধুরী, যেন কানস্রি, কামিজন মনো লোভা।।

क्रुक करनवत, क्रिकटमारत, ठाटर द्रम मानियात । त्रम पालिमानी, मृत्य गृह्शिन, कि निव छेशमा ठात । जनमेल शित, क्रिकट उनित, वारित क्रिया निर्देश किरतर (मर्ट्य, ठमरक उनरक, रकनार्थ छूटन एम्बिटन । क्रिक्टि केंग्रिक, वमरनट ठाटक, প্রকাশিছে निषक्ष । श्रद्ध उनिष्ट, क्रिकेट निर्देश, क्रिकेट प्रकाश प्रकाश क्रिकेट स्वाप्त क्रिकेट निर्देश, क्रिकेट क्रिकेट प्रकाश क्रिकेट क्र

নাপিছিনীর সহিত নাগরের কথে।প ক্ষন। পায়রি। মতিকে সকল কথা নাসক কহিল। ঈষদ হা-भेषा मिं कहिर्ड काभिल ॥ सालिमीरक बरल्हिरल पिक-গর কর্ম। মতি বিনা কেবা জানে;বুবভীর মর্মা।। উপায় দরিয়া দিব যাতে তারে পাও। তারেতো আমিতে পারি ারকারে চাও।। দেখিতেছ ছোট খাট বয়ে বছ ময়। re দেজনার হতে অবাধ্য কি হয়।। বাবে দেবে তুমি ত হয়েছ পাগল। ভারে বড় বড় আছে রূপদী সকল। मूर्थ तारवत माल शतम सुन्मती। भारधक शास्त्र वक् रमन ।। ভাধরী।। আর এক জনা আছে দাসের ভণিনী। কড়ে-'छी छत् छू छि छित रनोमामिनी।। सूरवाध मरखत रवी त থাতি ৰপনী। অমুক শাহার কন্যা নাম যার শশী॥ এ সৰ । হ তি মধ্যে যারে মন চার। এখনি আনিতে পারি তো- । ২ র বাসায় ৷ ভাল মনে পজিয়াছে মোর প্রতিবাসি চু যে কে ঠাকুর নারী এরা তার দাসী।। ইহাতেই বুকে সে **४ मंख्यि कात्र वर्ष। यहे। रेटर्ड भाति आणि छ।** वर्ष

ভার্ড) শুনিয়া নাগর কয় শুন শুন মতি।। নকলে সুন্দরী ' বর্টে হবে রসবতী। তার মধ্যে কহিলে যে ঠাকুরের ্ নারী। এবড় রছ্যা কথা গুনিতে না পারি।। ত্রান্দণ বর্ণের গুরু শুনহ নিশ্চয়ঃ ব্রাহ্মণীরা মাতৃসম সর্ব্ধ শাস্ত্রে কয়।। ত্রাক্ষণী গমনে পাপ কত কেবা জানে। মননেতে ন্যাপাপ পুরতি বাখানে । ভাদ্ধণের সেবা করা স্তের अधर्म । जारर जीर्थ गांश यक निम्न नव कर्म ॥ त्नवक इड्रेश नार्व रेमशन शुरुष। यहे चृट्य नाहि करत रम इम्र छ-खांशा बाबात्वत मर्रामः बादनम नातायवा । ज्ञान हिङ् তিনি করেন ধারণ।। অবিভাগবিভাগত ব্রাহ্মণ সমান। লকলি নিঞ্র দেহ কন ভগবান। যতাপিও দিজ নারী ছিচা-तिभी २व। प्रानित यां ठूला। श्रमीय। नव।। खाक्तभीत. मन्म कथा धरमानाक मूर्य। हेर शतकाल द्वरम गांद तरन छूरथे।। अना व्यना व नकन कारत नाहि हाहै। कत्र উপায় মতি ভারে যাতে পাই।। ভবানীচরণ কহে নামক ধীমান্। রসিকের চূড়ামণি জাতি সাবধান॥

নাগরের প্রতি নাপিতিনীর যুক্তি প্রদান।
দীর্ঘ-ত্রিপদী। শুনিয়া কহিছে মতি, উপদেশ তার
ক্লাতি, ওহে রসরাজ কেন ত্রাস। বিক্ সে রসিক ছার, মরণে
বিচার যার, সে কেন হে প্রেমে করে আশা। রসিক রসের
তরে, সকলে সে মজা করে, রাছিকেক সে বাছা যাহার।
বিচারিয়া কোন জন, রমণেতে করে মন, শুন ভ্রম যাইবে
তোমার। শুনহ আমার যুক্তি, রমণী রমণে মুক্তি, কেন
ইথে করহ বিচার। গুরুপদ্বী অংল্যায়, ইন্দ্র উপগত তায়,
রাবণ হরিল সীতা জার। বালি ভার্যা জারাদতী, ভারে
হরে কপিপতি, নিজম্বাহরে ব্রক্ষা শুনির বিষ্কার প্রা-

শরে, ধীবরের স্হাহরে, যাতে জন্মে বেদব্যাস মুনি ।। এই कर्ला रमवनारन, मस्त्रारन युविक करन, भाग करन इहरव वंगरा। जूवन मथरन मल. मृद्रावात अन छक्, कहिरल वृतिरव मत्न गर्न ॥ त्कर रूरत शिमि मामि, कानिलु ठा श्राठिवानी, মামি হরে বিশেষন আশ। ভাতত্তবধু হরে কেহ, কহি তদি मन (मर, आहर वर्ष वाषादत अवागा। युक्ति मा गान्। कि वाटक, श्रीन व्यानदकत काटक, आत वह नाकाद श्रीनदन। ইহা হতে আর আছে, তোমায় বাশার ক'ছে, কহিলে তা এখনি বুঝিবে।। জান দেব দতস্কত, তার গুণ স্বায়ুত, ভার্যা। যার অভি ৰপৰনী। সে হুইল পুত্ৰতী, ফিনিল কর্তার মতি, ত্রাহ্মণীর হৈল উপপতি।। শুনি তার দতী নারী, বুবে পতি পাপকারি, রোগছলে প্রাণ্ড্যাঞ্জল। পুনং করিল সংসার, অনুপম ৰূপতার, দ্বিজণ্ডু তবু না ছাজিল।। বছ-কাল করি ভোগ; ভোগেতে হইল নোগ, কাশী গেল গুহে রাধি নারী। সুসন্তান ছিল ঘরে, হরি নিল বিমাতারে, ব্রা**শ্র**ণী হরণ সেল হারি।। অভ**্রব মহাশ**য়, কেন ইথে কর তায়, বাসিক কি করে ভেন নারী। ভবানী কহিছে কত, সাক্ষি তুমি চাও যত, আরো কত দেখাইতে পারি॥

মতির যুক্তির পর নাগরের ভছর প্রভুছের।

প্রার। নামক শুনিয়া সব কহে রাম রাম। অগম্যা গমন করে বিধি থারে বাম।। এ সব কথায় আর নারি প্রয়োজন। যে কথা কয়েছি তার কর আয়োজন।। তোমার শুনিয়া কথা ইইল প্রতায়। প্রকৃত্তি জিয়য়া রাজি করহ নিশ্চয়।। কথা শুনে কি করিব কাথেতে জানিব। কাথেং দেখা থাবে সকলি বুঝির।। শুনিয়া কহিছে মতি সে যে বড়মর। সেথানেতে সরাসর যাওয়াই ছয়র।। নাডাকিছে णात परत रक याहरूक शारत। आमि यारक शांति रमका क्रांमारनत वारत।। अक खांका मिं मारित शांत यि मिरका कर्ति द्वाहें हूं जा करत याहें व रिविष्ठ ।। उर्धान जानित्रा जांत हारू गांक मिल । शांता मन मक मिं मांगरत कहिला।। भीत आमि यांच रमका त्रिम कामान। विवास माहिक कल किया करनान।। विनास हहें सुन्न। याहरू कर्ति। कालि बांगि कर्त्र में कर्ति करानी कहिएह किया करत स्थि मांछ।

নাগর নিকটে মতি পুন আসিয়া নায়িকার ব্যাদ কহিতেছে।

একাবলি ছন। পর দিন আসি কহিছে মতি!। গিয়াছিত্ব সেথা লইয়া মতি।। দিদি দিদি বলে ডাকিবু গিয়ে। ওখনি আইল স্বর শুনিয়ে॥ কি খাসা বসন ভূষণ পরি। বঁসিল কপাট আড়াল করি॥ জনেকে বাহিরে नैं। ज़ारा चारह। वहें उम्र कह नीतरक शारह। सुफती इन्श्रक वृत्तभीवाला। करश ठात घत करत छेड्ड्रला ॥ सूरमङ्गत বভ বড়াই ছিল। পীন স্তন দেখি খাট হইল। বদন विभव आंভा मिथिता। विश्व कवा कर इस ভावितः। নয়ন দেখিয়ে পঞ্জন তায়। আপন নাচন ভূলিয়া যায়। ক্ষীণ শ্লাকা অতি নিতমপীন। উপমা কি দিবাসকলি ক্ষীণ॥ কুটাল কুন্তন মন্তক ভরি। লাজ পেয়ে বনে ধায় চামরী। নাসায় क्तिक कदित्य क्लांन। **क्लि कूट्ट इत्र काटमद्र दा**न ॥ कति কর বিধি কাটিয়া নিল। হস্ত পদ ভাতে গঠিয়া দিল।। আর কি তেমন হবে রূপদী। আহা মরি যেন কনক শশী ॥-वाहित कतिल वमन थानि। ইঙ্গিতে कहिन् गटक वानी॥ अति अनी कटर किमन अन। कश्र अव अव कर्क कि उथन।।

किनि रुद्धिका रद्ध थानि। नदीन श्रुक्त मध्द द्धी। मनम स्मार्न तरमत कृष । तमयत छल् तमिक जूष ॥ र्इन ক্ষান হয় নদেরচাঁদ। কামিনী ধরিতে পেতেছে ফাঁদ । তাঁলি মুখ হস্ত পদ দেখিয়। নলিনী জলেতে রহিছু গিয়া। ভাগা वस भार वज़रे भीत। তव अयसार्थ (धन ककीत !! कुर्त भीटल श्वनि वर्ष मार्टनर्छ। क्रिडीय ना रम्थि धन प्रार्टनर्छ।। ই**হাতে সন্মত,** হলো যুবতী। দক্ষেত করিয়া লইল মতি।। शत कि एमथा इरेटव करत । कि विल सूर्यान शास्त्र गरा !! বুঝিয়েং কহিবে ভারে। স্বক্ত এসো কামানবারে।। णिन श्वित कदत रम मिटन कटन । हेटथ वृत्तिः किछू क्तीन इटन॥ किछ निष्ण यां धता नाहिक भाता यहि याई (यन इडेसा চোর।। তুনি হইয়াছ কাতর। অতি। সদাকহ শীঘ্র এনে দে র্ঘি।। ইথে তাড়াছাড়ি কের্মনে হয়। মার মনে এই যোছে ভয়।। ভয় পেলৈ স্থির করেছি মনে। মন দিয়ে १म रख (पम्पन । पूरवना ८० जन गृहिट श्रीत। श्रीत (म মেয় কহিতে ভায়।। অতএব সেই উপায় কর। ছুম দেয় সতা উত্তেনী সর। তারে ডেকে বল নাহিক লাজ। তবে তে পারে স্থবায় হাব। জামি ঘাই তারে ডাকিল দিব। ারে মোর সব বুঝিয়া নিব।। ভবানীচরণ ভাবিয়া কর। ভেনীরে ডাকা উচিত হয়।।

• নাপিতিনীর কথায় নাগরের খেদ।
পায়ার। শুনিয়া মতির কথা ভাবিত নাগর। মনেতে
বিছে থেদ হইয়া'কাতর। মতি মাগি নই্টলোক অতি মন্দ তি। ছলনা করিয়া বুঝি হরিলেক মতি।। ফ্লাপনি পারগ রে অন্যেরে ডাকায়। কিনেতে প্রতীত হবে এমন কথায়।

নে কার্মেতে প্রাণ কুড়ায় খেজন। ফলে তার কাছে কাকি

थरें ति तहेन।। यकि शाल काट्स तक नाहि स्त्र द्वाना। कि कानि क्यन कर्य कि कतित्व त्यस।। किमनि कुक्रत् 'হাঁয়-হেরিয়াছি ভায়। বুঝি বিধি বিদেশেতে বিপাকে मजीय। नर्यान (लट्शह क्रश क्यरन शामति। একে शाह আর হয় এই ভূয় করি।। কাতর হয়েছি আমি ৰূপ ভাবি যার। কে যদি জানিত মোর এই নমাচার।। ভাবশ্র তাহার লোক আসিও হেতায়। নাপিতিনী বলে নাহি ইহাতে वुकार्त्र ।। ताबिट्ड नः शांति প्रांग रूपत्र माकादत । यात्र र यात्र প্রাণ না হেরে ভাছারে।। আছে মাত্র উড়েনীর আসার আশয়। চিনি তারে নাহি জানি কোন স্থানে রয়।। কোন মতে নায়ক না দেখিয়া উপায়। অন্থির হইয়া গৃহে কভূ ছাতে যায়।। কাভর হইরা সদা সেই দিবেগ চার। সে যদি বারেক উঠে এই অভিপ্রায় টাতে পুনর্বার আর ভারে না দেখিয়া। বারাণ্ডায় বৈদে আসি মলিন হইয়া।। মতি গিনে উড়েনীরে সকল কহিল। শুনি সর বেশ করি স্বরায় আইল। ख्वामीवतः। कटर फेटफ्मी मिनिन। कृठीतः मृठीत कर्षे विकटक कहेना ॥

দর উড়েনীর নাগর নিকটে আগমন।

मीर्च जिल्ली। अनर मतात कल, करित चक्ल कल, जलकल वर्ति कल लात। थेर्क नेटर मीर्चाकात, किन्छ चूल एमर जात, वर्ति जमावका निमा शेरत । शेर्क नेटर मीर्चाकात, किन्छ चूल एमर जात, वर्ति जमावका निमा शेरत । शेर्क वर्ष । नामर्गिए किन्दा लाजिए किन्छ । नामर्गिए किन्छ । नामर्गिए किन्छ । नामर्गिण किन्छ । नामर्गिण

नित्य शेठ लाषा, श्रष्टिनी आकात स्ववश्वानी। शिन्म जानि देकद्छ शाद्य, छन्न नाशि द्विष्ठ थाद्य, हिन्म जाद्य स्थाय यद्यानी।। এই क्रिश्च यात्र यह गत्य वत्य महन्यत्र, ना मतिद्या भाव स्वतः। नाशत यत्मद्ध कानि, मत् अहे अस्यानि, भाव द्विष्ठ छःथ अवमत्र।। अठि म्यानद्ध शेद्य, छाकित्याने छेट्डिनीद्ध, ध्वेम मत्र छन्न नित्य श्वदः। मत्र छ। छाशि होत्र, । जित्र जिल्द्य यात्र, यह वृद्धिशाह्य याश्च कर्व।। छथा। नाशत मत्म, तम किष्कू क्रिय स्वतः, ध्वकानि आश्चन वाहा-। छवानी रम तम क्रम, छेट्डिनी त्रिक्व। १म. छेट्डि छाद्य नद्ध त्रिक्छ।।।

> সরর উড়ে ভাষায় নাগরের সহিত রসিকতা। ললিত ছন্দ

সত্য কেটি মু ভোতে ছখ দিনি নেই।
আলো নে। ছখ গ,ই কৌড়ি পাঢ়িবু দেই।।
মো সেরেক ছপ দেই পাচ টাকা মিনি।
ছু আউ কৌটি খালো মু ভোতে ন দিনি।।
নটখট করুছ কাই মতে ছাদি দে বাট।
উচ্ছার হউচি মু জিব পণর ঘাট।।
আলো খনে মু অছি নক্দ শাশ শশা।
ছব বিকি করি মু বাই যাউচি ঘর।।
সতে কড় ঘর নিজিবি ছব দিনি চল।
আউকি কোমাড়কু পাঠাব বল।।
ভু মতে মিছি মিছি ডাকুচি ভাই।
মতে কেতে দব তো টাকা দেখি কাই।।
ভবানীচরণ কয় সর জাতি গোড়।
জ্বনা কিছু নাহি স্কানে কেবল কৌড়া।

নাগরের সহিত উভেনীর কথোপকথন।

্র একাবলি ছম্ব। শুনে উড়ে কথা না বুকো নাগর। ভাবে টাক্ষা চার নাহিক ডর।। কেন সর তুমি ভাব এমন। হ্রন্ড शृत्य दिन दिन देव ज्या ।। श्रीष्ठ माल है। वा । द्याना कि उर । শতাব্ধি ছাড়া কথা না কব। তোমারে কি জনো ডাকে - यांना। कदवनाक कादा कदिए भागा। अक किन व्याचि উঠি ছাতে। ওমুকের বহু দেখিছে তাতে।। পরম সুন্দরী क्रांश्वर केंद्रिम सन পড़िशाटक भवान केंद्रिम ।। काद्र यकि ভূমি ঘটাতে পার। ভবে তঃথ ২তে হুট্র পার।। নাগব करिल खांत्र कि कव। खाम गत करह वृक्तिः यव । खन ওহে রসিক রাজ। আমা হর্তে হবে তোমার কায়।। আছে? মোর তথায় জন। বাধা সাধ্য করা কতেক প্রমা। হরেং क्रि रूक्ति इंड। निरं नित्र बटन कृतिन तुं ।। कटन वटन किना अदिक तथे। आगिव जोशोदन काङ्ग्रत अवता शादनर , ভুমি ভাহারে হেতা। যাব যাব আমি এখনি সেতা।। ধাহা> धनो विलाद भारत । कवर कालि आरिया (छोटत ॥ वनः **८मिथ कि मिर्टन छर्टन। शहरू रान्हे शनि**म्रा करने ।। निर्विध যাই তাহার বাড়ী। ছলে বলে এনো ঢাকাইসাড়ী।। হেদেং বলি রদের কথা। একা খাকে কেন্দ্র নাহিক তথা।। মনেং করে রসিক পেলে। রুসে বুসে আঁখি থাকিব মেলে॥ কোন্য দিন ছাতেরোপরে। বঁরু মধু আন্দে ভ্রমণ করে।। হারং যদি তোমারে পার। বুদ্ধি শুদ্ধি ছুলে মজিয়া যায়। এসনি এমনি পুরুষ চার। বটেং বলে ভবানী তার।।

নাগরের প্রতি সরোর আখাস প্রদান। লঘু ত্রিপদী। সরোর কথার ঋষি মজে যায়, কানুক আছে ই কোথায়। নাগরের মন, করিল হরণ, দিলেক আখাস তায়।।

नांत्रक जाविल, मञ्चल रहेल, नत शास्त्र मरन स्नत्र। श्वनि **उउक्तरन, वरञ्जत कांतरन, हातिही स्मारत रम्या किरिलन** खनं, मत कर थन, अतिहि मिनित बूर्य । जूके रख यादनं, जूके কর তারে, সেজন খাবারে সুখে।। অভএই বলি, বাও শীঘ চলি, বস্ত্র কিনে দিবে তারে। স্বর্ণমুদ্রা নিয়ে গেল আখা-সিয়ে মিষ্ট বাক্যে যত পারে। নাগব বাসাভে, রহিল আ-শাতে, সর যার তার বাড়ী ৷ চলে শীঘ্রগতি, যথায় যুবতী, भूरत (शन त्कना माड़ी !! श्रदिश सम्मदत, करह भूज्यदत, ভূমি কপদীর বার। শুন কিবা কব, হেরে কণ তব, পুঞ্চারে বিচ্চা তাল।। বাবু এফ জন, বড়ই সুজন, পড়িয়াছে তব্ পিছে। শুনি সিখালে, সরকে কহিল, কেন মৌরে বল मिरहा इद्या पत्र वीन. आहि हित दिन, जुनिरछ। गकिन जाता (काम सूत्र बाहि भटत आहि हाई, वाहि यपि साम था। ए कर गा तनि इत्य प्रवाप्ति यति श्राम श्रूम श्रीम । কর্ত্ত। বংটি আছে, ঘরে এনে পাছে, তবে হবে অপমান। লক্ষ্যা পাৰে পাও আজি চলি যাও, কহিব শুনিৰ পরে। সর তা খনিয়ে ভাবিতা হই**য়ে, ড**ভ গেল নি**জ ঘ**রে॥ ধনাপ हरूदः, न। इक इवटन, आणि शत फिटन कहा। ज्यानी छत्न, করিক রুচন, দুর মতি মত নর।।

সর নায়িকার সমাদ নায়ক নিকটে কহিতেছে।
পায়ার। সর আসি কহে বাবু কি কর বসিধে। ভাল
কেরে কেলিরাছ সে কথা কহিয়ে।। না জানি কেমন মিইট হুই পেয়েছিলে। মধুমাখা কথা কয়ে লোবে কিনে নিলে।।
চব লাগি ভোবে ভেবে এইৡ অফাঃ। রেতে চ্ফু বুজি নাই

নিয়া ঘরে যাই হেন মেয়ে নই।। তথনি বাজারে গেরু কাপত কিনিতে। তার মনে ধরে সাড়ী মাপাই দেখিতে।। मोकारमर जाहे पूर्वर मित । जान माफ़ी ना शाहेबा जाबि কিবা করি।। তার পরে দেখি এক চেনা লোক যায়। যেমন কাপজ চাহি কহিন্তু তাহায়।। সে আমারে সঙ্গে করে নিয়ে নিজ ঘরে। এক জ্যোড়া সাজী দিল বড় সন্তা দরে। বাজারে তেমন সাজী কার সাধ্য পায়। তার জোজা এক পোন টাকার ৰিকায়। আনি ভারে দক্ষু ঠেরে কত ভোগ। দিয়ে। গোল श्रश्रो केका फिर्म श्रदा श्रम निष्य। रत्रथा इटक इक पिटक পেন্থ তার বাড়ী। দিনি দিনি বলে ডেকে দেখাইলু সান্থি।। তার পর সৰ কণা তেঞ্চে কৈ চু তাং। শুনে বলে সঞ্চনাশ কি হবে আমারে।। ওলো নব জেনে শুনে কেমনে বলিস। मर्फे हुके मह शांद्ध क्थन (मिना।। दुहें (मात हाई। हूं हि ছবৈলা আসিস্। কভু কিছু গুনোহস্বাদতে পাতিস্।। এই कथा खरम भारत रेट्ल छग्न। क्टलार्यस्या कथा क्य बाबिया ना १व्र । भरत भाव यस रिन स्मिव कथा यख । আমার খাতিরে ভাই ডাত্রে রাজি ২ও।। হানেক কথার পর শেষ হল রাজি। মন তার বুঝিয়াছি নঙ্ কারসাজি॥ কিন্তু अक कथा छ। हे वरनारह कथन। वरना करित (मर्था करव रहा পাব যথন। মোর সেতা বছকাল থাকা নাহি হয়। কেমনে বুঝিব তবে সুযোগ নময়।। সন্মতি তাহার আনি করিয়া এনেছি। সুখেগ সময় জন্য উপায় ভেবেছি। কিশোরী নেভার নাম শুনিয়া থাকিবে। ভাষাহৈতে ভূমি ভার সময় বুঝিবে।। তাহারে তোমা কাছে পাঠাইয়া দিব। আজিতে। विमात्र इहे शद्बर्ट व्यागिय। ध कथा कहिशा गत कतिन পন্নান। শুনি নাগরের যেন উড়ে জল প্রাণ। কিন্তু সর গিয়ে

সব নেড়ীকে কহিল। নেড়ী শুনি শীঘ্র করি বাসায় চলিল। ভবানীচরণ কহে নাগরে মজায়। ধরা পাধী ছাতে দিয়ে। • উদ্বেনী উড়ায়।।

কিশোরী নেজীর সহিত নাগরেই সাক্ষাৎ। চৌপদী। তসরের ঠেঁটা পরা, নাশায় তিলক করা। পান-গুরা গালভর, গোলাবি রজের গাস্ছ। কাঁচন। নেড়ী বলা অতি তুল, ঘৰা মাথা কাঁচা চুল, লাজপায় আলিকুল, পড়ি-রাকৃত্তল ৰূপ কাঁদে॥ তৃল্দী নালার হার, তেনর পরেছে ছার, গলে শোভে চমৎকার, আর সোনাদানা মনোহর। মোট, গোট কটাকুলে, চাবিশিক্সি তাহে কুলে, ভাবে যেন पद्ध पूरन, एतियादक अनक निवस्त ॥ दश्म विहित्र कृत्र, কাপড়েতে করি উচ, তথাপি স্বর্ণের কুচ, লাগে ভাব থাকি-লে অস্তর। আতে পিছে চাম, ভাবে আছে কে কোথায়, দেবে থারে ঠেনে যাস, বিধুগুরে হাসি স্বতন্তর।। কথাসং ভঙ্গি, অনঙ্গেরে করে এজি, এক নেত্রে কত রক্ষি, দশমে মদন ভসামিদি। ক্ষণেকে মুদিও আদা, ক্ষণে হয় সুপ্রকাশু ক্ষণেং পরিহাস্য, পুরুষে মজায় দিব। নিশি।। এভাবে কিশোরী যায়, নাগর দেখিতে পার, বে ভাব নর্ণন দায় ভাবক যে মনেতে ব্কিবে। ভবানীচরণ ক্ষা, শুন বাবু রস মর, আর না করিছ ভয়, নেজী হতে সন্ধান পাইযে।।

কিশোরী নেড়ীব প্রতি নাগরের উক্তি।

লঘু চৌপদী। নায়ক বিস্তর করে, কিশোরীর করে ধরে, প্রকাশিছে মৃত্যস্তরে, মনো অভিলায। অমুক কামিনী হেরে, পড়েছি বিষম কেনে, মিসনে মনন করে, হয়েছি উদাস॥ মনোছঃখে দিন যায়, ংইমু দীনের প্রায়, প্রাণ তারে সদা চায়, না দেখে উপায়। মালিনী ও মতি সর, ংইয়াথে कार्यात काराट के तथ अखत, उस तक घंठोत्ता मि करत्र हिस काराट श्रृतिया नाम, उत्स हिस तम कथाय, आंकि गांध मि । धरमा कांगात्मत तारत, मरनावाञ्चा कामिनारत, हर्ष्य वृति रूट शास्त, रस्त्र हम्माठा। किस कामात्मत तारत, रक्ष साहे कि शास्त, अख्येन ठिटक जारत, किश्स आंगाय। मत मना त्मरे घरण, भमनाशमन करत, जार्चास निलास शरत, रहे त छेशांच।। शरत मत निर्म्य जात नाहिक शाहेस शास्त्र, साम करत तम होगांत, निल्म वित्याय। इर्चेश्व शिवत, जूषि यि कत वित्त, जर्म हो स्वया प्रमाण कांग वित्याय। अत्मि कत वित्या जान जांग व्यापतम, जूषि कांगा करते। वित्या है क्या । व्यापत कर्म वित्या । रज्या विना क्ष क्रिक्त क्षित कांगानस, यूनकीटन मान।। रज्या विना क्ष क्यो, रक्ष वृत्ति कांगानस, यूनकीटन मान।। रज्या विना क्ष क्यो, रक्ष वृत्ति कांगानस, यूनकीटन मान।। रज्या विना क्ष कर्मा, रक्ष वृत्ति कांगानस, क्ष क्ष र्मा स्वर्ण करता, करता। ना वक्षना। ज्यानीहत्र निल्म, कुष्ठारन यूनकी क्षण, कर वाल् कुष्ठ रस, किर्मानी मांचना॥

নাগরের শ্রন্তি কিশোরীর উক্তি।

जिशमी। किर्माती खिनिया नानी, बुकिया युनल लानि, करट आगि खिं कूम आनी। स्मारत करम्मानन, स्मारत खनाकत, कि खन जामियादा बानि । तुकिय कामानन, समारत कृषिता शहरत धन, त्म वस्र कि में गेंहे जाहे आंकानीका दक्षतामी, खादत बाह्य तानि तानि, यूथ त्मरथ आणि उस्मार कार्मी। शिक्षी जाता वस्र दिंछी, नाश्म नाहि मादन कि।, अस्र वाका करत दक्षान। यिन यूथ जूल घार, जात आश उत्स्व यारा, कात माथा सम्मद्दा योग। यिन दिंदी कि तिसा शलाहे। घारत वाहि वृद्ध वरल माहे, माना हिं कि तिसा शलाहे। घारत वाहि वृद्ध वरल माहे, माना हिं कि तिसा शलाहे। घारत वाहि वृद्ध वरल माहे, माना हिं कि तिसा शलाहे। घारत वाहि वृद्ध वरल माहे, माना हिं कि तिसा शलाहे। घारत वाहि वृद्ध वरल माहे, माना हिं कि तिसा शलाहे। घारत वाहि वृद्ध वरल माहे, माना हिं कि तिसा शलाहे। घारत वाहि वृद्ध वरल माहे, माना हिं कि तिसा शलाहे। घारत वाहि वृद्ध वरल माहे, माना हिं कि तिसा शलाहे।

নে বড় হে লোক খাসা, পিরীতের করে আশা,এপ্রম আঞা क्छ कथा करा। जांदर बाकी करायान, रमछ। वर् नटर नाम, শাশুড়ী ননদ নাহি ভয়।। অতথ্য মনে ক্রি । কর্ম করিছে शाबि, किन्दु वक्ष्यम धन वाहा। क्वित के किन्द्र आक्, रेनल হবে অপরান্ধ এই সত্য করহ প্রতার। শুনহে নাখন রাজ, আমা হতে এই কাম, নাহি হতে পারে বাবুশেষ। রাত্তি সেতা शांकि नांहे. हेशांटहें जावि लाहें गांदक श्द खगर विशासा रताली माना वाटक थारक, मिमिर वटन डांटक, यांत जान वादम अधिभाषः। ज्यात दिस तत आतः, यहै क्या निष्क हरतः भाषी नरे काम भाषा मग्नारमध लाग भाव वक, डाटर पिन ধরে পছ, অন্ভাগে পুরারে বাসন। সে হবে বাসায়, যাবে, সে সমা দেখা পাবে, বলো তারে নাহিক ভাবনা।। আরুতি প্ররুতি করে, বাসম্থল জ'নাইয়ে, কিশোরী চলিল নিজ বাবে। নাগর করিছে থেদ, নেড়ী আশা হল চ্ছেদ, না जानि ए ऐस्त क्य पारन !! नजरताति अहे यन, इंदर क्रिंदिक ধন, ভোগা দিরে করেনা উপায়। ভবনীচরণ কর, হলে বাব स्रमभग, रमर्थ रशांशी निक शृहर गांत्र ।।

्शाशी मानीह बाश रर्गन।

मंघ जिलमी। ज्यात लाइक्ष नाइति स्वाली शर याम वाड़ी, शहिर्दय जान रहि किछ शूंतांचन। शर्ड नीम जीर्ड्डाम, क्रेयर रक्षिड कोन, रन काम निर्म्छ जान, मानीव कातन।। योग करत काश्चेलुंडि, वन्न विक्ष्य छूडि, रुटलत शूंडेनि धक खार्ड छान शर्ड। रहरम इरम यान रुटल, काशरत ना किছू यरम, क्रश्नित भीतव करत व्याम हाशराड ।। धक इड़ा माना भरन, विश्वा वनाम हरम, हुक्कि ना आमि किछू माहि शरत करत। वसन हहेसार्ड ज যুবতীর ভাব ধারি, তাহার জোরেতে তুক্ত করে যুবাবরে ।।

এক যাত্র পতি হার, সধবা বলিয়া তার, খাতি করে দেশ

এই জগতে সংঘারে ।। স্বজাভীয় পঞ্চ নরে, রতি দান যেবা
করে, বৈশ্বা বলি থাতি তার শাস্ত্র অমুসারে। ভবানীচরণ
ভবে, শুন সবে স্থির মনে, নিতা নব পতি বিনা যেবা নহে
স্থিয়। কে বলে বিধবা তারে, বেশ্বাকে বলিতে পারে,
পণিতেত গোপীর পতি অভির মিহিয়।।

নাগর নিতটে গোপীর আগমন।

শ্বাব্রিছ্ল। কপ্রতী গোপী চলিয়া হায়। ঘরে বনি পেখে নাগর ভাষ।। গোণীকে চিনিয়া ভাকিল ভবে। भात वया किए खनिट रख ।। खनिटिक्या लाभी इरेन মতি বোগে ভাষ কৰে নাগর প্রতি ! ওমাগো ইনি কে काल टरा मार । देवमा मत कथा कृष्टिक प्रांत्र ॥ स्टब्स कृटल যেতে কতই পাপ। না জানি কতই আছেন কাপ। লোক बुद्ध कथा कहिएक दशा जीत सोज्द्यत भातांदन। सथ ।। ক্রাননা যে প্রামিকেশন মেরে। অন্ট্রম মঙ্গলা দিব কি গেনে। মার ঘরে জামি করি চাকরি। ভারে ছাল এট नशाम कृति। (योड। सूर्य एड) इस अवस्ति। अटन इल कदर नांगत्र सवि। त्यांशी यत्न मत्य हात्य वसनि। कीहा নাগরের গতি এখনি। বিস্তু **কটা জানা উচিত** হয়। না कानि कामादा कि कथा क्या शून जारव वृक्ति आमादा गाने। यह लादव लांव वाणिद्य यात्र॥ मृष्ट्रश्टरत जिल्लाहर তার। বাতে কাঠে বানি ঠেকির। যায়। ব্যাণী আসি তার বদিল পালে। নাগর আপন সরস ভাবে। শুন শুন ्धांशी चार्यात कथा। अनिदन सन्दर्भ भाहेरा राधा। आसि निम साज्यस्ताभारत । উঠেছिই चांसू रमतम करत ॥

কোন সুধায়খী হেন সময়। সৌধোপারি জনে আপনা
লয়॥ ৰপাহেন যেন হীরক রাশি। সেইৰপাক্ষদে পশিল
আদি॥ হারে হেনরপা ক্লয়ে ধরে। হীরাধারে যেন বুক
বিদরে॥ যদি সেই নিশি পরশ হয় ৮ তবে বাঁচে প্রাণ
দেহেতে রয়। ভূমি সহল্রী শুনেছি তার। যদি কর ছংগ
শাগর পার।। ভবিবারে ভরি নাই ভোমারৈ। মনে এই
ভাবি তব সমাকৈ। ভবানীচরণ কহিছে নাম। গেণ্ণী হতে
ভূমি হইনে পার।।

নাগরের কথায় গোপীর ইত্তর প্রকৃত্তি ।

পর্ব। গোপী সেই কথা শুনে ছাডিল নিংখান। এবে-ছिन्न ভाল नुत्य क्रिक्षः विश्वान । कि कथा क्रिटन जुपि हैकि नकतान । धरेनटल करत कर उन्हीं हा इठान । माधात छेलत মাখা কে ধরিতে পারে। কিসের অভাব ভার ফে কছিবে ভারে ও এখন কথার মধ্যে মোরা থাকি নাই : বুজিওু মহৎ कृषि देवन घटत गारे । लाली कामा करत याद नावत ফিরায়। স্থাদরে হাতে ধরে নিক্টে স্মার । শুন লোপী पि हैरथ जिम दिन मन। तथा उप कि कि कहा बद्द कर्प-টন। তোমাথ আমায় ভাল পরিচয় নাই। বিদেশি বিয়োল পি দেখি কর দুর ছাই।। মালিনী কিশোরী নতি গোরাঃ লিনী সর। দানে দেখিয়াছে জানে বিশেষ বিশুর॥ তাহার। चद्भाता आगि के करमं रकतन। वह विध गत गात कृत्य-. ছिन्न थटन ।। काकुश्ट कान मट्ड कर्म यनि श्टर। आंग-रटा माना मटा पूरत तटा।। घष्ठारत घष्ठक एटा कृषि यनि एक । मत्नामण धन मित्र आंत्र कित्न त्नल ।। यंद्याणि नतीना জুনি ধারা প্রবীণার। বুদ্ধিমতী নাহি দেখি সমান ভোমার। शृष्य भारतं न्भके करत घरत्र जानिया। विके वाका जिन

জ্ঞানিলে বিরল হইরে।।ভাবে বুঝি গুলোকের মেরে তুমি কৈবে। কথা ধারা স্কুচভুৱা নীচ কেবা কবে। স্বামি হীনে শোকাকুলে মনো জঃখ পেরে। চেটো হয়ে চাকরিছে আছ লজ্জা থেরে।। মানা ছিলে কণ মনে গদা ছোপং। মরমেতে মরে আছ ছাড় কোভ কোপ।। আমার আশার আশা পুরাইতে বিধি। স্কুদ্রীর সহচরী সেই করে বিধি। চ্ঞান আমার চিন্ত করে দেও স্থির। ধন মান দিয়ে আমি করিব স্কুম্বির।। ইহাতে চন্দ্রিকাজর পুরিলেন নাম। আশা ক্রান দিল দেখ গোপীর গলাব।।

নাগর নিক্টে গোপীর পরিচয়।

পয়ার। শুনিয়া কহিল গোপী ওলো মহাশয়। কেমনে বুঝিলে ভুমি মোর পরিচয়। সলোকের মেয়ে বল কি पिथित्व छ।। भवन नाहिक भाव क्षांत क्षांत पाछन। চিনেছো আমায় তুনি ভাঁড়ালে কি হবে। নোর মাথা খাঁও আর কারে নাহি কবে।। পরিচয় মোর তবে শুনহ বিশেষ। আমার বাপের বাড়ী আকনা মাঙ্গে । পিতৃ नाम नदाक्तम कुलीन काम्रका आखिल धक्त वाड़ी कुडेच সমস্ত । শ্বশুর স্থামির নাম কেমনে ধরিব। আকার ইঙ্গিতে আমি সকলি কহিব।। দেখছ যাহারে ভুমি ভার স্থামি नाम। त्यांत चलादद नाम धर किश्लाम।। चामित कि কথা কব বিধি মোর বাম : রাজার বেটার মত ছিল নাম ঠাম। পিসানের বোহিন্পো বড় সরকার। নকুড় দত্তের মানি ননদ আমার। বিধু বস শুনিয়াছি খুড়া মোর যার। মামাতো দেবর মোর দেওয়ান রাজার ॥ আর কত কব वाबू देकरक बुक कार्छ। रमस्थ लाक छिटन बरल याहैनां क ঘাটে। তোমার কথার আমি হইবাম তুই। প্রথমে वितिष्टि निक रहें था करें भा आकि व्यक्ति विश्व आकि करिय। व्यक्ति यक्ति यक्ति व्यक्ति करिय। व्यक्ति विश्व विकास करिय। विकास विवास विकास करिय। दिना याहे आणि जात कि कतिय। दिनिथ यक्ति शांकि करिय। दिनिथ विकास आणिय। निर्माश । कर्किम शांकि करिय। क्रिया करिया । कर्किम शांकि करिया करिया । कर्किम शांकि अशि करिया करिया । विश्व करिया । विश्व करिया । विश्व करिया । विश्व करिया करिया । विश्व करिया करिया । विश्व करिया करिया । विश्व करिया करिया करिया । विश्व करिया करिया ।

পোণী দানীৰ সহিত নায়িকাৰ কংখাপ্ৰথম।

ি একার্যলিছক। সদাই তোষায় কবিলো খানা। ছাতে भारत कथा इतेरव माना॥ उद क्षत्र शानि रधक्रव इहरदा। राष्ट्री दुवर छ १२ हे युतिहा एक्टत । निलामी कामदन समह चिक ওংগায়ুচাইতে থার শক্তি। কর শত জন এমনি করে। , জানাতে কাণতে মুরিয়া মধে। ধুবাজন গলে কপের কাস। দেও যারে মে যে ভাবে আকাশ ।। সম্পতি এমতি ছাতেরো शतः। छेटोहित्त र ८७ कुनत्या शदर ।। शहर अर क्रम शदछ ८६ (करदा ८मना) पिराय छोटा दिरमान लाउता। कत नाइन নক হরার আলো: কত জনে টাকা দিল জনালে।। শুরু ভিবে ভার বিশেষকই। প্রথমে ভোলার মালিনী সই।। পরে সর মতি কিশোরী নালী। ভোগাদিয়ে হাত মেরেছে ভাবি। অবশেষে বুনি ব্নিয়া শেষ। আগতে ধরেছে জেনে বিশেষ।। আমি যদি তাতে নাদিরু সার। কাতর श्हेत्रा धतिन शांत्र।। धरम् छर्प करश् मांगत नरहे। ষ্পাশা পুরে যদি সে ঘটে। পতে। কতো বঁধু দেখিয়া ভোল। পিরিভের কথা সদাই ভোল।। কোন ঠেটা এনে পুড়িব প্রাজ্য। এরে এনেদিক মিলিবে জোড়া।। এখন চোমার

কথা পাইলে হবে কিনা হবে যাই জানিলো। ভবানী স্মরিশ্বাকহিছে পরে। রমণী বদনে হাসি না ধরে। গোপীর প্রতি নায়িকার উক্তি। লঘু-ত্রিপদী।

स्मिन करित्न, करह रक्षाशी श्रिक, नांशव रमिश्व छव। स्मिन करित्न, धमन इंहेल, ध्या मित्न छात इव।। तिमिक नांशव, छात्र नांशव, काश्मित मरनात्नांछ। किरमरूठ पिछत, खामात छित्र काश्मित मरनात्नांछ। किरमरूठ पिछत, खामात छित्र काश्मित कर्मन शाहित भाषा।। छुति एवन, खामि वृश्वि छल, किर्छ ग्रेष्ठे करत। यि दिन श्रिक, नित्य सक्त यांछ, किन निवा श्रीव प्रता। माक्ति प्रथ छात्र, कि करित आत, भानिनी कित्नाती मिछ। मत्र छेए वांछ, करत वांछावांछ, छूलारेल छात मिछ। मत्र छेए वांछ, करत वांछावांछ, छूलारेल छात मिछ। हित्य वृत्वा यात्र, रचना याह्म शाह्म, क्वित मित्र छोने, किर्व छ नांछे, स्मात्र स्वा मिल्य ग्रीक, किर्व छ नांछे, स्मात्र श्रीव एक विका हित्य, स्मात्र श्रीक छात्र मिरह वल, हित यह विका नहीं। स्मात्र श्रीक खाह छात्र निरंग, मक्ति वृत्विर्छ शाहि॥ ख्वानी हत्व, क्विर्छ छथन, नीहशामी स्मात्र व्या मानीत क्विर्म, स्मात्र छन, नीहशामी स्मात्र व्या मानीत क्विर्म, स्मात्र हित्य, नीहशामी स्मात्र व्या मानीत क्विर्म, स्मात्र छन, नीहशामी स्मात्र व्या मानीत क्विर्म, स्मात्र छन रहामात्र हित्य। धमानीत क्विर्मी, स्मात्र हित्य, नीहशामी स्मात्र व्या मानीत्र क्विर्मी, स्मात्र हित्य, नीहशामी स्मात्र हित्य। धमानीत्र क्विर्मी, स्मात्र हित्य हित्य। धमानीत्र हित्य।

মারিকা সহিত গোপীর কথোপকথন।

ললিত প্রার শুনিরা গজবে গোপী গুমোর করিরে।
গুরু গঙ্গা গোঁদারের দোগাই বলিরে।। মোর মনে ছিল যে
ফিটাব তব সাধ। হিতে বিপরীত দেখ নিধি সাধে বাদ।।
আমারং করে মরি যার তরে।দে জম আপন করে না জানে
জান্তরে।। হিয়ের মানেতে হিত করিবারে চাই। তবু তাঁতে
ভিন্ন ভাব ভালতো বালাই।। মনে মনে বুরে বুঝ কিবা না
করেছি। কোথায় কোথায় গিরে নাগার এনেছি।। মুঠ মুঠ

টাকা তারা মোর ঘরে থুয়ে। অর্থেক অধিক রাজি থাকিতো त्म खरम । कछ कथा देकछ छात्रा किছू छनि नाहे। धर्च बादन मर्ग कथा कियात माराहेगा नडा अमन किছू तृष्टि इहे नारे। ठारे यनि युवाकान अर्थनि मकारे।। तर्म नव ছেড्ছि: শুন তোমার থাতিরে। ভাল না ভাবিয়ে ইথে মন্দ বল ফিরে।। বুঝিলুং এবে বড়র যে মর্গ্ম। কি কব জোমার দোষ কালের এ ধর্ম। ভোগা দিয়ে ভাল দেখে নাগর আনিয়ে। মুই তারে নিষে আছি তোমাধ না দিয়ে।। এনন করিয়া थाकि रहेरव ध्वकान। स्वीवन एकिश थाःव हरत वर्खनाम। গোপীর বিরস মুখ দেখিয়া বুবতী। ভাবিল মনেতে দাসী কোধাকুলা অভি।। বিনয় করিয়া তবে গোপীকে সুঝায়। ভাল পোপী গোসা ভোর হলেং কি কথাৰ ০ বুনায়ে যুবতী কয় কেন কর রোধ। কৌতুকে কৃষ্টির দেশে অস্কর সম্ভোধ। ঐ কথা বলে আত্র করেছি তামাসা। নাগর গাইয়া তুমি আছ বড় থাবা।। প্রাণ ঘটে আমারে কি দিবে সে নাবরে। মনোমত ধন কেবা দেয় অনাপরে।। এত বৃক্তি বড় অস্ক্রত কথা নয়। নবিনা নাগর ছেতে কেবা কোথা বয় । যদি বন नागत जात्निष्टि यात ठटत । ठाशांदर मा निद्या जामि द्वर्णन हिन्न बद्धा। मानी रस क्रम तत्न किया निनि थाकि। हेश হৈতে কটু কথা আরু কিবা বাকি।। কিন্তু মেভো এখনে। আমার হয় নাই। হলেহতো গালাগালি বলেহ যা তাই।। এক কথা বুঝিতে লো পারিবা না পারি। বলে ছিন্নু ভাতে তোর মনহল ভারি।। বহিরঞ্ছতে যদি তবে কি তা বলি। মনে করেছিমু যে গোপীর মন ছলি।। ভাতে নোর रस (भन रिट्ड विभवीछ। अटक रुव्र आंत्र गारत विभाडा বঞ্জি।। কমা কর গোপী তোর ধরি ছটি হাতে। পরাণ

কেন্দ করে তোমার গোলাতে । দোর মাথে হাত দিয়ে দিয়ে দিয়ে কিবে করে। তারে মোরে এনেদিয়ে বাঁচাইকে করে। ভূকানীচরণ ভাবি যুবভারে বলে ॥ নাগর ভোমার হবে দ্বৈ কুতুহনে।

জ্যা স্থানিক বাক্যে স্কুন্তা গোপীর যুবতি প্রতি । ব্যক্তি প্রদান।

ুপুরার । মধুর নিনতি বাকে। গোপী হৈল বদা। বুব-তির প্রতি বৃক্তি কহিছে সর্ম।। শুণলে। স্কুন্দরী ভবে সুখে পুর সায়। কি কথা কহিব সেখা কংলো আমায়।। বুরে भूरेक तल डाउँ यांश मध्य यदत। मिश्र मकाहेलि त्यांशी বলোনাকো পরে।। মহিমালা প্রভৃতি গ্রমা যত চাবে कार्याच क्यांन तमरण, अभिराम প्रक्रिटिय ।। मार्ट्य मार्ट्य यनि নেও কিন্তু প্রে লোগ। চিক টিফ কথা কই কলো নাক द्वाय ।। शहरा भौठा वङ क्षिटी जान न। भ या स । शविटन দেৰিতে লবে হইবে প্ৰকাশ ।। উলকাটুকি নিলে পুলে কে জানিতে পারে। বিবেচনা করে কছ কহিব তাহারে॥ বিলম্ব বিস্তর পার করা মত নয়। বলেছি বিকাল বেলা হা**ইব** নিশ্চয়।। এলো সেলো কথাতে কেবল গেল বেলা। মিছা মিছি বকাবকি যেন ছেলে থেলা।। আশন কৰ্মের কথা কও কিছু সোরে। আমি মনে বুবে তারে কব ঘোরে ঘারে। कहिरह एक्तिका तत्र (भाशी तत जान। सूथ रनत्य सन कथा वद्या छिटन थान।।

- গোপী প্রতি নায়িকার অনুমতি। 🖖

्लयु जिलानी । श्विन म्ह्यानस्य, नशामा वतुरम, मशी मस्या-भरम मामीरत क्या । यांच रशाली स्था, वरवा करक स्थाप स्थान स्थानिक स्थान स्थान स्थानिक विकास विकास मिलार वर्त ति कृति कि निष्ठ शाहा। कांत्र वाना शादित करते कृति हात्य, किन्छ। एउ हत्य काहात ॥ यणि तान्ये हता करते महागन शान्योदिक करते शामि ज्ञानित । हैयादा कतिहन, जामारत कि निर्द्य, छत्न गाहे ज्ञाक ज्ञानित । नित्र ॥ द्वान लाटक कर्त, धननांक करक, सम्बद्धे भूकत ज्ञाटिक शास्त्र अवानिवत, कहिरह कर्यन, रशांशी छत्न यात्र कहिरह ज्ञाद । रशांशी नागत निकटि गमन करिता नात्रिकांत्र समान

किर्डिड ।

ক্রেরমক পরার। বোগনে গমন করে গোপী ভাতা তার্ভি। প্রস্তানী গন্ন কালে কলে বাড়াবাড়ী॥ নাগরের বাহারের ঘবে ধীরে ধীরে। গোপা গিরে প্রবেশিয়ে দেখে কিরে ফিরে।। একার্টা নাগর আছে নাহি গোলমাল। কহিতে লাগিল তবে করে ভিলেতাল গদেই কথা কয়ে সেখা থাই নালাগালি।বেতো দিল আর দাস দাসী শালা শালী। তুমি ৰড লোক বলে করি জাঁক জোঁক। নাহি শুনে এরে তারে করে ডাক ভোক ৷ গোসা করে পরে মোরে কহে চোট পাট। পুলিনে পাঠাতে চার গুল নোটমাট। গুনে মোর । अत्र करत कारण यत्र। पृष्टे हरक कल भात सरत सत्र।। বুক ছুড় ছুড় করে প্রাণ ছটকট। ভেবে তবে তার পায়ে ধরি চউপট।। গোসা গেল হাতে ধরে করে টানাটানি। তাহা प्तरक मान नानी करत का नाकानि॥ हूरश हरश कामि गड করি ঘোর ঘার। চাকর বাক্র দেখে করে সোরসার 🕸 छाट्यत सिम्बिक कर्ति मिल्लू रकाम काँम। मकट्य कतिलू तांकी मित्स पून भाग ।। (कनवा अ कर्त्या हां किसू हांस हांस। रणानात अत्नार्क इटना आन यात्र यात्र ।। अत्नक क्रस्थात्व

Control of the Contro

कृत कि ताकाशकि। अनव कि कि बका कि निवास कि । प्रतिका थोग्री कथा अव कि कि कि कि । जिल्लाक निविद्या निवास कि । जागि शिक्ष करने कथा रखा शिक्ष शिक्ष निवास कि । जागि शिक्ष करने कि ॥ विद्यास विद्यांस कर निक्ष शास शास। प्रकारी जागिता था। कि शासकात । करानी एतं करने जा शास गास। निवास कर्म गासकात । करानी एतं करने जा शास गास। निवास

🔊 🛝 - সুসুস্বাদে গোপীর প্রতি নাগণের উজি।

পারার। মুস্যাদ শুনে মুখে কহিছে নালর। লোপী তব স্থানাব কি আর বিস্তর। হার হার ভোমার হরেছে অপ-মান। প্রাণ পণে বনে নানে করিব সন্মান। দীন হানে দরা দানে প্রঃথ কর দূর। অতুল ঐত্যা হবে উপ্লাত প্রচুর। কথন কেমনে কথা সিদ্ধি হবে করেশ পেয়া থোষা কথা কিছু অন্যথানা হবে। মনে মনে কর বা বুবিবে মোর আশ। পঞ্চাশ মোহর করে দিব মানে মান। আর কি কহিব কহ আছে কিছু বারুটা। কথার কহিছু সব পাছে বুরু কাকি।। ভাত্রব অতিশ্য কথা কিছু মুরু। কর্ম নিদ্ধি হলে হয় কলে পারিচর। পাঁচিশ মোহর ভাল মোড়ক ক্রিল। পত্র দর-শনি বলি গোপী হাতে দিল। মুলা মিয়ে গোপী তবে মুথ পানে ঢার। তিন গুণ চাওয়া গেল মনে লাজ পার।। ভবানী কহিছে লোভি কামিনীরে বিষ্যা রক্ষা করা দুরে গিয়ে

গোপী নাগরের স্থানে মোহর পাইরা বার্ডা শইরা কামিনীকে কহিল

तिशमी। त्याशी त्यथा शास्त्र रहेका, तमर्थ छात गक्का तका, जात रोग मदनत आगका तामक माध्यत यस, सन नाशत निकटिंग जिकात शमरनाटमाश।

পয়ায়। শুনিয়ে সয়েয় পেরের কহিছে য়ুয়য়। কি আয়
ওজর হবে য়ার শীয়গায়। বেহারা ডাকিয়া তুমি এনে য়ায়
ছারে। কোনখানে যাবে য়েন জানিতে না পারে॥ আয়ি
গিয়ে গায়ুয়ে গহনা পরি মরে। বেহারা বাহিরে রেখে এলো
তুমি পরে। কর্ত্তার কাছেতে জামি সাজ গোল পরে।
য়াবার দাবার তার যাব হাতে করে। সে সমর করে এলে
মুখ করে ভার। পিসির হয়েছে পীড়া জর জাতিশার। চল্কে
দেখে এয় আমি বড় রাড়াবাড়ি। সম্পেই পাল্কি মোর
দিল ভাড়াভাছি॥ পরে মা কহিতে হয় আমি কব ভারে।
লোপী সেল তথনি বেহারা জানিবারে। ভবানীচরণ কহে
য়িস কব কারে। ছেমালের কর ছল কে বুরিতে পারে।।

ं दिनी केतियाँ निविकारी अधिके धेर्ड में डि 🌣 🦖 कि ने किया माजर निक्टि ने बर्न के किया के किया है कैली। शिक्ष केरिया गृद्ध केरिया त्य त्यं में कि किये किये वैषि भी। भागि विस्मर्थ।। क्रिंगिन कुछन कान कर्भाने छे भत । গৈীদামিনী দিনি গিঙি অভি শোভাকর । কাণবালা কর্ণফুল कर्रनेट्र शरवटह । मेदनाइत मूका दर्शाम्ह। जौशरङ निरसेट्र ।। मूर्जीतं युख्कि सठ मानाय हिलिए। मक्तम मार्किक मन् দামিনী থসিছে।। রুস্ত, গোচ্ছা গণ্ডেদশে সাকে সাতনরি। হীরা পালা ধুব্ধাক আছে শে,ভা করি।। বাভতে পবেছ ধাজু হীরাতে জড়াও। পলেছে তাঁবিদ্দ কোলে করিয়া रमजां । वार्ति गुज कि सदमानि देशीर आदम शदद। नन-রচ অন্তর্গার লোভা করে কাতে।। ধীনার ফুলোতে স্বণবালা भूग्भाकिछ। करीट्रं कनक गत्मशाव भटनानां ।। वर्षिनां क्र ভাতে গ্ৰ দিশতে কুলায়ে। পদাফুলে অ'ছে চ্ট্লি লালা-তে মিশাযে।। স্থানের গোলমল পরিয়'ছে পায়। পারতে एंकार नाड़ी अक तन्या गांब । अरे त्वरण यांगे पूर्व कावण করিল। দানী আসি পুর্বাত কহিতে লাগিল। শুনিশা কপট কথা ভাবিতা ত্রানী। ভর্তার দিকটে ভাবে কহিন কামিনী। পিসিকে স্থামার ববো আর কেহ নাই। যদি ভূমি বল হবে ভামি সেতা যাই।। কন্তাটি ভাবিত হবে দিলেন বিদায়। কাচনত্র ভীবের দ্যার কোলারিতে বীয়। ভবানী চরণ बरल भ कुल जिबिटन। जूटन लाक, खनठल कि एक मिशिला॥

নাগর নিজালমে উৎকাপ্ত এবং নামিকার সহিত প্রথম মিলুন কি "

(मरसक्नेर्ट्स श्रीती "चाविक नागरी शृट्ह बादेव बदका

AND THE REAL PROPERTY OF THE P अटल कर्मन त्युगरेकलामा । किन्नाम्बरकमम् करते । काता वाता वाता विकार इन कोनाब ना मारस र शहर क कांत्रका कानिकटल शुक्का सोद्धाः । बात्रा शाक द्वित्रकाणय (सर्वे पछि पछि। ताबि कुछ हत्ना नत्न कडू ८५ वि मधी।। ब्यास मा इंदेरल त्वाणी करम श्रम्का शाखा। ममानात निर्व (बर्द्याः) शांट्ड कान दाए।। अवक, मनत्र रगांशी खात द्वीम द्वास मानव जावित करना यस संकं करन ।। दनमानि कि करन दन शद्ध किल थि । श्रवम कानत्क श्रेटन करत् क्रिय ল।। কার্ক কামিনী পেরে ভাবিল ভাছাতে। চি**ওনীয়** ' ক্ষামৰি বিলিঘ ভাহাতে।। মনে কব্লিভেছে হেন কথার লাশার। জ্যাপনি কাঞ্জিনী এনে করিরা কাহার । যভনে রঞ্জ नि:न नाटक बादः विकि। त्यह एक जाना भूर्व कतिहासह বিধি।। উজ্বল করিল পুরী তোখার স্থবর্ণ। পরেশে এলৌর (पर रहेदा द्वा।। मिथिव रगमात मुथ हिनाना स्मारन। कि कव कांशांद्र जुमि निलिद्य दिमद्रमा। वक् क्रू कि कि आर्थ बाल बात शर् । या इकेक् किस्म नित्न एक्वनांदका भव । छाभ भाभ भगदिन बानक कभात । कार्यत गांशत बात वारिक व्यथीत । अक्टल शानदर रेक्स ब्ह्रा एए हिन् পায়। ভবানী কহিছে বদাইবা ধরে পাব॥

নাণরের প্রতি নারিকার উক্তি।

विश्वमी। श्रीनद्म निष्का शदन, कहिएक मान्तवरद्व, बागाम क्रिनिश निष्म करा। दाशिया कामांत क्रीक, मदनद्रक रहेल क्रीक, स्वित करन क्रिक क्रिक क्रिक श्रीक श्रीमान क्रांकि, गकिन हहेरत श्रीक, खादन स्मान क्रिक श्रीमान हरना क्रिक क्रिक क्रिक स्वाह हारक श्रीम, श्रीमान हरना ्रम्था स्था। कार्ष्य अशिष्ठ क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त व्यक्त स्थान क्रिक्त क्रि

कारिनो निकटि नागरतत शतिएम।

खनिता न शत करा, वाटक कात मन लग्न, ट्रन शतिहत तिय किता विख्या त्रिताम कृति कित, स्टक्ता वृद्धिमको, खन क्षित शतिकात वित्यव कार्यात ॥ श्रीत्यव नायत नाम, ख्रीत महीद्रावान, त्यथा श्रष्ठा ख्रीन एवं त्क्वल नायती कीमपुद्रा करीमाति, त्य कर्त्याटक वाल कृति, काल्क व्यक्ताव दश्कु साहि वामावित ॥ कित्रा कृत्याखन, त्कन वृद्धा शता क्य, वाथ वस्र पन त्रद्ध विद्यादक सर्ता भावा ग्रह्माती खाँचे, बाता हरू तकर नाहे, माद्याश्वद निक्क वृद्धि आहि द्राधि वर्षा । विद्यादक्षा नाहि खान, भवदादम दात मात्र खाँक वर्षा । विद्यादक्षा नाहि खान, भवदादम दात मात्र खाँक वर्षा । विद्यादक्षा नाहि खान, भवदादम दात मात्र खाँक वर्षा व्याप्ति कर्मा वाय कित्रका, खान, वहा करे, काहाः खाँक वर्षे व्याप्ति श्रीवा कर्मा कार्यक माक्रियान क्रिका क्रिका स्थापात शाँका कर्मा विवादक त्यक्तक माक्रियान क्रिका क्रिका स्थापात शाँका कर्मा विवादक त्यक्तक माक्रियान क्रिका क्रिका स्थापात शाँका कर्मा विवादक त्यक्तक माक्रियान क्रिका

विष्यत्यः एवं वरे गाम प्रमाना रशा क्रायना प्रयानय अस्ति। अधियादि स्तिष्मानिक गाहि स्नोतिनीम नेमार असन मामा स्थान क्रियाम, प्रयास्थानिकाम, स्राप्तिक क लेकि कार्याम केर्ने करावीकत्रक केर्ने (यक्त मनगरकात्र, र्ग कार्यनी कर्मना करत कार्य चेन्य एवं ग्रेस

अभिक्राविकाने के किया के निविध्य ।

 শিক্ষিক করিয়া বিষয় করিছে করিছে লাক্ষিক লাক

्रे । अथम दिनादन कामगुक्तः।

atomic logical arms gran grain fallence of faller क्रवाज्य केम्पूर्वः अनुनाः अन्तवः अन्तवः इतिहासः सम् ४ दान्ति। हर्गा वाश्र रंगमान्त अस्त स्वामान वर्षा अस्ति त्रिय नष्ट आरखेत जे भरत । । वस्त्र भे दर्गना करते हो चारता सामानि कर्ता दश्च कृणहाटक करेन खेरला ७ ॥ एशा के केवल गान स्था थन नारम । काष्ट्रिक क्रिकेश के यान मना देना रहे के के किए सिंहर वष्ट्रिय कतित्र। वश्वन । अव्याद्य सहेता स्रोतन्तर सेत व्यक्तिक वका शद्य का मचदक कहिए। द्वारका न्यू देन शक्ति मान ता थाकिक भार । वेयुवडी यूवक स्तंग्रह र नमा र केन् । कीन मना रेनरा कामगाक अवाहेन । दुषकादन इसे अदल निएए निलमां विष्क्रम्य जान जान चना स्वाधार्वकी विकाशी चरव देशक त्यारे तर्गा भूतकात कावितः स्वश्नान रमनाबर्ग । जेब एक उत्र सम्बार्कार नद्भ निया करे ভরণ দিয়ে চরণ জুনি না বাছযুগে বলয়াদি দিল ভারদায়ক কুচরাজ চক্রবর্ত্তী তারে মতিহার ॥ রুণক্রে কুওল দিল ভিনি। भूतं गणि। गांगात्र त्मानक मात्म कृषित वश्रती ॥ त्माचा केंद्र मिष्ठिकाटन कहात त्नाजन। यह करन त्ना गरन क्रिय खोगन ॥ आंडतः ८भागादनः सम् कृतिल मीउल । । दक्तल वाक्तिस रकटन क्रेनना कुछन । जिनारेशिहिन द्वेशी विक्रि নাৰপাশ । জালিয়ে পড়িয়াছিল পাইয়া দে জান।। সুশী जन अन्भान करि जात शहा आहेत्। नाहिता वितः शालक छेलता अनाठि नर्जन सात देसकी सामग्रहा। सिन्ध मेगाई भान भाग कुपुरत्ता। दश् तदो उसनी हरेत खन र्गाना त्यारुवः चित्राताहत सहित्यह नाम ॥ व्यापि নাদি রব শুনি কহিছে কামিনী। উপায় বল্স প্রাণ পোহায় गामिनी ।। तिक कविक स्कन कि कि करता विक विकार कि सम् द्विमीन रव निर्माणकः। शिकाशीक जीशाद्यक् स्वकः जैन है। क्यान श्रेट्यक वृष्ट्य नाहि अने मह । एकाक सक्वा जिस किस निर्देश कि विधि ना व्यक्तिस्त्र स्विध शाहिका निर्दिश स्टिबंश किश्वद रूप्त नहीं नाहि योगा स्वामाद क्यारण विधि घोगेरेण काल्य स्वामान श्रीत क्यार क्यारण विधि घोगेरेण काल्य विद्यक्ति नाहि। कि कृतिन क्रिका क्या काल्य स्वामा कर्य क्टल रूप्त श्रूम मन-क्रिका कर्यानी क्रिक्ट एक नाती श्राम्थम । यादा हिटक बांग काल के किक मजन ।

নাগার নিকটে অনক্ষের বিদাধে তক্জন্য এদেবের থেক।

া পথার। 'বিদারের কথা শুদি জীনের নাগর। কহিছে কৃষণা করি হইরা কাতরা। প্রাণপণ করে প্রাণ পোরেছি তোমায় কি বাপে হে কোন প্রাণে করিব বিদার।। আর কিছুকাল থাক করি দ্বিরীক্ষণ। জাঁথি ভির হলে প্রাণ করিবে গমন।। কিন্তু পাপ আছে লোক লক্ষা অভিশয়। কুলনারী কর তুমি কলছের ভয়।। রক্ষমী ইইল শেষ থাকা অইতি আমি কি কহিব বুরে করই বিহিত।। প্রাণকপ্রাক্ষি তব সম্প্রতে তালা। এ কেই পিঞ্জার পাক্ষি ছাদ্বিয়া রহিল ।। এই কর প্রাক্ষিত্র মেন পুন পাই। ভোমার নিকটে ভিক্ষা এই করি ছাদ্বিয়া বিদার কি নিব প্রাণ করি ক্ষমান। গার্থনান ছিলা মন ক্রিয়াছি ভান।। সালার্য ধনেতে প্রাণ ভূমিক কি জার ক্রিয়াল লিভ্র মত নক্রি ক্রেয়ার।। বলি বত হয় নাম ক্রিয়ারকা ভারে ছারি ক্রি

स्वता श्रेष्ट्रीय कृतिय वृक्षा किल व्यवस्था । जनानी किल्ट्रिट जाभाविषाय क्वेंगा जेज्दात मदमायाका किथि त्राहित ॥

ि विक्ष्क्ष्य भागमा। (1)

লক্ষার। নাগরের ছাইন পরে লইরা বিদায়। পালিক চিছিল লিয়ে গোপী নিজে যার । তেই ারার লাম ভারা লিয়ে পাছে লিয়ে চায় । পথে পার। কি জানি কভার কাছে পাছে লিয়ে চায় । যাটী পদার্পণ মাত্র রেই ারাণবিদার। পরে করে শুল গোপী কি ইইল হার।। পিসি নাহি জানে কিছু ল সব প্রকার । শীঘ্র ভুনি ভারে নিয়ে কহ সমাচার।। ইলিত করিয়ে পিসি ছখনি বুলিকো তিনি না জানিলে তবে মলাবে মলিবে।। গোপী কহে জানি বুলি এ কর্মে যুক্তন। আমারে ভোনার পিসি জানে বিলক্ষণ।। তুনি যেন জান নাকো এ জার কেমন। যাতে হাঁত দিই ভাতে ঠেকেছ কর্মন। তোমরা ছজনে মন্ত হইলে যখন। আমি লিয়ে হার কাছে কহিছু তথন। ভারে সারধান করে এলেছি তথনি। ভ্রানী বার্থানে গুনে সার্থানি কুট্নি।।

ভিতীয় মিলসে নাগরের বৈষণে বেশ ধারণ। দীর্ঘ ত্রিপদী। শুনিরা গোপার যুখে, সুন্দরী ভাষিল সুখ্যে, মিভর হইরা রস্বতীক গৃহ কর্ম তেরাগিমে, শ্রন

জাগারে গিমে, গোপীকে কহিল শীএগতি। তারে না দেখিয়া মরি, দেহ লো উপার করি, পুরাতন দেখিয় কেমনো কড্মত মুক্তি করে, সুস্থারী করিল পরে, ছির ইংল উজ্ম মিলনে। গোপী গিছে বল ভাষ, স্পর্টনাদি জারাজার, থেকো মাজি বারাজীর বেশে। বলে দেও

कार्यक्रीक तामानतं कदतं जाता जामि याच क्रिक्टनत देणस्य ।

कार्यात्रक देवत्रक देवत्र वार्यक्षाः भगन।

শ্রীরার। এইকংশ নাগর বৈক্ষব বেশ ধরি। বাহির হইল পথে শ্রারা প্রাইরি। পথে গুলগুর স্বরেশনৌরাগুর গায়। দ্য়া কর ওচে গোর কলির উপায়। কীরের নিভার হেডু দ্বিদ কায় ধরি। নবদীশে শুলারু হলে গৌরহরি। অফিত চেতন ওচে তুমি পার দিতে। আর কেরা পারে ক্যার ন্বাইতে। প্রাইটেডনা নাগ প্রেমেতে বিলাও। সংসার শ্রাইতে। প্রাইটেডনা নাগ প্রেমেতে বিলাও। সংসার শ্রাইত। প্রেম যন্ত্র পারিষদ কেশন্ত ভারতি। কপট স্মালী বেশক্রিয়া ধার্ণ। বঙ্গে মুক্তি লয়ে প্রভু কর্ষ। ভাষণ। কি ভাবে ভারতে প্রভু নুবা নাই খায়। গুরী উদা- त्रीके क्षेष्ट्र दक फिटब टार्गगाय।। इति वटम यन एति नकी तनः। स्वात । क्ष्यामी केरिटर इति तथि प्राप्ता भावा।

প্রিদ্র্বনাগর আপজ্যর উপনীত পরে অন্সমর্জীরী
পূর্ব ছিগার ফিলনে ফামসাগর মন্তুর।

्थात्मार को उर अरह जनएमत वादन । **अ**धिक वाष्ट्रित ८९ म दशांदा छन शारन । मातिसा दन आदिन मुनी धानास मक्षती। आश्रुणात छेशमीठ देशम पता कृति॥ नाविष्धाती বিশ্বরাছে অভিষড সং। নেড়া কিনী জীলেবেবে কলে দণ্ড रथा आहेम देवन नावाजी विविद्या गरणांवल । পেয়ে গৈত। মানন যদিল।। আং্ডা ধারী জীক্তকের প্রসাক করিল। নাগর উখা ভাব করিছে বা গিল। হস্ত গেল দিন यनि यामिनी श्टेश। तम मयदा हुलि कति वानिनी वाहेल। नागदात दवण दम्मा भूदिय गा स धना। श्रीवर किनाश देवस्थव চুভামণি।। বাৰাজী ক্রিয়া ভাবে ভাকিল অন্স। नावत रक्षि कथा कि । जरु ।। भारतीय मह बदन वृष्ट भटना याय। डाहा ८५ थ .सण ८ सक ना १६८४ भ गाँउ। धम एटह প্রাধনাথ জনন কটিন। যে ব্যবেনতে কামানল দ্বিপ্তঃ বাজিন। কামের স,গন প্রেন ইনে উথালনা। নানর সিভাতে हांश मञ्चनं कितिया।। भन्न्न कित्रह देयदम जीदनव माशतः। यहां द्वयों इस भाग तक वक्कता। পुंचटम दर्शिक छम् विमन नमस्। পরেছে হেরিল ভাগ মুবুত। দশন।। তার পরে করে বিশেষ কুচ ষর্ণ দিল। ঐরাবত হস্তিকর পদদম নিয়া। টমঘাক পর্বত ভাবে নিতম দেখিবা। কম্পতর শাধা বাছ परिन कवित्रा॥ मञ्चलित मध काम गांशरत भानि। भरत राभा बुवलोड मुर्गाटल छेठिन । आहा भाग कार्रण नटक तमना

प्राचिति कि ति कि विक्र सिलिह मिना मुख नागत है। जिल्ल के स्थान में अन्य स्थान स्थान

ভূতীয় নিলনের উপায় চিস্কা।

मीर्च भग्नाह । चनश मङ्गी भारत जक चारत काणिया। স্বামি কাছে ছতে গেল আহারাদি করিয়া।। আশিতে इस्तरह भोन करे महन लानिया। माना हन करत कथा करि ্রিতছে হাদিরা।। স্বামির ধরির। গলা বৈত্যে ক্রেছ রুসিয়া। ্পরিধের পীতবাস পড়িতেছে থসিয়া।। রঙ্গ ভঙ্গ দেখি ভার পতি গেল ভূরিরা। পালজেতে শুলো গিলে নিল বুকে জুনিরা।। পতির পরিলকাল। ছইহাতে ছণক্রা। বে রাথিল ক্ষদ্রেতে ছই করে বান্ধিয়া॥ পুরায় মন্ধ্র লাখ কামকুলে मिष्या। जनम जन्म देन्द्र सूर्य किल ছाण्या।। बरम ्नदन त्राजि ल्लदर्भ निका योध छहेश। अनदकः वाहि निका অদৈবের ভাবিরা। রজনী করিল ভোর ভাবনাতে স্থানিয়া। अकुरनंदक ग्याद्र किंदिर दशन के किया। दशाशी. नाती ्यानि मिनि क्रवेनिक सानिका। कथनी धविद्रह बिनि क्यांत-निट्ड रम्थिता। सन् पुरुष रनाशीरक निक्रों करक छाकिया। आणि चारत किला भाव कह दहिंच बुविमा।। गाहि शहि करने मान महिमार्थ अवस्था करह शास्त्रकार

आ वि यदा निर्माण अमिरिक करिन देशा मिमिक्स देशा जनक में हां हैं हैं होंगा अमिरिक करिन देशा जनक में हां हैं हैं हैंगा के में कंप लिंगा। ठथिन में स्किट मिनि अमिरिक विनिर्मण निर्माण करिया। छिनिर्मण निर्माण करिया। छिनिर्मण निर्माण करिया। छिनिर्मण कर्म यदा था कि मारिक करिया है हिन करिया। मिक्रे प्रमाण मारिक करिया चारिक करिया। कि कि मिनि भारिक करिया चारिक करिया। छिरिक करिया प्रिमित करिया है सिन भारिक करिया। बहे कथा निर्माण करिया। प्रमाण हमा करिया मिनि करिया। छिर्मण विनिर्मण करिया। असे कथा निर्मण करिया। प्रमाण करिया करिया। असे कि कथा निर्मण करिया। असे कि कथा निर्मण करिया। असे कथा निर्मण करिया। असे कि कथा निर्मण करिया। असे कि कथा निर्मण करिया करिया

कृष्टीय भिगतन मार्भादान मार्टी । दम धाना।

अश्रति। बिदेनच मार्निएए भानी मानीर देशाय। दश्याद्राम वर्भ देईरत मानी करण थाता। मानदात खिंह दय मनदमन क्षिप दिव दश्कु कार्ति दश्यात्म प्रश्नि म द्राप्त ।। मिलिएक माजिल प्रकृतिक प्रवाद्भार । एक जिल्ले वार्थ नाम मध्य রাপার।। পরিল ম । মল ঠেউ কলে দিল হাব। নভিল কৃচ কত শোভা ভার।। ঘণা প্রসুল শিরে যেন চাঁদে घन। जनम युव ही कर्ण करत 'ए' एइ तम।। स्वर्ग अऋती परंद **छजुटवंद्र** हुन्।। कडोटकरू पुत्र। इस यह चांटल यूमा।। सिठी-ষের থাল। নিঘে দর্শজল যুবন্থী। নাকা কর্তর কিনি বামা-कर्भ गिरु ।। मल्लात ममर (शन धनक खानर । नव छाक-त्रांगी दमिश द्वातिशयक्षयाः कांशदह आखदः आत दक्षि ভেজ দিয়া। গোণীন শিখান কথা ভারিকে কংিয়া॥ প্রবেশ করিল পরে বাটীর ভিতর। গোপী দাসী নিয়েজেল বরিভার কর'। অনক দঞ্জরী শুনি নিকটে আইল। রক ভঙ্গ मिथि छोत विचाय हरेल ॥ मया देश कामन निया नीश बनाहेले। क्यारम आहेरन फेट्र किकाना कंत्रित । श्वनिश्वा मांश्रत डाट्र में वर्ष कहिला। पारव सामि संस्थित ए करने वाराधित ॥ श्रीराव डेक नानी खव

समु-जिशाने। ध्राठक मनी, क्रांक शानिनी, क्रांक प्रमुक्ति । जिला माणिनी, जिल्लाक क्रेंतिनी, क्रिया क्रिया

নিট সু পাৰব। কাটগৃত করা; কটি বিবাহিত কিছিলী গ বর্ লাকরা; বরাসি বিধরা, বরা মুখ নরা বিদ্ধানী। তর্ভার বঙ্কা লাকরা; তরান বেবাহ কারিনী। ভাষাহ ভবারী। লাক্ষা ভবানী ভাষভার ভার ভারিনী।

१५ । अर्थ हिंदूर्य मिन्दन की नी चार्छ इसन ।

প্রার পূজা অস সাত করি বাসার আইন্ড ক্লিনি প্রসাদ সবে বাঁটিয়া খাইল।। অন্তের পিসি: ছকে শবিক नांशदत । जूमि बिदत शाक कत घटका जिल्दा । शीक वारताक्रम नेत व्यमक कृतिरन। तसन इहेटन शरत नाहिस्त আদিবে।। নাকরো বাছনা আজি করো ভাতেপোড়া 🖟 भीधं भीव दर्भ मार्थः चाह्न कड त्यांष्ठा ।। व्लूत व्लूता (मार्ट् मरक वृद्धिन। अतिनाम गृहनाथा श्रायम कविन।। পांक णारप्राजन ७म मदहन्द्रत। दक्षन «क्रिट्ड देवरम बिटकर मानव । शुरुवी है मानव पूर्व में जिला जा दिल। যুবতি ধৌরনহাল ভাহাতে ঢালিল।। উভয়ের কামানব উইনি জালিল। মনচালু দিয়া পাক করিতে লাগিল।। कृष्क्रि निरम् करत् वार्तको वृत्तिन । कामानदन तम प्रकारत ভাল গোড়াইল। পুনঃ পুনঃ কাঠ দিয়া নাড়েচাড়ে চাবেন। चोड्रसात विष्टल रमेंटव यमि मेख थारकना त्रस्र रहेल रम् कल इस जार। किश्तानि कामानम उसमि निजार।। खनन मिजिन सभ एक निक्ता रहा। किमिकिन कति प्रदेखान कथा क्या निमान वाहिटत कट्ट अन्दर्भ खासाई। द्या कट्ट क्य गोरता चात रवला गारे ॥ श्रीरम्व श्रमिश्च श्राटत चारेस कंदित। दिनाव कतियाक्रीका मित्नक मृतित्व॥ श्रुत्वादिक श्चकाति सञ्चक लामाला । शनि छात्र कविद्याक मान निष् बात ॥ निमारमाद्व करह शद्य श्वमत्मा माश्रम् । नम्यारम কাঁচাৰট সম্পর্কেতে বুজি ।। পাস ধরি বলি বাছা যেন নয়।
কাঁচাৰট সম্পর্কেতে বুজি ।। পাস ধরি বলি বাছা যেন নয়।
কাঁচাৰট কৰিব করে। কালি বাছা কালি কথা ছির
কিন্তি ।। এই কংগা বলে আরা নোয়ারি লাজনা কালিক।
প্রণাম করি,জীদেব চলিল।। লিসি সঙ্গে আনস আপান
যাবে ধার। ভবানী কহিছে ভাব মিলন উপায়।

্রতি পঞ্চ বিবাদের উপায়।

विशेषी। अनय खाउँल घत्त, गृह कर्य कर्ति शद्त, ্রিপিরিরে গোপীরে ডাকি বলে। উপায় বলোগো লিনি, क्रियदन (शाहाय निनि, कालि ভारत शांव कान ऋता। তারে यनि गाहि भारे, जाठिकूल निव हारे, स्मिथवा अजुःश्व কেবা সবে। গুনি ভার পিসি কয়, কেন ভুমি কর ভয়, ষুক্তি দিব যাতে সব রবে।। স্থানীবশ আছে তোর, তাহারে করিলে জ্বোর যামনে করিবে তা**হ**িহবে। রেভেডো ,वाहित यांत्र, प्यांकि धरत टेनमं छात्र, त्यर्छ आकि माहि দিব কৰে॥ ভাহাতে ঠেকিবে দায়, ধরিবে ভোমার পান্ন, खूबि त्म ममन्ने करन कारत । यारक त्म का त्रस्य सूर्य, जाबि ।রব মলোছঃথে, এ পোড়া বহিতে কেবা পারে।। সুখ সাধ क्रिणहेंच, भानाभानि थांछताहेंच, आणि वामि कर्नु ना हा जिन। তবে यেटर পाटर ज्या, यक्ति दमात ताथ कथा, कृति करत जनका नाथित।। उदन सा कति जन्न, देश यनि मर्छ दन, बामिट गरश्व नावा पित। छोदा किए या नानिएत, निमि ভাষ। সর দিবে, তোমার কেবল স্থান নিব।। ইহাতে লে ग्रीकीश्टन, जांत भाग मित जदकार पश्चिम्भागिट भात अक्रम। श्रमि भगी पूर्व काउ, माह गर्दा अला गाँउ, बाराह भारतः निगित निकान कथा करहाँ छाँक गरें छन्निक डबाँक किल्ल किथि, यरत हाछ विलय मा गरेंद्र । सीनीत कतारव करम, हर्ष्ण किल नतांधरा, भरत भिनि शार्ण किला कारह । कर्ड तांकि कतियाहि। भिनि कर्ड छन्मिस्कि, टबाँमारत रा क्या कहिशारह ।। रा कथात्र कार्य निर्देश किला या यजि ठाँहे, कर छारा बारू अर्थाकन । उर्वानी किला छरव, शक्षण कतिरह हरव, गांडात गठल कार्याकन ।

भाग विशेष मत्यात योगात आहेतीकर्गा

अमात। याता जना धूकि नरत यात्रिकी लोगाय। दन नव तरमा राज श्रविद्वदेष यात्र ।। छेष्ठि जगत्वत निर्मि काभीत्क कहिला, शामात्क मानव कार्य याहरू है के में ं अन्यत्मत माम करत जीतमरन कहिरव। नातीत्वण गरत जीनि बाहिट्ड इहेट्य ॥ मद्भात सूराजः आकि ईरेंच दम चारिट्ड । কুটবের মেয়ে বহু আফিবে দেখিতে।। বাসায় থাকিব। कुमि नावीरनम धरत । मणात शरतरक निरम याच कृति करत ।। जात शत्त हरे गंड छे का एएस नित्त । छाका नित्त শীন্ত করে মোরে আনি দিবে॥ অনক্ষের পিরি যত গো পীকে কৃথিল। গোপী সেব। গিমে কলে টাকা আনি দিল টাকা হাতে পেয়ে ভাল নাগরে তাবিল। খনকের প্রতি भटत कहिएक नाणिन ॥ नत्थत याजात मत्था कान देकाम मृत्र । योद्य वन जाद्य जानि क्याद्य त्यात वस ॥ श्रीन जान करक व्यापार्गादकात जामत । जात यह एव बादव नक कि नकेन अनत्वतः शिनि छात्रः शहन्म अनिया। एके वर्षक करिएक इसाशीतक छाकिशा। परनात व्यान मिल जानितक अवित्व । त्याक नाम करत चूनि छ। शहर वित्व ।। (याक मारेजिन नाफीमांका भामि हरना आन्दर्भ मानिद्य है।

ें दे क्यां करत ।। मेंद्रेक त्यांत्र नाम कांत्र जीत्मक जामाने । ত্রিবি ষ্ট্রেরাজী ভারাতাই চার। বেকা হতে বিশাভরে ক্রিছা বাজি । দিমন্ত্রণ করিবারে মালে ভাড়াভাড়ি।। प्रामीतिमा प्राचनम यह देवदन जात्ह। वित्यम कनिया करव লৈকলৈর কাছে।। সংখ্য স্থাত্র। আজি শুনিতে যাইবা। अन्दिन नांग करेंत्र मिम्हन किया। लाशी यहै कथा सरन বিশ্ব চলিখা। তর্গতি মহসব ভানেতে কচিল।। বাজার 🗮 তৈ পাৰে আদার মিঠাই। গালিচা তলিচা বাতি যাতাং তাই। নিমত্তিত নাগীনা জাসিতে লাগিল। রাজীর সম্প্রদা ৰত তাহালা আইল ॥ তোলের পরেতে দব বাতি স্বালাইন। मन्त्रभी नाकिल गर याजा आति विशा मलपांडि (उननी त গীত ব দাঁতের পোকা খন ই এখনি । সাজিল আপনি। शिखांत मह शीक जारनरक्छ। आंदन। दमदश्राह नस्दन লোক শুনিয়াহে কাণে। সে সব রসের কথা যদি লেখা वांग्रा रमपः नातम अक अङ् इय छात्र।। अक वट कहि যাহা এন্ত প্রয়োজন। রসিশা কি কবে যদ্রে কবিরা গোপন। निमञ्जिञ नाविशन जहें या ग्वडी। नाना मर् भान (मर्थ अटन র্কারতী।। হেনকালে গোপী যায় নাগরের কাছে। গিরে **८मरथ** नांदीरवर्ण धरव वरन कारह ॥ दनश्चित्रा कव्टिह स्तांभी এ কেমন বেশ। জবানী কহিছে শুন বেশের বিশেষ।।।। 🐪 ানাগবের পদ্ধীআমস্থ নারীবেশের কারণ। ুপ্ৰার । পরিবাহে খালালাড়ী বাশাল লাড়ী তার্ন হৈৰ বসাৰ ভাগ বড় কাঁচুাৰার ।। বৰতিভেগ দিয়া क्षा के कि का बीटन । शिहतरह निन्त्र छाटन रपन सवि काकि प्रदेश, देनिक शरप्रदेश कुलकारिक । ' उद्दर्शन मा जिल्ला । विला क्षिक करिन सम्ब

A. Oak

দোলায়। সোণার ঠোনের নৎ আছে নানিকায়॥ চাঁপ কলি হর্ণ মালা হাঁসলি কপার। পলায় দিয়েছে সব শোভা কত তার।। বাউটা পৈইছা লৌহ ৰূপাতে বান্ধান। ৰূপীর মাজুলি হাতে রেসমে গাঁথান। বড় মোটা বাঁকা মল পরিরাছে পার। আর অনস্থার ঢাকা নাহি দৈখা ঘাম।। একপ দেখিরা গোপী কহিতে লাগিল। পাড়াগেঁরে বহু বেশ কেটা শিখাইল।। এফণে বিলম্বে আর নাহি প্রয়ো-জন। फुलि जानिशादि ইথে कत जादतार्ग।। अविराह्य ফালি বলে ডুলিতে লছিল। অতিবেগে লিয়ে ডুলি স্বরায় পৌছিল। জাদনে এবেশ করে গোপীর সহিতে। নাগর আইল ধনী পাইল বেখিতে । অন্য যুবতীর পাশে বনাইল। নাগ্র বেঘটা টানি গভ্যা জানাইল।। জনজ জাসিয়া তার নিকটে বদিল। করে ধরি ভবে তারে কাইতে भाषिक । टायरका सूचन स्वी अया श्राह्म दिनसम्। श्राष्ट्र दर्वसम् ্রত্থলিস্ক্থন এমন ।। প_্সা গেঁরে মেরে ক্ছু হোম**টা না** त्थारम । किम किम व दत कथा करह पुरम त्मारल !! **८ नर्थ** শুনে ইনি কেটা জিঞানে সকলে। অনুস্থ বিশেষ করে ন্হিছে কৌশলে। ভগসির পূর্ব হালি সহরেতে ঘর। পিনির ভাগিনা বছাগোষ্ঠাপতি ধর ॥ সম্প্রতি নে দেশে থেকে পিসি আনিয়াছে। ফোখাও নাহিক যায় ভাবে আপে পাছে।। সোজা সুজি লোক বহু कथा गाँহ জানে। এদেছে অবধি কথা নাহি শুনি কাণে॥ যভক্ষণ আছে হেথা কথা না কহিবে। বেশ ভূষা দেখ যদি সকলে হাসিবে।। ভাড় বাজু বন্দ গরনা পরেছে রূপার। কাঁকালে ভেনরি গোট আর চন্দ্রহার,॥ মোম দিয়ে পেটে পেড়ে খোপা বান্ধি আছে।

कें श्रि कांत्र कांट्र एम चूनिएंट्र शिष्ट्र । मक्कांत्र माहिक निमी पाएँ गाँउ हांछ । जांठादित जांवनात्र माहि कर्ष्ट जोंठी। गर्की। प्रदेश प्रदेश प्राप्त नित्रवि । जांभि कर मेठ प्रिय अरहर जवि ॥ यूर्म क कांठ्र । जांत्र । यूर्म क कांठ्र । यूर्म क कांठ्र । यूर्म क कांत्र । प्राप्त केंद्र । थांज्र । याद्य क्रमा कर जांत्र । याद्य क्रमा क्रमा कर्ष्ट्र कि विद्यवन्ते ॥ जांग्रा । विद्या याद्य व्यक्त प्राप्त कर कांत्र । जांत्र मेठ देनदेन प्रदेश माहि थांत्र ॥ जांक्र यूर्म कर विद्या कर । विद्या कर विद्या कर विद्या विद्या कर विद्या कर विद्या विद्या विद्या कर विद्या विद्या कर विद्या विद्या कर विद्या विद्या कर विद्या कर विद्या कर विद्या विद्या विद्या कर विद्या कर विद्या विद्या विद्या विद्या कर विद्या कर विद्या वि

পতিগুণ বৰ্ণনা।

পরার। পাড়া গেঁবে পুরুষেরা শুনিয়া কুবারা। নিজ-পতি গুল কহে রিকিল যাহারা।। শুনে এক রসবতী কহে মৃদ্ধেরর। দেওান লামার পতি আমদানি ঘরে।। ইংরাজী পারসী বিল্লা কিছুই না লানে। দঙ্করের কর্মা করে কালে দাহি মানে।। সাহেবের বব কথা নাহি বুঝে শুনে। তথাল ভাহারে ভালবানে তার গুণে।। কুঠী হতে আসিয়া বাহিরে জল খার। গাড়ি চড়ি তথনি বাগানে চলে যায়।। ঘারেহে দ্বারির প্রতি আজা আছে তার। সে বামিতে না থাকিলে ছকুম আমার॥ ইহাতেই বুঝ মনে নাহি পারি কিবা।। শুন পতিগুল বুরি মিশি দিবা।। শুনি কোম স্কুরসিকা কহিছে পরে। সদর মেটের কর্মা মোর স্বামী করে।। তাড়া ভাতিকুঠী যায় তরু রাজি হয়। বাটী আসি বাহিরে থাকিয়া

কথা কয়।। কাপড় ছাড়িয়া যায় বাবুর বাটাতে। চাকরে ভুকুম করে যাইবা আনিতে।। সে তথন থেতে পারে বর্থন भागेहि। हैत्थ कान कर्य मिक्कि नाहि इस छोहै।। अना तम-বতী কহে একৈ বড় গুণ। খাতার গ্রহরি পতি কাগজে নিপুণ॥ ठिकठाक काल वृत्य रह छेलनीछ। यव जाली शृद्ध माहर যাহা মনোনীত।। ভূল ভ্ৰমে যদি গৃহে এলে অন্যয়। কাপজ লইয়া বৈনে আননোনে রয়।। কংগু কেনে কামিনী করিয়া অহন্ধার। মোর পতি অতি বড় মার তবিল্দার।। কলো লোকে টাকা দেয় থোক খাক পায়। রেতে বরে এসে বৈনে मकुन मिलाय । ८७ मनस कारता कथा नाहि ऋटन कारव इ কাছদিয়ে কেছ গেল চায়ন। তা পানে। মছদ মিলিয়ে গেল इम्र वर्ष्ट्र रथीय। किछू यनि ८मस्थ शास्त्र नाहि भटत रमाय।। দাসি খুসি করিয়া নেডার ফিরে খুরে। এমন পতির গুণ কেবা নাহি বুরে।। কেং কহে পতি মোর ব্যান্থের পোদার। আর যত বেবে লাছে ভালা ভাবেদার। ফালুস নোট ভাষা মেকী চেনে যে চকিতে।। কেনা পারে ভার হরে मिकी ग्रांचाइँ एक । विकास तम जान १ । টাক। তার হাতে দিলে পর্কিয়া লয়।। শুনি কেই কছে ভাব যেন রাজয়াণী। দত কব প্রতি গুণ নিজে নে কেরানি। ইংরাজী নেজাজ তার করে ছট হাট। বিস্তার জাহাল ভাই জানে কত ঠাট।। নকল করিতে পারে মাছি না এড়ার। ছল ष्टाफा कर्या नाहि कदत विषाष्ट्राय ।। किंग्रे कार्क नषा थारक करें। यन्ते थात्र। मत्रना गणिस किছू मिथिए ना गात्र॥ क्र (थटक मनाहे थादक घटत नाहि तत्र। घटत यदक धटम मान्य দেখে খুসি হয়।। বে আড়া কুৎসিত লোক দেখিতে না পারে। সোয়াকিন লয়া থাক বলে ঘোর ঘারে।। কহিছে

রমণী কোন শুন পতি গুণ। শুনিলে শক্তর মুখে পড়ে কালি চুন।। পতি মোর করে চিনে বাজারে দোকান। ঘরে বাহিত্রতে ভালে, দোকান সাজান।। সাজাতে কস্তর নাই ছদিগ সমান। কোথায় কি হয় তার করেনা সন্ধান।। এই কপে পতি গুণুক্তে নারীগণ। অধিক হইল রাজি যাত্রা সমাপন। মণ্ডা মিঠাই খিলি কত এনেছিল। সম্প্রদার লোক বত প্রথমে বাইল।। আহারাদি করি তারা ঘাইতে চাহিল। অনুস্রের পিসি জানি বিদার করিল।। তারা গেলে উঠাইল বিচাশ বালিস। ভবানী বালহে পরে মেধের মজ্লিস।।

মেয়ের মজ্মিনে প্রকারা থেকা।

প্রার। মেরে মজ্নিক করা উচিত জানিয়ে। অনজের বিদি তবে হাদের লইলে॥ খাওার মুখান্ত বত আরোজন ছিল। তাদের সহিত কিছু আপনি বাইল।। ভোজনাতে সকলে বিদিল সভাকরি। তাফিয়া লাগার তারা লজ্জা পরি হরি॥ গোপী লাসী লাজি আনি দিল পান দান। কত নত ককুট করিয়াপান খান। কাহারো আল্রোলা এলো কার গুড় গুড়। সকলে তামুক খার নবিদা কি বৃঁড়ি॥ এসব ক্রিলে পরে রাত্রি কিছু ছিল। গ্রেমিকারা প্রমারার খেলা আরিছেল। যাও থাক এই শব্দ কেহ কেহ কহে। কেহবা নৌরেন্ত ডাকে কেহ তাহা সহে।। সাবাদি কাগজ বলে কোন রসবতী। শুনিয়া কাগজ কেলে খেলুভি যুবতি।। প্রমারা খেলায় সবে হইয়াছে মন্তর। জনক কি করে ঘরে কেনা লয় তত্তা। অনক প্রাদেব ছুঁহে শুইয়া তথার। ভবানী কহিছে তন কি খেলা খেলার।।

পঞ্চম মিলনে থেলাচ্ছলে বিপারীত শুস্পার।

তোটক ক্রদাে নব নাগর কামকূপে মজিয়া। কত त्यन थारन तंमनी नहेसा॥ कामिनी कमतन समद्य छेठिन है নলিনী তথনি মৃণালে বান্ধিল। মধুপো অধরে মধুপান करत । धनी की । की कति करत यस ।। कारम मण्ड श्रम भृश्च सन्म रुद्ध । युवकी कहित्ह धाननाथ नद्ध ॥ रुचि तनर वृत्क वक् छम्न करत । अथरना ममरन शानिर्छह भारत ॥ कृति রূপধারী রতিনাথ হত। গুণগরি ন'মে আহে। কব কৃত।। चिंगीष्ठ करत। ११ कामचाना। कात्म कांत्र करता नाहिः বুবা বালা।। শুনি প্রাণপতি কংগ্ ভার অতি। জদি উঠি করে। বিপরীত রতি ।: করি ইচ্ছামতে মতে তুর কর। শুনি थनी भरत इत्ला अके ३३ । लो छ राम्माद्य च्यानि चौथि स्टत । কামদেব আরো মনে বাস্ত করে।। কামে মন্ত নেখে লাগ লাজ পেয়ে। টুটল চুটল কোথা রহে নেয়ে।। পরে পতি ेकारन ধনি পড়ে ঢুলি। প্রিয় পজি অবে, বুকে নিল তুলি।। श्रमि गरतावरत धनी छेटठे भूट्या ध्यम शश्रदणाटच लाटर অধোনুধে।। ঘন কেশ আবো অভি যোর নসী। উভয়েরি তাহে ঢাকে মুখশশী।। মৃত্হাস্ত মুখে অতি চিত্ত লোভা। যামিনীতে যেন দামিনীৰ শোভা।। কটিদেশ ভূলে ঘন শক্ करत । कलिवन्यु जारह जतु नाहि गरत ॥ यवला हरेशा नन-লারি মত। বছ কট পেলে নারী পারে কত।। পুন পাল-টিয়া নাথ উঠে বসে। তবু নাহি তাহে বাভ্ৰদ্ধ থসে।। বিধিমতে কামে হত বজ্ঞ মারে। পরে বারি ঢালে মুষলের थारत । शांशित प्रकान करत तक्रमा । जवानी कवि ट्यां के कहरम वटल ॥

্র 🚁 সভা ভালিয়া সাত্রীগণের নিজালয় গমন 🕫 👀 পর্মার। নাগর কইয়া স্কথে জনক মঞ্জরী। রভিতরস द्राम्टल तबनी त्यव कति॥ व्याहेन मजात्र वृक्षा स्ट्रतिन्त्रा-গ্রণ । দেখি ভার পিসির চঞ্চল হৈল মন।। ভাবে সবে সভা कांत्रि याहेत्व गथना औरमत्वदत लदत स्नामि याहेत छश्चन । সভা ভার্কিবার টেক্টা ভর্থনি করিল। রাজি কত আছে বলে কারে জিজাবিল।। প্রনারায় মত্ত ছিল যত নারীগণ। निमि र्गय र्छान भरव इरवा मरुडन।। भन्न जिक्र छेठि লবে নিজ ঘরে যায়। অনক বিনয় করি করিল বিদায়।। নেই গোলবোগে যাম বুব। বহু ৰূপী। অনঙ্কের পিসি তার मध्य চুলি চুপি।। আপনার ডুলি মধ্যে তারে ভুলি নিল। ক্সাকরি সেথাহতে বেহারা আনিল। পর্ম আহলাদে রামা বাটিতে পৌছিল: নাণার লইয়া পরে পালকে ৰবিল।। পুরাই মনের সাধ মনেতে ভাবিল। ভবানী करिए नाथ विधि श्रुताहेल।।

অনঞ্যে পিসি সহ শ্রীদেবের জীড়া।

शत्रात । शान द्व खहेश कर वार्कि खात नाहे। विलय ना कर खात खनर खामाहे॥ खनिश नर्संड छात त्विल औहें जिल्छ। नर्डारण निक्षिड काम नारत खाणाहेरछ॥ इहे श्रम यति करत विनिज छथिन। श्रमायित सनी मूथ कृषिल जमनि॥ नीतम तमना स्तर्ध नाहि तम स्वाम नागरत कहिरह कित जनरकत एवय॥ खाहा मित धहाँम यमन स्थान तालि। निकुर् जस्तरह नव निहेशकीनी ॥ स्वनीत श्रार्थ थान कमल कृषित। जागा रुक्त म्यूकत ब्रमारस तहिल। म्यू शितिशूर्ण शक्त काला ना क्वाणित। कि हरत छेशात थान खाना ना श्रीत ॥ तमनीत र्थम खनि बीरमक काकत। नर्छान श्री स्व मानी दिएल ए किन्द्रित कर शिक्त ।

सान सील श्रीत । को किन्द्रित कर कात लित नेत कर ।

गड़ा स्व मान त्रव नार्कि करता हला। क्ष्यान ति क्ष्यान ति हितात कर ।

हत होत कर । होत ही से त्रका नार्डे मर्य कर कर । यस ।

खार हात कर । होत ही से त्रका नार्डे मर्य कर कर । यस ।

खार हात कर । का का कि एक शार कर । व्यक्ति का हा हि कित ।

तारि हा त नार्डि मरह ।। ति को मांद्रित का हा गारत व्यक्ति ।

वारत कर । वक्त बात खनका कर हा हा हर ॥ होत शार विकास ।

हो का हर । यस वार । बात ने का शार विकास ।

कर बार कर । यस वार हर हुन ।। को किनारत वर्म बार वार नाती का तक ।। खन वाम वार कित ।

दिमात नाम ति हो से वान। । निह नाती रामवाती गांवा कित

शि। द्विकिमात खन मात किया बात करत। ताथ मीन गांगान कित मीन नरत।। खरन वरण हैश हरण गांदर करन ता र्या र्या कामरित धतियारत रक्या भारत करत।। कित मीन गरत जांग घरत यान भरत। तांक भारत गांत स्वरत घरत रस छरत।। वर्षण वांक भाभ मनखांभ करत। ख्वा-रित कथा खित खन थीत वरत।।

> চৌকিদারের হস্ত হইতে উদ্ধার হইয়া মনে ভাক্ষেপ ও প্রবেধি।

किशमी। शुट्ट विज राहे मिन, कृति युव नमिन, जारबन কৈ হইল আমার। ধরে ছিল চৌকিলারে, মানীরাথি অল-शांत्व, अत्वय कि इत्व आह्रवांत्र ।। अबश अमन मांग्रः, ट्रांत रम निम यात्र, अयथ माधुत अक निम । अव्तिष्ठ। धरतिहरू, বন পেয়ে ছেভে দিল, সেই যেন ছিল ধনগীন।। ছারি যত আছে ভারে, যতাপি ধরিতে পারে, তথনি শুনিবে স্বামী थटन नाश्चित्रदेव यान, कि जानिया गांत्र आंग, डांव शहं ना श्व निस्तात ॥ ध श्रकात गांध्या जात क्यारन वा যাব আরু, নাহি গেলে কেমনে বাঁচিব। করিলাম প্রেম मार्थ, तुकि विधि वात्रभार्थ, कि जानि कि घटें कि कतिव॥ चात्रवात करत गरन, धिक धांक रमहे जरन, প্রাণ ভয়ে नाती প্রেম ছাড়ে। রুনিকা প্রেমের তরে, কেছ বা যদ্যপি মরে. রসিকের কাছে যশ বাড়ে। রাবণ সীতার আশে, দশ মুগু অনায়ানে, দিয়াছিল জগতে বিদিত। পেয়েছি পামনী ভায়, এক মাতা যদি যায়, ভাতে আমি না হব খেদিত।। ভবানী এন্থির কহে, রাখ প্রেম যাতে রহে, কাছে যাবে एकेटल कहिट्य । अनक मछती घटक छाटि कि छेलाइ করে, কিনে প্রেম তরঙ্গ বহিবে।।

ি চির নিলনের অনুপাম ভাবিয়া অনক্ষের থেদ। गाहरम वृक्षित ब्लाइत, य श्रकादत यास कारत, शिलू करना रहेन मिनन! स्पारितामारित अधकात, स्मर्था हर्ने দ।চ বার, বার বার না হয় তেমন। এই ভেবে মৌনা হয়, বিরহ হইলোদয়, মনোকের শরেতে কাভরী ঞ্জিদেব রূপ, করে মরি জপরূপ, আর কি হেরির মনোহর ধ গোপীকে ডাকিয়া বলে, পাব আর কোন ছলে, উপার না एपि कान मरूक। अफ्रयव छन वनि, कुरन निरम अनाक्षिति, ঘর ছাড়ি রব তার মতে।। হেন উপণতি ঘার, তার নিজ পতি ছার, সংমারেতে প্রয়োজন নাই। গৃহ ধর্ম নাহি চাই, হারে যদি স্বাণাই, লাজের মুখেতে দিব ছাই। একে সেই স্কুনবীলা, কেহু নাহি সুপ্রবীণা, প্রবোধ কে দিবে সে মহয় : বিয়হে কাওর হয়, স্মরভায় অভিশয়, শ্রাঘাতে করিল अनत्।। जारमा स्वार्भः कारत्र हिः।, अरवान किञ्चित रिन, <mark>তো</mark>মার গািদরে ডেকে আনি। কেন এড কর ভয়, মন্ত্র ৈ।তে কিনা হয়, মল্লিণী প্রধান। তিনি জানি ॥ গোণী ভারে প্রবেশবিষে, দেখানে কবিল গিয়ে, স্থানি ধরী তথানি आहेत। अनत्यत शिनि करव, गाट्ड छूहे पिश हरन, उठानी-**ह**त्रव वित्रहिल ॥

> **অনম্পের পিদিব অনম** এতি চির্নিমলনের সুধুক্তি প্রদান।

পরার। অনক্ষের পিসি আসি বৈসে তার পাশে। কি জন্য ভাবিছ বাছা বলিয়া জিজ্ঞানে।। কলিলোগো পিসি তাহা তুমি কি জাননা। তার বিরুহেতে মরি উপায় বলনা। শুনি নেই রসবতী করিল প্রবোধ। অবোধের মত ভাব -

হইয়া সুবোধ।। গোপীকে বলেছ তুনি কাতর হইয়া। বাহির হইছে চাহ সংসার ছাড়িয়া॥ ছিছি বাছা হেন কথা <u>बट्नामारका ब्रद्ध ।</u> या मत्न कतिया कत्र घरत त्थरक स्रूट्थ ॥ रिथ फिनि आमि युवा विधवः हत्यहि। कुरूदेशत माना आहि কি না করিছেছি। মরে থাকি উপপতি করি যত চাই। কেবা দোষ দিহত পারে তবু স্বামী নাই।। ভুমি ভাতারের मां ७, छत कथा किया। जात निरत जानताचि नकिन भातिया ॥ সুশার্সিত পতির গৃহিণী যেবা হয়। পরকে করিতে রুপ। তার কঠ নয়।। নির্কোধে সংসার ছাজে হর মানহীন। সংসারে থাকিলে বড় সুথ চিরদিন ৷৷ এখন্থ যুবতী প্রতি ष्यत्यत्वत्र आग्। गर्वकाटन পणि यात्र बाह्य बन्नुमाम।। लकः र मस्रा इति इति १३ (म शृहिनी। उथनि अधिक माना चामी माशिमा।। कूल होत प्रथ विवन विकास । তার পর হয় তার কডই জঞাল।। তোরমত হাবা মেয়ে না দেখি কলিতে। এজেতের মধ্যে নাই পারিতো বলিতে !। ध्यम् छेलाञ्च विवा त्राव विवासन। छ्रित्र थाकिरन भारू इरेटव यथीन।। इश विल वह युक्ति मिकारेश जिल। शाभीक कहित्व आिष अनत्त्र कहिन। ক্ষনক হানে গেল আঁখিনীর। ভাল বলিয়াছ পিসি এই কথা স্থির।। নাগরের কাছে পরে গোপীকে পাঠায়। वुकादम कहिट्न दयन अस नाहि शाम ॥ (गाशी मिठा गिदम ग्व नाश्रद्धत किला। अञ्जादम आदिशान स्टार क्रुव्य शामतिल । (भाभी नात्यायिक (भरत विनात्र दहेले। अनरऋदत आनि कट्ट ध्वाभएड हिन।। श्वनिश्व खखरत कांटन ना भारत कुक्ता। ज्वानी कहिएह त्थक यात्व महामा

অনস মঞ্জরীর পতির নিকটে তারকেশ্বর

প্রার। সন্ধ্যার পরেতে ঘরে এলো তার পতি। কাছে আনি কহে হানি জনক যুবতি।। সদা মন্ত হয়ে থাক লৈছে বারাজনা। আথেরে ফিহবে তার নাহি বিবেচনা।। ब সকল ধন কড়ী বাড়ী অলঙ্কার। কে ভোগ ক্রিবে পরে ভাছে কে তোমার।। সন্তান না হলো মোর যৌরন না রয়। ভূমি যেন কথা শুন সেতে। কম নহ।। একণে যুবজি जाहि हरन जाना जारह। उन नीवा दला लाक गृहे यात কাছে।। মনোত্রঃথে মরি জার কত লভ্জা পাই। একারণ कांत्रदरुषद्वरङ (यटक ठाई।। ४३/विस्ता दव रमशा एक्द्रांखि कतिव । महान १८४ मा १८४ वृत्तिहरू शाहित ।। ভाষात कि মত এতে যল দেখি শুনি। মনে ভিছু ভেবেলাকো ভারা ফবি যুনি। শুনিয়া ভাহার স্বামী ছাড়িল নিখাস। কার বঙ্গে ঘাবে কারে করিব বিশ্বাস।। অবশ্য উচিত দেব ছারে চেষ্ঠা ধরা। কিন্তু দে কঠিন বড প্রায় প্রাণ হরা।। তপনে ভাপিত হবে এ যে ঢৈৱে মাস। পথে যেতে কহ ক্লেম সেথা উপবান। এ গুংখ সহিতে হাবে করিয়া আখান। যদি मन्त्र कथा तर्छे इरव नर्जनान ॥ अनङ् छिनिहा करः रत खात কেমন। পিদি মতে যাবে কেন ভাবিছ এমন॥ এখর रुपन वटने पूर्विट कि जया। छेपवाग जत करू नाहीत ना হয়।। ভাষ্ণণের সেয়ে যত হৃত ত্রত করে। বার মাস উপ-বাদ করে নাহি ভরে।। ভ্রাক্সণেরা ভূষ্ট ছাতে আরো দেন বিধি। উপবাদে কিবা ভয় গুন গুণনিধি।। লক্ষবাদী সঙ্গে यादव कि कतिदव हाति। अरुवि कान प्राथं ना इहेरत त्यात ।। निष्टामिहि (कन जुमि जावना कतर। कालि मिन

ভালু যাত্ৰ যদি তুমি কহ।। গুনি গুণধাম কহে ভবে কালি यार्ड। त्वाली गट्य गांदर यात गांदर गांउ।। शिवत हितन मुख्य अमेक मंख्यी। ज्वांनी कहिएह सूर्य त्याहाय नर्सती॥ পজির অনুমতি প্রাণ্ড হইয়া অনক্ষের তারকেশ্বর গমন। ্পরার। প্রভাতে পতির মত কহিল গোপীরে। এখনি ডাফিরা ভূমি তানরে পিদিরে॥ পরে প্রাণনাথে কবে হয়েছে উপায়। তারকেশরেতে আজি যাব বলো ভাঁয়॥ গঙ্গাপার হব মোরা হাউবোলা ঘাটে। আগে যদি ঘাই রবে। শালিকার নাটে । বারে বলে। সেজেগুলে যেতে পাল কীতে। হাটখোলা পারখনে পাইন দেখিতে।। এতেক শুনিরা গোপী চলিন জাতি। এথমে পিদির কাছে হৈল জিপনীত।। কহিল পিদিরে ভার পরেতে নাগরে। গুনিয়া ब्यारम्य जात्य व्यानन्त्र गायद्व ॥ ८४१थी विदय सम्दर्भ घटा यायात मध्यामे । एकसारण शिनि ७०ला हरेन सूरमांत । গোপা দানী ভ্রেনাসী আর পিদি মঞে। চলিল অনস भृष्ठ शृष्टियुन त्राम्य । स्थितिय कृतिय याज। सम्यव हरेदा। প্রথমে দেখিল বাঁঘে শব কুন্ত শিবে।। দক্ষিণে দেরিল शावीं मृश खात फिल। 'कानी कानी वटा" मूर्ए मरन मन र्णिनकः।। উত্তরে इंडेन रम्था सूत्रवनी ठीटतः। नकरण मिलिया পরে যায় ধিনে বিরে॥ পথে এক রাত্তি থাকে হয়ে পুল-কিত। প্রাত্তে উপনীত হৈল যথা মনোনীত জ্রীদেব সেখানে গিয়া ভিন্ন বাসা করে।। অনক পিসির সহ রহে স্থানাস্তরে। मानानि कतिल मदव जालनः वामान्। ज्वानी कहिएह পরে পূজাদিতে যায়।।

তারকেখবের পূজ্য। পরার। পুরেশিয়া পুরী সবে মিলিল, ছথার। পুরুমে

শৈবের স্তুতি।

পয়ার। অহে শাতু শুভদ কি কর এব জন। বেশবেক্তা বেদব্যান বলেনা সঞ্জন। অহে ঈশ ঐলান ঐশাত কর কলা। তর কটাক্ষেতে কত কিলি পতি নুলা। গশুনতি লাল লাম সম্প্রেছি অক্রান। কুলানার কলালার কর কালা কলা করে কালা চারে কলালা চারে কালা চারে শ্রেণালার। লাহে শির শিরদ আশির কর নাশা। কালা শুরু কালা চারে শ্রেণালা ভুলালা। শ্লি পূলা দিয়ে মম শ্রালের পুরা করে পুরা কিয়া শুলানা হইবে চুলা। মহেন্দ্র মহিলালি কালে তোলার। ভোলার প্রনাদে। দয়াম্য দয়াকর পড়েছি এলাদে। দ্রা শর্ম বেদে বলে সর্কাময় ভুলি। তেজ্য লাকাল নলীরন জব ভুনি। ঈশান ঈশান কোণে আছে ভ্নিটালা কলান বলি বলি সেই কোনে কর লান। শস্কর শস্কা লান কলান শূিরে ধরি শশধর। ভালে বসি ভাল শশী হলো শোভাকর॥ ৰ্ভুতেশ ভূতের সঙ্গে শুনি সহবাস। পঞ্চভূত হৈতে মোরে করত নিরাশ।। তে খন্ড পর ত খন্ড খন্ড পাপরাশি। পাপ সঙ্গে সঙ্গী হয়ে আছি গৃহবাসী। শিরিশ গিরীশ গিরি কন্যালয়ে দান। কামনা পুরালে হলো শিখরি প্রধান॥ মুত্যঞ্জ মুত্যুভয়ে ভাবিত অন্তর। অশান্ত কুতান্ত শুনি ঘোর জয়কর ।। কুতিবাস কুত কুতা করহে আমায়। বিষয় বাসনা ক্বত্তি বাসনা পুরায় ।। পিনাকি পিনাক ভব জামি ভিক্ষা চাই। পাপিও পাপের মাথা কাটিয়া কেলাই।। উত্র উত্র নৃত্তি শুান উত্র ভন্ন করি। দীননাথ দয়া কর উত্র সূর্ত্তি হরি॥ कश्किकिति करें। एके। खुरेश्वि। करें। करें। घरें। घरें। কথিতে না পারি।। একিও তে কও শোভা কি কহিব আর। कानकुछ भएन भिरत हटना भाजाकात ॥ निविक्श कर्शकान কুটেতে খ্যামল। খল কাল কুট ভাল হইল সরল।। ভুলাইল ৰূপান কৃপাল করে ধরি। কৃপালের কৃপাল কি আহা মরি মরি।। বাম দেব দেব বন্দ হইতে সুন্দ্র। রজত পঞ্চ জিনি শোভ। কমেবর । তিলোচন তিলোচন করেছ ধারণ। এক চল্কে চকিতেহে কর নিরীক্ষণ।। স্থার হর স্মরের শরীর कृति कृष्ठ । कृति व्यक्ति कृति । कृति कृति । कृति व ধরি শিরে মুর শৈবলিনী। ত্রিলোক জননী তিনি ত্রিলোক ভারিণী।। ভব তুমি ভোমা হৈতে ভবের একাশ। বিনাশ করহ ভব ভব অভিলাষ।। ভবের চরণ ভাবি ভবনীচরণ। আশুতোষ স্তব আশু করিল রচন।।

শ্রীদেবের যে'গী বেশ ধারণ পূর্বক নায়িকার নিকটে পমন। একার্বলি ছন্দ। পূজা পরে স্ততি করি অশেষ। মহান্ত দক্ষিণা দিলেক শেষ॥ পরে সে তাহাতে বাসায় চলে। জন-ক্ষের পিলি জীদেবে বলে।। কত মত বেশ ধরিলে কত। আজি হতে হবে যোগীর নত।। যাও চবে ভূমি বে থানে বাসা। ত্রেতে হাবে সেখা প্রিবে আশা।*মো*সে গিয়ে **তবে** व्यमाम थांग्र। दश्न कारण रमिश मित्रम गांग्र।। श्रीरम्ब স্ভিছে মহেশ বেশ। মহেশ গুণের সাহিক লেশ। বালা পেড়ে ধৃতি দুরে ফেলিল। ভেক্তরা বসন ভাল পরিল।। মুকুতার মালা রাখিল দরে। অক্ষালা আরু ফুটক পরে। চন্দন আত্তর গোলার নীরে। দেখিতে বিভৃতি নাথে শরী-রে।। শিরেতে পরিল কুলিম কর্টা। ভার, প্রের তার সরণ क है।। छे। श्रीय नाकिन स्मानित हाता। स्नादन स्थानस বামেও ছাল । প্ৰসিক্ত ফোটা করে কপালে। প্ৰতিকলা তায় হটল ভালে। তুন চুদ আছি আফাগোন্য । মুখে সদা **শिव गर्मारे** कत । सन्नेत्रीत दिन ४० है। यात्र । अनदा ८४ ही আছে মধ্যে। ছাত্রে ব্রজ্ব।দী ব্যাহা ভাতে। স্থাসি আইল ভাষ্য কাছে। কুছে বীহা কেইবস পেনে মাই। यांभीय तर महत्वा कार्यारहे आहे।। विवासीम अवि कत्व हिल। अनक व शारन कहिशा दिल ॥ अझादि चार्वित घरत प्रचितः भिनि गटक ननी विभिन्नः छित्।। (नशि धनी क्टर এনো গোদাঁই। পিদি তার করে কিলো দালাই।। আদি স্থাকারে দিবো গো বলে। অনক্ষের তরে সন্ধানি হলে।। গুণমণি কহে বুঝি ভালাম। আছে। বহুই অনজ দ্মা। হয়েছি গো আমি ভোনার দাসী। সন্তাবি ংইরু এথানে আসি।। যথন যেমন ভক্ম পাই। অমনি তগনি করি গো তাই।। দান দ'নী থাকে আজ্ঞার তাবে। তুমি কেন বাছা বুঝ না ভাবে।। শুনি ধনী মনে বাখানে তায়। কত গুণ তব

स्ति हितल ॥ थेठ ७१ ति छे लिहे लिहिल । त्यांत अनत्कतः यदैन हितल ॥ लिनि नत्यां वित्र कटर क्लिनी । त्यत्ठ किছू वन अथात् विन ॥ जनानी कहित्व त्यां भीत थाता । यांग व्यात्म करत त्यांभी याहाता ॥ ज्यांम त्यांभी यां करिव व्याता । यांग विनो किछू गत्न ना लाता ॥ जनक कहिन त्वमन यांग । यांग कन त्यांता त्यां के जांग ॥ जनक किल क्लिक त्यांग । यांग कन त्यांता त्यांग करत ॥ जनक किल क्लिक त्यांग स्ता । यांग कन त्यांन यांग करत ॥

ষ্ঠ নিবাদে ভারনেশ্বরে কাম যাগ।

প্রাপ্ত। ভোলল বিনল বেরী জঘন যুগল। ভার মধ্যে (ङ्किक् ६ तमाञ्च स्ट्राण गरीन मङ्गिती किंग रहती। কাৰতন্ত্ৰ মতে কাম যাগ লোগ করে।। ছীপান্ত মানৰ পুল; करन हराह कृति। गोरश निरंतिभव तुम्म कन वहस्र पति। मुधायन करेतिक आणि मित्र कामानल । वमश्च वाटाटम अधि করিল এবল।। বিভি ক্লভ শেকপ্রব এক বেলে ছিল। আন্ত ভিবাৰ লাগি বিভাগ হইল।। এই ক্ৰপে যাগ অঙ্ক হলো আয়েজন। দেখি হোতৃ কর্মে হোতা হয়ণিত মন॥ পরম জানদে কামযাগ আরমিল। সহত্র আহুতি দানে कररुण कतिल । बाइ ि अशानी (मधि नधी एक भान। মুখাদতে যোগী ববৈ করিল সন্মান।। সন্মানিত সন্মাসীর যোগ ভঙ্গ নাই। যোগ বলে কাম সিদ্ধ করিছেগোসাঞী। বিস্তারিত শ্রব মুখে সহস্র আন্তৃতি। পুরে শুক্র হবনেতে করে পুর্ণাভৃতি ।। হোমকুণ্ডে কোথ। হতে কি রূপেতে জল। श्वानि निटारेश पिल मरनानिकानत ॥ वस्रमञी देनव रयारण भीकता इहेत। शृथीयः भीकता छव मञ्ज शिक मिता। यांग-कुछ करन (यांगा अव जांगाहेल। त्रहे कत्ल युक्तमान भाषि

জল নিল। ভবানী কহিছে যোগীবর ভাল ছিল। অনকে অনক যাগ ফল শীঘ্র দিল।

> ভারকেশ্বরে এক রাত্তি বাস করিয়া স্ব স্ব গৃহে পুনরাগমন।

পরার। কামযক্ত সাঞ্চ করি উভয়ে উঠিল। তথন আহার যক্ত সকলি খাইল। এই ক্লপে তিন দিন করে কাম-যাগ। যাগ ভাগ করি পরে বাড়ে অনুরাগ । চতুর্থ দিবসে সবে ছাজি সেই স্থান। বাটী যাইবার জন্যে হৈল যত্নবান ॥ পুর্ব্ব মত তুইজনে ডুলিতে চড়িল। পিছে পিছে পাল্কিতে শ্রীদেব চলিল। এক রাত্রি পথে থাকে বন্থ যাত্রি সাতে। শ্রীদেবের বর্ষাত্রি বুঝায় ভাহাতে॥ রাত্রি এক ঘরে হৈল সভাকার বাস। এীদেব কৌশলে পুরে দোহাকার আশ। नवीना अवोगा পরে কহে গো अनक। कालि ঘরে যাবে সবে হবে সঙ্গ ভঙ্গ।। স্থামিরে কি কবে কিডা দেখিলে স্থপনে। কহে তুমি বলে ছিলে নাহি কিছু মনে॥ ভাল ভোলা মেরে বলে কহে পুনৰ্বার। সার উপদেশ শুন যাতে পাবে পার। এক্ষণে গোপনে থাকু সেই উপদেশ। দীনপাত কালে কব করিয়া বিশেষ। প্রভাতে সেখানে হতে চলিল স্বরিতে। দিবদের মধ্যে ধনী আইল বাটীতে ৷ কর্ত্তা আনন্দিত কর্ত্রী ঘরে এলো কিরে। ভবানী কহিছে কহ স্বপন স্বামিরে॥

অনক্ষের রাত্রে পতিসহ শয়নে তারকেশ্বরের স্বপ্প কথা এবং তাহার পতির উত্তর।

পরার। নিশিতে স্বামির সহ করিয়। সয়ন। কহিছে তাহারে ধনী স্থপন বচন। পুত্র মাের হবে বলে এই কামনার। তুইদিন হত্যাদিয়ে রহিত্ব তথায়। তৃতীয় নিশিতে এক সর্যাসী আইল। বিসরা আমার কাছে কহিতে লাগিস।।

अनक्रमक्षती अन जुमि त्यांत नागी। आयादत ना गटर जुमि আছ্ উপবাসী॥ তোমার কামনা এই পুত্রবতী হও। অবশ্ত সন্তান হবে তুমি বন্ধ্যা নও॥ তোর গর্ভে পুজ্র হবে বর দিন্তু বশে। কিন্তু না হইবে তোর স্বামির উরসে।। গুনি তাঁর পায়ে ধরে কহিলাম আমি। কহ প্রভু কোন দোবে দোবী মোর স্বামী। গোসাঁই কহেন কিছু দোব নাহি পাই। তাহার সন্তান ভাগ্যে বিধি লেখে নাই॥ তোর ভাগ্যে ছিল আমি তাতে দিল্ল বর ৷ তুই তার মত নিয়ে অন্য চেষ্টা কর ॥ শুনিয়া তাহার স্বামী হইল ভাবিত। কহে একি সর্ব্ধনাশ হিতে বিপরীত। কেমন বা মত করি না বুঝিয়া মর্ম্ম। কলঙ্ক হইবে কত আর যাবে ধর্ম। একে তুমি সভী তাতে আমি হয়ে পতি। বলিব কি লজ্জা থেয়ে কর উপপতি॥ নম্ট হবে ধর্ম যাবে পাবে পাব লাজ। কর্ম কাণ্ড আদ্ধ পণ্ড সে পুঁজে কিকায ॥ মত না হইল শুনি ভাবিতা যুবতী। বিধাদে হর্বিতা হলো স্বামী জানে সতী। কিন্তু মত না হওয়াতে ভাবিছে আকাশ। সে রাত্রি স্থামির সহ হৈল সহবাস। রতিরস রঙ্গ হৈল যেন শাস্ত্র পালা। উভয়ের মনে অন্য করে দায় টালা। তাদের বাসর হয় যেন কারাগার। তুজনে ছুঃখিত ্মনে ভাবে অনিবার ॥ সতী পতি কন্ট পার অধিক কামিনী। মন্দালাপে মনস্তাপে পোহায় যামিনী। প্রভাতে পিদিরে ধনী ডাকিয়া পাঠায়। ভবানী কহিছে এবে হইবে উপায়।।

অনঙ্গের পিসির বাক্যে উপপতি ক্রিতে তৎ পতির অনুমতি প্রদান।

পরার। অনঙ্গ প্রবীণা পিনি সাক্ষাতে কহিল। পতির সহিত যত কথা হয়ে ছিল। ভাবিতা হয়েছি পিনি করি কি উপায়। জামাই তোমার বলে ইথে ধর্ম যায়। প্রকাশ इहेरल लाक कलक इहेरत। अमक कुकर्मा मक रकमस्न क्रिंदि ॥ नवीरन अवीना करह वृ्किन्न गकन । व्यास क्रिब মত নাহও বিকল।। কহিব অখণ্ড কথা খণ্ডিতে কে পারে। কোথা সেই বোকা বেটা ডাক দেখি তারে। অনক শুনিয়া তারে ডেকে পাঠাইল। বাহিরে বসিয়া ছিল শুনিয়া আইল 🛚 পিসাস যথার্থ জানে জামাতারে কয়। অনঙ্গের স্বপ্ন কি তোমার মত নয়। শুনি গুণনিধি কন তুমি বুদ্ধি মতী। তোমার সমান আর নাহি গুণবর্তী।। বিধবা হইয়া তুমি স্বামীর দৌলাৎ। দেবরে হারায়ে কোর্টে সব করোহাত।। **অত**এব তোমার বুদ্ধির সীমা নাই। বিবেচনা করে বল করি আমি তাই। লোক লজ্জ। ধর্ম কর্ম যাতে সব রয়। হেন ক্থা কহ্ যদি তবে মত হয়। ব্যাপিকা নায়িকাকহে কিছুই कानना। विधवात्र टेन्ट्र यामि नवीना अवीना।। वृक्ति माधा মত বলি যাহা মোর ঘটে। এতে মত দিতে পার শাস্ত্র সিদ্ধ বটে।। পুরাণে শুনেছি আমি তাতে স্পষ্ট আছে। ধর্ম শাস্ত্র শুনিয়াছি পণ্ডিতের কাছে।। মোকদ্দমা করি যবে দেবর সহিত। ব্যবস্থার জন্যে আমি স্মৃতির পণ্ডিত।। ন্যাম্মরত্ন বিস্তারত্ব কত চূড়ামণি। ব্যবস্থা পারগ যে পণ্ডিত শিরো-মণি।। তাঁদের মুখেতে কত শুনেছি বিধান। সেই মত কব এই মতের প্রমান।। পুক্ত প্রয়োজন আছে অবশ্ব গৃহির। ব্যক্ত পুরাণেতে দেখ লেখন স্মৃতির॥ পণ্ডিতে আপন বংশ রাখিবার তরে। আত্ম হতে না ছইল অন্য মত করে।। পাণ্ডুরাজা হৈতে পুজ না হলো কুস্তির। উপপতি জনে: विधि मित्न सूरीत ॥ अञ्चमि পেরে কুন্তি তাহাই করিল ·পাঁচ জন হতে পাঁচ পুত্ৰ জন্মাইল।। পতি অনুমতি বিন তবু নারী পারে। অনুমতি চাহি লেখে দায়ভাগ কারে

স্বামী অনুমতি বিনা যে পুত্র জন্মায়।। শুনি সেই পুত্র পুণ্য অংশ নাহি পায়।। পুরাণ স্মৃতির কথা কেবা নাহি মানে। অরি শিব আজ্ঞা আছে বুঝ সাবধানে।। লোকলজ্জ। ভয় তুমি তাহারে পারিবে। গোপনে আসিবে কেহ কে ঢাক মারিবে।। যন্তপিও জানে লোক তাতে বা কি ভয়। বন্ধার এমন কর্ম্ম কোথায় না হয়॥ অন্য জাতি থারা আমি জানি কত মত। এজাতির এই মত দেখি শত শত।। সুজন বাবুর কথা শুনিয়াছ কাণে। উপপতি সঙ্গে মাগু পাঠায় বা-গানে।। তিন পুত্র হৈল তার জারেতে জন্মায়। অনুমতি ্করে ছিল বংশ রৈল তায়।। যথন এসব কথা হয় জানা--कानि। त्र मगत्र लांक®ना करत कांगाकांगि॥ किছू पिष ্থাকে তথা শেষ কিবা রয়। কলস্ক কি বশ সব কালে,লোপ -হয়।। অভএব শাস্ত্র সিদ্ধ লোক ব্যবহার।। ইথে পাঁপ লব্দা কেন হইৰে তোমার।। গুণনিধি কহে শুনি পড়ি বাক ব্যালে। শাস্ত্র এই বটে নাহি মানে কলিকালে।। অনুমতি কর তুমি শুন গুণনিধি। ধর্মাধর্ম হবে মোর জামি দিত্র বিধি।। চিন্তিত অনঙ্গ পতি করে অনুমান। সাপ হাঁড়ী त्वम शाँ ए इशा विधान।। भौँ ए यमि जान्त्र कत्व तमव । क्रफे হন। না ভাঙ্গিলে দর্প ভারে করিবে দংশন।। অতএব -মত মোরে করিতে হইল। হইল আমার মত **অনকে** কহিল।। ধনিগুণি সুপুরুষ দেখিয়া আনিবে। ভবানী व ৰুহিছে তাহা জানিতে পারিবে॥

পতির অনুমতি পাইয়া তৎক্ষণাৎ নাগর আনয়ন পূর্ব্ধক অনক্ষের সুখভোগ।

ত্রিপদার্যল ছন্দঃ। শুনি স্বামী বচন, হইল মগন, পিসিরে গোপীরে দোঁহে কছে। স্থানিতে নাগর, মোর

মনোহর, পাঠাইব ব্যাজ নাহি সহে। গোপী তার বাটীতে, यां अला जानिए, किह्वा अर्थनि व्य त्मथा। अहे नव वव्तन कामात्व सूक्रतन, अर्थान कानिवा ভाরে ছেখা। কবে এই চাতুরী, রবে বরাবরি, যথন তথন তুমি যাবে। গোপী তার কাছেতে, চলিল তুরিতে, সে কথায় কত সেঁথা পাবে॥ मात्री आति वित्रल, नागरत रमिथल, यूजन मिन मू le আছে। ধনী বাণী কহিল, যুবক চলিল, গদগদ ভাবে তার कारह । त्शां भी चारशं शाहेल, भीख जानाहेल, चार्ति चारत ছেড়েদিল তারে। সুনাগর আইল, সুন্দরী পাইল, আঁথি-শর হানে যত পারে॥ করে ধরি তুষিল, উভয়ে বদিল, চকাচকি মত ছুইজনে। নাগরে শুনাইল, স্বামী বুঝাইল, আর রাজী করিল যেমনে ॥ গুনিয়া সুবচন, ভাসিত্র ভাজন, শুন প্রাণ তুমি মোর তরে। কত ছুঃখ পাইলে, গ্রীতি বাড়া-ইলে, কোন ধ্বন হেন প্রেম করে॥ আগেতে মজাইলে, পরেতে বাঁচাইলে, বান্ধিয়ে রাখিলে প্রেমডোরে। সুখেতে ভাসাইলে, দাস বলাইলে, ভয় ভুলে গেল তব জোরে।। পরে কহে কামিনী, দিবা কি যামিনী, অধিনীরে যেন মনে থাকে। শুনি মুথ চুয়িল, কাম আরম্ভিল গুণমণি মুথ মধু চাকে । कुछ वनावनि, कृति भनाभनि, थिनिह वनिह কত সুখে। করিয়াকোলাকোলি, প্রেম ঢালাঢালি, করিছে র্থসিছে রসমুখে। অনঙ্গে মজাইল, রসে ভাসাইল, মনেং ছজনে হাসে। কবি করি রচন, ভবানীচরণ, কহে সুখ কর গৃহবাদে।

> খনকের নাগর প্রতি অভয় প্রদান ও নাগরের নির্ভয়ে গমনাগমন।

প্রার। এইৰপে রতিরদ করিয়া ছজনে। ছাজি দেই

শया रेवरम পृथक जामरन । ध्यम्मी मत्रम ভार्य श्वन প्रान ধন। এক্ষণে তোমার আর নাহিকো গমন। দিবা কি নিশিতে সদা বাসায় থাকিবে। যথন যাইবে গোপী তথনি অন্তরেতে করি এই ভয়। পুরুষ ভ্রমর জাতি ভ্রমে নানা ফুলে। কোন ফুলে মধু পেলে থাকে সেথা ভুলে। আর যেন প্রাণমধু মাক্ষকা যেমন। আয়াসের মধু রাখে করিয়া গোপন।। জনল জালিয়া কেহ মক্ষিকার মুখে। জনা-शांटम मधु मव कटतन श्र सूरथे।। एनटथा रयन रमांदत প्रांग ঘটেনা তেমতি। যতনে রাখিবে প্রেম করি হে মিনতি।। শুনিয়া কহিল শুন শুন প্রাণেশ্বরি। শপথ করিছে তব পদ-স্পর্শ করি। তোমা ছাড়া নারী নাহি হেরি অন্য পক্ষ। কথা তার সাতে কহি এতে যে স্বপক্ষ।। আমার প্রতিজ্ঞা এই শুন রসবতি। না ছাড়িব তব প্রেম থাকিতে শকতি। তুমি যদি ছাড় প্রাণ তবে কি করিব। তোমার বিরহে আমি তখনি মরিব।। শপথাদি স্তুতি করি অনঙ্গে তৃষিয়া। সে দিন বাসায় গেল বিদায় হইয়া। কথন রজনী যোগে কর্থন দিবসে। প্রত্যহ আইদে যায় অনক্ষের বদে ॥ যথন অনঙ্গ পতি থাকে নিজ ঘর। জ্রীদেব দৈখিয়া আর নাহি ভাবে পর । নিকিকার দেহ তার শরলের শেষ। সে শরীরে কিছু মাত্র নাহিরাগ দ্বেষ॥ এীদেবে ডাকিয়া কভু আদর করিয়া। তান থেলে জিতেলয় বোকা ভুলাইয়া। বাহিরে 🛍 দেব হারে তাহার খেলায়। ঘরে রসবতী নিতি জিতিয়া হারায়।। এক দিন দিবাভাগে অতি অসময়। অনসের মনে আসি অনক উদয়। তথনি পাঠায় লোক তাহার নিক্ট। লোক গিয়া দেখে ঘরে নাহি বৈ কপট। অনঙ্গে সম্বাদ দিল পারিল বুঝিতে। তবে তারে পাঠাইল পিসির বাটাতে । সেতা তার দেখা পেয়ে ডাকিয়া আনিল। দেখে যুবতীর মনে মান উপজিল । রাঙ্গা আঁথি রাঙ্গা দেখে করে তারে মান। ভবানী কহিছে মানে নাহি পরিত্রাণ।

শ্রীদেব নাগরের প্রতি অনক্ষের মার্ন।

जिभने। धनो किছू नाहि वत्न, खनिट्ट क्निध-নলে, কালকুট কটাক্ষ সমান। হানিছে নাগর প্রতি, অসহ সে হয় অতি, গুরুতর হইয়াছে মাস॥ নাগর বুঝিল মনে, মান হৈল যে কারণে, লোক গেল দেখা নাহি পায়। বাসায় না থাকি আমি, অনঙ্গ অন্তর যামি, ভাবিল পিসির घरत यात्र॥ त्मथा लाक भाष्ठीहेन, क्रिक याहा ভেবে ছिन, তথা দেখা পাইল আমার। জামি হরিয়াছি তারে, গুরু মান হতে পারে, গুরুতর সে হয় ইহার। মোরে মানা করে ছিল, ভূয়োথ করে দিল, দিব। নিশি থাকিবা বাসায়। তাহার কারণ যাহা, এক্ষণ বুঝিলু তাহা, আগে নাহি বুঝি ৈ অভিপ্রায়।। যদি কিছু ব্যক্ত করে, তবে মোর বাক্য সরে, নৈলে আমি কি কথা কহিব। করিত্ব যে অমুমান, তাহে যদি নহে মান, কথা চুকে পেঁচেকি পড়িব॥ ভাবিয়া অবাক্ হৈয়া, সন্মুথেতে দাঁড়াইয়া, করপুটে গরুড়ের প্রায়। অনস কিরিয়া রহে, গোপীকে ডাকিয়া কহে, যেতে বল পি সির সেথায়।। ক্রোধে নাহি বাক্যক্ষুরে, চক্রন্যায় চক্ষুযুরে, कौशानक विश्वन कृतिन। त्शाशीत कहिल धनी, वृक्तिन নাগর মণি, শুনে প্রাণ প্রিয়ারে কহিল।। তোমার পিসির বাটী, গিয়েছিলু বটে ঘাটি, কিন্তু শুন কহিতার হেতু। অপ-রাধ বুঝে কও, তুমি সুখ নিধি হও, তিনি সে সুখের হন राष्ट्र ।। देशहे वृक्षिया मतन, शियां हिन्नू मतनातन, शुत्नहिन्नू

उत्ति ति । यि ना पिथिए गाँरे, जाशिन विनिष्ठ जाँरे, जूमि विज ति । यात शिनि जात जात, किया ना करति छ जात, जूरे जाशा ना ताथिनि मन् । त्नरे जात शित शित करता । त्नरे जात शित मिन् , जाशिन मन् । त्नरे जात शित मिन् , जाशिन मिन् । विश्व कर्मा कर्मि । विश्व कर्म । जामिन कर्म । जामिन जाति । जिल्ला कर्म । जामिन जाति । जामिन । जामिन जाति । जामिन । जामिन जामिन । जामिन जामिन । जामिन जामिन जामिन । जामिन जामिन जामिन जामिन । जामिन जामिन जामिन जामिन जामिन जामिन । जामिन ज

এদৈব কর্ত্ত্ব অনঙ্গের মানভঙ্গ।

পয়ার। মানভাঙ্গিবার তরে জ্রীদেব নাগর। কাকুতি মিনতি করে হইয়া কাতর ॥ স্কুরনিকা তুমি আমি অরসিক মত। সরসে কুরস কর্মা করিয়াছি কত।। পুরুবের অপরাধ ঘটে পায় পায়। কানিনী কুপিতা কভু নাহি হয় তায়।। সহস্র দোষের দোষী পুরুষ নিশ্চয় ৷ কুলবতী পাতি প্রতি তথাচ সদয়।। রমণীর এই কর্মা জগতে বিদিত। ইথে বুঝি মান নহে মনের সহিত।। যদি কর্মা দোষে রীত হয় বিপ-রীভ।। তথাচ চিহ্নিত দাসে মান অনুচিত। বিমল বদন ভারি দেখে ভয়ে মরি। বিধুমুখে হাস্ত কর ক্রোধ পরি কামিনী বুৰিল মনে ঠেকিয়াছে দায়। পেয়েছি পতনে আজি আর কোথা যায়। নানা মতে নায়িকারে নায়ক বুঝায়। অর্থাশী সন্মাসী কডু প্রণাম না চায়॥ চতুর নাগর তার চাতুরী বুঝিল। গলে ছিল মুক্তামালা পাদপত্মে **मिल।। भाना मिरा छुटे शारा धतिया तिन। कामिनीत** রোষ গিয়ে রস উপজিল। নাগরে কহিল ধনী শুন প্রাণধন। অমন কুকর্ম পরে করে। না কখন।। শুরে করে গিয়েছিত্ব হইরা পাগল। আর কি তেমন করি গেলে এই ফল।। পার ধরে আছে তারে ছাড়েনা তথন। কামিনী কাতরা কামে

मिल खालिक्न। कामानल मानानल सूम्स मंतीत।
नाभवः निजात पिरत सूमीजन नीत।। धकरे मंतीत रसं नारि
मध्य वञ्च। लाकप्परत काम यात्र लात जान गान छिता।
विना पार काप्म कति पृत। श्रुद्ध कल्शान करत सूजन
छजूत॥ अधिक तकनी देश विषात्र लहेल। श्रुद्धीण श्रिमांम
काष्ट्र याश्या किश्ल ॥ नवीना श्रुद्धीण श्रुद्धा श्रुद्धा किश्ल ॥ नवीना श्रुद्धीण श्रुद्धा श्रुद्धा किश्ल ॥ नवीना श्रुद्धीण श्रुद्धा श्रुद्धा गिर्मांम मज्ञ
करत याजात्राज। छज्य द्धान्तर यात्र नाहिक छेरशाज।।
धक्त वमस्य अजू शालन रहेल। जात श्रुद्धा श्रीव्य खाति
प्रश्रीक्त ॥ च्यानीहत्र वर्ष्ण अनक्ष्य वर्षो। निष्णाप खाकूल
विज् देश्ल तमवर्षे॥।

কামে কাতর হইয়া নিজগৃহে গোপী দাসী সহ ঞ্জীদেবের রতি ক্রীড়া।।

বিপদী। বৈকালে বৈশাখ মাস, নিবারি নিদাঘ আশ, সুবাতাস চাহিয়া অনঙ্গ! বসিয়াছে নিজ ঘরে, সেই দিন শনৈশ্চরে, দৈব ভরে ছুর্যোগ প্রসঙ্গ।। দারুণ মেঘের ছটা, তাতে উঠে ঝড়ি ঝটা, ঘোরঘটা প্রলয় সমান। ধুলায় তিমির চয়, যুর্ণবায়ু অতিশয়, পায় ভয় ভাবিত পরাণ। গগণে সঘনে ঘন, করিতেছে সুগর্জ্জন, সন্সন্ ছুটিছে কাকর। চক্ষে পড়ে বছ ধুলি, ফুটে যেন ছিটাগুলি, পথ ভুলি পথিক কাতর।। মৃদ্ধ বিন্দুপাত, অবিশ্রাম্ভ বক্রাঘাত, শব্দে দাঁতে লাগয়ে কপাটি। হেনকালে গোপী ছিল, দিদি বলি সম্ভাবিল, আজ্ঞা দিল যাও তার বাটা।। গোপী কহে কত গুলা, ছাই কেল্তে ভাঙ্গাকুলা, আছি ভুলা ভলিতে কি হয়। নহে ছঃখি পর ছঃবে, সদা মন্ত নিজ সুখে, কোন মুখে

कृष्णामत्र। याहे आमि वाँ ि मित्र, अकत नाहिक किति, वित्रां किति नागत निक्छे। छेखितल निर्वितिल, त्म आमरत वमाहेल, स्थाहेल आमर्क मछि।। छेनि मिहित्रता यात्र, आभानात गा भाहात्र, गा भाहात्र ह्हां छ छाहात। अमिन कां जित्रा थान, कताहेल भित्रियान, करत मान गर्ला पिरा होता। तम्ब हिल छाव तिस्न, शांभान मिलिल मिलि, कित छिल खांदल कामानल। छास्रिल छेछत लक्का, लांदर करत कामामका, छेटल मक्का स्थितिल खिला।। अकर्ण पित्रम यात्र, हर्सांग हहेल नात्र, छावनात्र शांभी अन्यमन। करह हल युवतांक, कत आभानत मांक, आत वाक ना मरह धर्यन।। नागत कहिल कथा, मक्ता कित याव छथा, जूमि स्था कत्र म्यान छिला छोला। छवानो कहिरह पूठी, छेभनी भी भी सार्विण, रिल्म खांठ घिल स्थान।।

দাসীর শরীরে সম্ভোগ চিহ্ন দেখিয়া তার প্রতি অনঙ্গের ভৎ সনামস্তর দাসীর সহস্তর।

जिलमी। नागरतत मिलमाना, गरनर हिन छेजाना, धरनहिन विकृष्ठ इहेग्न। खिनिएय धनी धान्न, गमन श्रवन खान्न, रह्या मान्न स्लाहान्न रहेकिन्ना।। खनेक कहिरह हानि, नाहि हिनि खिनिथानि, धहे खानि वरन शिनि राहे। कि कान्नर मोर्चवानि, हहेन्न। वार्यत मानि, खानानान्नि रम्था मिनि धहे।। वामन हहेन्न। छारम, हाठ वाज़ाहेन्न। हारम, स्रित कार्मन छ हरकातिथी। यात्र थां अ यात्र शत, छाहारक मिन्नाम कन्न, मन्नमत कुलकलिक्षिथी।। थानारिठेंगे शताहेन, भरान कन्न, मन्नमत क्रिन, माथाहेन खान्नत हम्मन। धरना स्रिता क्रिनेवा, मुथ छह मन्धान, स्मान खान किर्मिन। छथन वृद्धिन खरत, हारत क्रिनंवा हरत, नाहि छरत

कहिट्ह बहन। होत यिन हूर्ति कदत, त्म धर्ने शांशदन मदत्, কোথা চোরে দেখার ভাবন।। তুমি যার সে তোমার, আনিয়াছি দ্রব্য তার, এই হার মোরে সম্ভাবিবে। থাকিলে তোমার কাছে, তার কি নিস্তার আছে, সম্ভ মাছে পোকা পাড়াইবে। ভিকেতিতে ভাড়াতাড়ি, গেলেম র্ভাহার বাড়ি, থান ফাভি বস্ত্র দিল আনি। সিন্দুকে সুগন্ধি মাধা, তা-হাতে কাপড় রাখা, আছে দেখা পুর্বে আমি জানি। গাব মেজে রাখে হার, তাহার সাক্ষাৎ কার, পরিহার পরিহাস कित्र। कहिट्ह अनद्भ मिन, त्म किह्म त्मथाईन, প্रशातिन নিজ দণ্ড ধরি।। বেগে যাই রড়ারড়ি, উছট খাইয়া পড়ি, ভাঙ্গাকজি গালে ফুটা লাভ।। কত রক্ত পজিয়াছে, এখন সে িহু আছে, দেখি পাছে ভাব ভিন্ন ভাব। যাতায়াত পরি-অন্মৈ, নিশ্বাস কি বাড়ে কমে, কোন ভ্রমে ভুলিলে রাগে-তে। জান বাতাদের মশ্ম, চুল খোলা কোন কর্ম্ম, সে ধর্মা না জানিয়া আগেতে। হার দিল হারাইল, নিজ হারি লুকাইল, शाताहेल कथाम्र। किरुटिंग्ड विविशिमा, त्रिक श्विनल গিয়া, দাণ্ডাইয়া সিঁজির মাথায়। দুতীকা নায়িকা দোঁহে, নাগর দেখিয়া কহে, কহে অহে কেন ক্ষুল্লনা। ভবানী এ স্থপালী, চতুরের চতুরালি, ভাবি কালী করিল রচনা।।

অনঙ্গের প্রতি জ্রীদেবের অভিমান।

পরার। জ্ঞীদেব বসিল সেথা বিরস বদনে। ক্ষুরতা কারণ ধনী ক্ষিজ্ঞাসে সঘনে।। ক্ষুরমনা কেন আমি শুন তবে বলি। দাসী অপবাদ দিয়ে কর তলাতলি।। সকল শুনেছি আমি সিড়িতে থাকিয়া। শরীরে দিয়েছ মূন কাটিয়া কাটিয়া।। তাহার আলাতে মোর অলিতেছে মন। ক্ষুরমনা হৈমু আমি এই সে কারণ।। ধিক্থাকু মোরে আমি বৃঞ্জি স্কল। মরণ তীচত মোর বাঁচিয়া কি কল। নীচগামি হই জামি কেমনে কহিলে। এই কটু বাক্যানলে শরীর দহিলে। হার বিধি কি কহিব একি কলিকাল। যার আজ্ঞাবহ হই সেই দের শাল।। দেখ দেখি আমি তব ৰূপ নির্ক্রা। মজিলাম প্রেমে কুলে জলাঞ্জলি দিয়া।। তব প্রেমেবদ্ধ হয়ে তোমার আজ্ঞার। দিবানিশি থাকি বিদি কেবল বাসায়।। ধর্ম কর্ম সব গেল লোক লৌকিকতা। সর্বদাই মনে করি তব রসিকতা।। আমার থাকিত যদি নীচে অভিলাস। তবে কেন হয়ের বব কেনা দাস।। শপথাদি করিয়াছি আর কত শ্রম। তথাচ তোমার নাহি ঘুটিল সে ভ্রম। বুঝিলাম তব মন পাওয়া বড় দার। স্বথে থাকো, মনে রেখো হইলু বিদায়।। করিয়া কপট ক্রোধ শ্রীদেব উটিল। মনে মান হইয়াছে অনক বুঝিল।। ভবানী কহিছে মান নহে অপমান। স্ততি রতি করি দান করহ সম্মান।।

অমঙ্গের বাক্য ও ব্যবহার দ্বারা নাগরের অভিমান পরিত্যার্গ।

ত্রিপদী। নাগরের করে ধরি, অনেক বিনয় করি, কহিছে অনুক্র প্রাণধন। যাহাতে হইল ক্ষোধ, তুমি তার দেহ শোধ, তবে ক্ষোধ হইবে মোচন ॥ দাসী অপবাদ দিল্ল, তাতে অপরাধি ছিল্ল, মোরে দিও দাস অপবাদ। তোমার চাকর আছে, পাঠাও আমার কাছে, দিয়ে তারে কোনহ সংবাদ।। সে হেতা আইলে পরে, আমি তারে নিয়ে ঘরে, করিব যা তুমি করেছিলে। ভাল ধুতি হার দিব, আতরাদি মাধাইব, প্রাহ্ম হবে বেশভূষা দিলে।। সে যথন যাবে ফিরে, তুমি তারে বলো কিরে, এ সক্ল কোথা তুই পোলি।। ইহা বলে ভাই বলো, কেন এত গৌন হলো, এখনি আসিব

বলে গেলি।। বুঝিয়াছি তার।সঙ্গে, ছিলি এতক্ষণ রঙ্গে, বুঝা ষাইতেছে তোর ভাবে। যাহা বলে দিমু তাই, কালি তুর্মি করো ভাই, ভবেই এ সব শোধ যাবে। স্থকৌশল বাক্যা-নলে, নাগর দ্বিগুণ ত্বলে, মনে মনে বাখানে রমণী। অনক দেখিল ভায়, তবু নাহি ক্রোধ খায়, পরে স্তুত্তি করিতেছে धनी।। शुनदर तिमक ताज, তোমারে না হয় লাজ, তোধ কর নারীর কথায়। অবলা অজ্ঞানা নারী, পুরুষের আজ্ঞা-কারী, অধীনতা হাহার উপায়।। নায়ক উপরে গোষা, মান যেন আছে পোষা, কথায় কথায় অভিমান। মনে২ মান হলে, প্রাণনাথে কটুবলে, আরো তারে করে অপমান॥ অত্এব বলি প্রাণ, মোর বাক্যে হেয় জ্ঞান, করি ওহে ক্লোধ কর দূর। রুথা যে যামিনী যায়, বাঁচাও অনঙ্গ দায়,কোপের করহ দর্প চূর।। শুনিয়া মধুর বোল, দূরে গেল গগুগোল, জীদেব ধরিল ধনী গলে। অনঙ্গ মদের প্রায়, পুরুষাধি লাগে তায়, নাগরের গায় পড়ে গলে॥ ভার পরে মাকা--মাকি, মুখামৃত ঢাকাঢাকি, ক্ষাক্ষি করি ধরে কামে! বন্ধন হইল দঢ়, ভাব ভরে জড়সড়, তিভিল দোঁহার বস্ত্র ঘামে।। তথাপি না ছাড়ে কেহ, কামের কমল দেহ, ধরা-পড়ে অনঙ্গ যুবভী। ধরিয়া যুবতী করে, কহিছে নাগর বরে, মৃত্রস্বরে করিয়া মিনতি।। দিয়েছিত্র দাসী দোষ, তাতে হয়ে ছিল রোষ, তুষ্ট হেতু করি রতি দান। নাগর পাইল দান, पूরে গেল অপমান, নারী দানে করিল সম্মান।। ভবানীচরণ মনে, করি কহে ছই জনে, উঠং কেন হেন সাজ। এীদেব উঠিয়া যায়, অনঙ্গ কহিল তায়, আর নাহি কর হেন কায ॥

্বন্ধ সুখভোগ পরে অনস্কের গর্ভ হয়। প্রার। প্রভাতে নাগর গেল আপুনার স্থানে। স্লানাদি করিয়া নিজা যায় দিনমানে।। সন্ধ্যার পরেতে যায় জনক ক্ষালয়। প্রভাত ইইলে আইসে আপন বাসায়।। এই রূপে গ্রীম্বঞ্জু হৈল সমাপন। আইল বরিষাঞ্চু ঘন বরিষণ।। বরিষণে কত সুখ নাহি নিরপণ। পরেতে শরদ ঋতু করে আগমন।। সুখেতে সভোগ করে শরদ সময়। অঘিকা অর্চনকালে করে বহু ব্যয়।। শিশির সময়ে ভাসে সুখের সাগরে। শরীর সুখায়ে দেয় হিম ৠতুবরে।। এই মত বহুকাল লইয়া যুবতী। মহাসুথে কাটে কাল সুখী হৈল অতি ॥ বহুদিন পরে তবে অনক যুবতী। জ্রীদেব প্রসাদে ধনী হৈল গর্ত বতী।। অনক্ষের গর্ত সবে করে অনুমান। বর্ণনে নাহিক কল সর্বতি সমান। ক্রেম চারি মাস গর্ত অনেকে জানিল। পঞ্চমে নিশ্রম হয় ভবানী রচিল।।

অনঙ্গমঞ্জরী পুত্রবতী হয় ঞ্জীদেবের ধনক্ষয়।

পয়ার। পাঁচ মাস গর্ভবতী অনক্ষমঞ্জরী। পরে পঞ্চামৃত দেয় বড় ঘটা করি।। নবম মাসেতে সাধে করে ততোধিক। পুল্র হৈল দশমে জ্রীদেব কপ ঠিক।। ধাত্র্যাদি নাপিত আর বাত্তকর যত। গোপনে নাগর সবে টাকা দিল কত॥ স্কৃতিকা ঘর্ষ্যাদি পুজা আছে যে নিয়ম। যাতে বয়য় হয় দেয় না ভাবে বিষম।। কর্ত্তাটি করেন সাধ নাচ করাইতে। তাহারো ধরচ হৈল জ্রীদেবেরে দিতে।। শুভাল্ল প্রাশনে বহু বয়য় করাইল। এই কপে বর্ষাবধি কতই করিল।। পুনরায় গর্ভবিতী হয় রসবতী। মোহানা খুলিলে রাথে কাহার শকতি।। জ্বানন্দ অপার।। নিজার্থ সামর্থ তার কিছু নাহি যায়। ভবানী কহিছে আরো পুল্ল কোলে পায়।।

· অনক্ষমঞ্জরী সহ ঞ্জীদেবের অতি সাধের ঐীতি একেকালে বিচ্ছেদ।

--

পরার। বালকের অলস্কার আর রসিকার। দিয়াছে **জ্রীদেব তবু নাহিক নিস্তার।। পুজার সময় এক গহনা নূতন।** মানে এক যোড়া সাভী ঢাকার বুনন । দ্বারী আর যত দাস দাসীর বেতন। অকাতরে এ সকল দিতেছে ভাঙ্কন।। সকল হইল ব্যয় সঞ্চয় যে ছিল। কাঙ্গান ভাবিবে ভয়ে তালুক বেচিল।। एक धन थांदक यांन आंग्र नाहि इस्र। निवस्तत वास হয়ে কত দিন রয়।। তাহার হইল শেষ নাহি কিছু আশ। ত্থাচু অনঙ্গ কাছে না করে প্রকাশ।। এক দিন অনঙ্গ সে বিরলে বসিয়া। এদেব কহিছে কিছু বিনয় করিয়া। জড়াও বাউটা আমি এক যোজা চাহি। নাগর শুনিয়া মনে করে ত্রাহিং।। শুনিয়া কহিল তার লক্ষ টাকা দর। ধনী বলে ইহা দিতে হলে কি কাতর।। यদি তুমি এই ক্ষুদ্র কথা না রাখিবা। তবে কি আমার পরকালে সাক্ষি দিবা॥ শুনেছিনু বড় লোক বড় জাকজোঁক। হইল বিস্তর লাভ পেন্নু রোক থোক । কুলবতী সাতে প্রেম করা বড় দার। তথনি তা দিতে হয় যথন যা চায়।। কেন বল দেখি থাকি তোমার স্হিত। নিজপতি আছে তারে করিয়া বঞ্চিত।। তুমি যদি অন্তাবধি আশা ছাড় মোর। তবে স্বামি কাছে বলি কভ করি জোর। অতএব স্পর্ফ কথা শুন বলি ভাই। তোমার আশায় হেথা লাভ কিছু নাই॥ এতদিনে বুঝিলাম ভুমি लाक मंज । छाका ठव इस्टेंग्स जूमि जात ज्ज ॥ अत्नक দিনের প্রীতি তোমার সহিতে। কি কব তোমারে আর পারি না রাখিতে।। তুমি অন্য চেষ্টা কর বুড়ি হৈম্ব আমি

সমনি ভোমার সহ থাকু রাম রামি॥ শ্রীদেব শুনিয়া ঘন ছার্ছেরে নিশ্বাস। ভবানী কহিছে প্রেমে একি সর্বনাশ।। প্রিভিরক্ষা হেতু অনঙ্গের প্রতি শ্রীদেবের কাতর উক্তি।

পয়ার। এমত নির্ছার বাক্য কেমনে কহিলে। প্রেম করে পরে সকলি ভুলিলে॥ কি হবে আমারে প্রাণ मित लाग यात्र। अर्था गठ रतना लाग निर्कृत कथात्र।। जूमि যদি ছাড় মোরে বল কি করিব। পরাণে মরিব কিয়া সন্ধ্যাসী হইব।। তোমার লাগিয়া আমি সংসার না করি। ধর্ম কর্ম জ্ঞান ধ্যান অনজ মঞ্জরী।। প্রেমের আধার জানি সঁপেছিত্ব প্রাণ। আধার নাধার হবে নাহি ছিল জ্ঞান।। আমারে কহিলে যেতে অন্য নারী কাছে। তোমা ছেড়ে কোথা যাব কে আমার আছে।। চাতক জলদ জল করে থাকে পাन। जना वाति नाहि थात्र यहि यात्र व्याव।। यावद व দেহে মোর প্রাণ করে বাস। হেরিব তোমার ৰূপ অন্য নাহি আশ। রোপিয়াছি প্রেম তরু পাব ফল ফুল। ভাগ্য হেতু হয় বুঝি সমূলে,নির্ম্মূল ।। যদি ত্যাগ কর তবে বিচ্ছেদ महन। आंगि भांत महित्वक गतीत **ख्वन।। गतीत ख्वन** মধ্যে তুমি আছ প্রাণ। ভোমারে লাগিবে তাপ করি হেন জ্ঞান ।। অতথৰ ভাবি আমি এই বড় খেদ। নতুবা নাহিক্ ভয় হইলে বিচ্ছেদ।। ভোমা ছাড়ি শরীরেতে কোন প্রয়ো-জন। তোমার বিচ্ছেদ হলে ত্যজিব জীবন।। যপ্তপি জীবন थाटक अभाभ मंत्रीदत । किछ किश हटत कव मतिदत मतिदत ॥ मात्र १इरेटव महा उव क्रश खन। तम मग्रस इटव खन काछे। घां यून।। তোমার বিচ্ছেদ হলে হইবে এমন। স্কুতরাং হবে মোর জীয়ন্তে মরণ।। এই রূপে বছ খেদ নাগর করিল। ভানক ভাবিরা পরে তাহারে কহিল। আজিতো বিদার হরে চেক্টা কর গিয়া। সমাদ লইব আমি দাসী পাঠাইরা।। জড়াও বাউটা মোর আবশুক আছে। সেই হেডু এত করে বলি তব কাছে।। ইহা দিতে যদি শক্তি না হয় তোমার। আমিও গাইব চেক্টা উপায় তাহার।। শুনে হাতে পারে ধরে বিশ্বর কান্দিয়া। নাগর বিদায় হয় মিনতি করিয়া।। শ্রীদেব র্যলিয়া গেল গোপীরে ডাকিল। দরয়ানে মানা কর তাহারে।লিল।। পরদিন নিকপিত সময়ে আইল। যেতে নাহি পরে ভারে জারিরা কহিল।। বাসায় আসিয়া পরে হরে বাংখেন। হায়থ একিদায় পিরীত বিচ্ছেদ।। বহু খেদ করে জুবে সকলি অসার। কেন মরি কার তরে হয় কেবা কার।।চন্দ্রিকা আকর ছিজ ভবানী চরণ। খেদে আরম্ভিল তার লিপি বর্ণন।।

অনঙ্গমঞ্জরীর বিচ্ছেদে শ্রীদেবের বিলাপ।

বার। জননী জঠরে জন্ম করিয়া গ্রহণ। করিলাম চির
কাজনিত্য সাধন ॥ গৃহী হয়ে গৃহে থাকি না করি বিবাহ।
গৃষ্টের মত কর্ম না হলো নির্দাহ।। উরদে জন্মিল পুজ
বা না রহিল। আপনার পিতৃ পিগু আশা না থাকিল।।
আর সমান আর নাহি বৃদ্ধি হীন। সংসারী নহিক আমি
ইউনাসীন।। নিত্য সেই নিত্যানন্দ তাঁরে না ভাবিয়া।
বিলাম কামিনীকে কামেতে মজিয়া॥ কর্ম কলে কপাগতে বিধির লিখন। এই ছিল করিব কি নীচের সেবন॥
দখিয়া সামান্যা এক জঘন্যা যুবতী। তখনি পাপিঠ মনে
হল ইচ্ছা রতি॥ প্রথমে মালিনী পরে মতি নাপিতিনী।
উড়েনী বৈক্ষবী আর দাসী সংগ্রিণী॥ এসব সামান্যা নারী

দরি ট্রপাসনা। পরে পূর্ণ হরে ছিল অধম বাসনা॥ সে बामा भूतन रुषु एक दिन धन। भाभीत्रनी मिटन ब्रूटन स्त्रिल रत्रा। अवरगरा कतिलाम छालुक विकन्न। उथानि **इ**तामा यटन निवर्ख ना इया। अथम नाविका काट्य इटय আজাকারী। নানা স্থানে হই আমি নানা বেশ ধারী॥ প্রথমেতে আথড়ায় বৈঞ্চের বেশে। পরে দাসী বেশ ধরি নারীর আদেশে।। ভূদেব ব্রাহ্মণ আর সন্মাসীর বেশ। ধরিলাম তাতে পাপ হইল অশেষ।। এই রূপে রঙ্গরুষ করে. নিশি দিন। পাতক করিয়া কায় করিলাম ক্ষীণ।। ব্রাহ্মণ বৈষ্ণব জাতি জ্ঞাতি বন্ধুগণ। সকলি অন্ত্রাথা হলো কামে মগ্র মন।। যখন তাবৎ ধন হৈল তার হাত। পরে গোড়েছ গাছে সেতা করি যাতায়াত।। শুনিল কি বুঝিল আমার কিছু নাই। তথন জড়াও বাউ কহে আমি চাই॥ লক টাঁকা মূল্য তার কোথায় পাইব। কোথা হতে আনি ধনদাহারে ভুবিব।। আমার সঙ্গতি নাই বিশেষ বুঝিল। পাঁদিন দ্বারীদ্বারে ছেড়ে নাহি দিল।। অত এব বলি মন তুরি ছুরা-চার। এমন কুকর্মে মতি করোনাক আর॥ এখনো বপথে চল ধর্মে কর আশ। ছাড়িয়া নগর ধর্ম পুরে কর বস।। সেত মহা সুধ ধাম অপুর্ব্ধ কানন। পরম সম্ভোষ হবে দ্বধে সেই বন।। ভবানীচরণ দ্বিজ বন্দ্যো উপাধ্যায়। রচিবন कारनामन भारत्यत ज्यान ।।

শেষ অধ্যায়ঃ!

श्रीदमत्वत्र क्वांत्नामदङ्ग वनवात्र ।

পরার। মনরে চাতক তুমি পিপাসিত হয়ে। নীচ জান গিয়ে গেলে একে কালে।বয়ে ॥ যুবতী যৌবন জলে পিপাশ। তাঙ্গিলে। নবজলধর তথে জ্ঞীনাথে তুলিলে।। তুই বয়ে

20

रेशनि छाट्स नाहि तक लाक । किस कुरन कुपन करिएक कर লোক।। তোর আর কুলে থাকা অতি অসুচিত। বাহির इहेब्रा वत्न याख्याहे विहिछ।। त्य दश्क् गर्वा सूर्य **रामा**क প্রয়াশ। বনেকত সুধ তাহা শুনহ নির্যাস। বনৈতে কামিনী क्रश काटल ना धतिरव ! विषय वामना कीटह रपटिं ना হইবে।। যদি কাম কোন মতে ভর দিতে যায়। উড়ে-ভিয়ের বৈদ ভূমি জীনাথের পার ।। দেই পদ কালাভক কালের বিপদ। লীন হীন ক্ষীণ কনবাসির সম্প্র । তাহাতে বিবিধ সূথ জনাতাদে পাবে। সার সূথ পাবে ছঃখ বব দ্যে যাবে। হাছা চাবে তাহা পাবে বিপিনে বসিয়া। ি গামণি চিন্তাকর দিবেন আনিরা। জগত নিবা<mark>দি বন</mark>- দর হরে। নান। দ্রবা বেথেছেন বনের ভিতরে !! প্রাসা বারণ হেতু আছে নদীজল কুবার নিমিত **আহে** ా विथ एम।। **दर्भ वागमा १८ल वाकल शतिरव। मिखा** ংলে ধরাতলে শরন করিবে ॥ পুত্র ভাবে মৃগগণে করিবে পালন। অনার্থে হবে আশা বায়ু নিবারণ।। বনে বছ ৈবিধ পক্ষী আছে বাণা করি। তাহারা হ**ইবে মিত্র তোমার** প্রদরী।। বিপিনে বিহাব করি কর সুখ ভোগ। গোক ভাপ দূরে যাবে দূরে যাবে রোগ।। এই **রূপে আপনা**র মনঃ প্রবেদ্ধবিরে। বিপিনে গমন করে নগর ছাজিংর।। ছাজিয়া 'ল'বার স্থা বর অভিলাম। ধর্মপুর নামে বনে করিল स्थित हो। ज्वानी तिष्ठ **अप्ट मकति युक्थ। दुक्टिल इहैरद उ**भरदर्भ इ सक्या